मांगलिक पत्रिका

सन् 2026-27 संवत् 2083

यतो धर्मः ततो जयः

धर्म रक्षा संघ

अखण्ड भारत हिन्दू राष्ट्र

संस्थापक : श्री सौरभ गौड़

श्रीधाम वृन्दावन

धर्म रक्षा ।। जय श्रीकृष्ण।। राष्ट्र रक्षा

धर्म रक्षा संघ

सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु संकल्पित संगठन

रजि. नं. 222/28.10.2016

संस्थापक अध्यक्ष : श्री सौरभ गौड़

प्रधान कार्यालय : 58, लक्ष्मी निकुंज, वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा मार्ग, रमणरेती, श्रीधाम वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ.प्र. मो. 9837164790

हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिंदुः पतितो भवेत्। मम दीक्षा धर्म रक्षा, मम मन्त्रः समानता॥

अर्थात् - सब हिन्दू भारत माँ की सन्तान होने से सहोदर हैं, भाई हैं। इसलिए कोई हिन्दू अछूत नहीं हो सकता। हमने 'समानता' का मन्त्र लेकर "धर्म-रक्षा" की दीक्षा ली है।

संघ के प्रकल्प

1. श्रीकृष्ण जन्म स्थान मुक्ति अभियान 2. अविरल यमुना निर्मल यमुना 3. परमार्थ-सेवा
4. गौ माता-सेवा 5. धर्म-शिक्षा अभियान 6. धर्म भूमि मुक्ति अभियान
7. अखण्ड भारत हिन्दू राष्ट्र 8. धर्म-युद्ध, धर्म-प्रसार, घर-वापसी

महंत श्रीनृत्य गोपाल दासजी महाराज 'प्रधान संरक्षक'

साध्वी श्रीऋतम्भरा जी दीदी माँ 'संरक्षक'

माननीय प्रधानमंत्री श्रीनरेन्द्र मोदी जी श्रीरामजन्मभूमि अयोध्या में शिलापूजन करते हुए

माननीय मुख्यमंत्री महंत श्रीआदित्यनाथ योगी जी महाराज ब्रजराज निर्मित 'रजत शिला' का पूजन करते हुए

धर्म रक्षा

Follow us on

Dharm Raksha Sangh

Mob. No. +91-9084624790

राष्ट्र रक्षा

Email : dharmrakshas@gmail.com

Website : dharmrakshasangh.com

आइये हम सब एकजुट होकर धर्म रक्षा संघ के इन पावन संकल्पों में तन-मन-धन से जुड़कर सनातन धर्म की सेवा करें।

धर्म रक्षा संघ के कल्याणकारी पावन प्रकल्पों हेतु अपनी सहयोग राशि सीधे बैंक खाते में प्रेषित कर पुण्य के भागी बन सकते हैं।

A/c Name : DHARM RAKSHA SANGH
Current A/c No. : 101705500235
Bank Name : ICICI BANK
IFS Code : ICIC0001017
Branch : Vrindavan

SCAN AND PAY

आयकर की धारा 80-G एवं 12-A के अन्तर्गत कर राशि में छूट

जय श्रीराधे

हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिंदुः पतितो भवेत्।
मम दीक्षा धर्म रक्षा, मम मन्त्रः समानता॥

धर्म रक्षा संघ

मंगल कामनायें

सौरभ गौड़

राष्ट्रीय अध्यक्ष

धर्म रक्षा संघ

सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु संकल्पित संगठन

मो. +91-9837164790
E-mail : saurabhgaur63@gmail.com
58, लक्ष्मी निकुंज, कानपुर कोठी, वैद्य लक्ष्मीनारायण शर्मा मार्ग
रमणरेती, वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ. प्र.

आचार्य श्री बद्रीश | श्री सौरभ गौड़ | म.म. स्वामी श्रीध्यानमूर्ति जी | महंत श्रीमोहिनीशरण | स्वामी श्रीदेवानन्द परमहंस | म.म. स्वामी श्रीकृष्णानन्द

स्वामी श्री अतुलकृष्णदास | श्री जगदीश शर्मा गुरुजी | म.म. स्वामी श्रीराम दास | स्वामी श्रीसत्यमित्रानन्द | महंत श्रीदेवानन्द महाराज | आचार्य श्रीराम गोपाल शुक्ल | आचार्य श्रीमदुलकान्त शास्त्री

श्री श्रीदास प्रजापति | श्री गोपेश गोस्वामी | श्री विष्णु पाठक | श्री ज्ञानेश महाराज | आचार्य श्री अरविन्द | ठा. श्री किरनपाल सिंह | श्रीमनोरंजन मिश्रा

॥ वन्दे ब्रज वसुन्धराम् ॥

श्रीमद्भागवत मन्दिरम्

(वैदिक शिक्षा का उत्तम स्थान)

अधिष्ठाता : विश्वविख्यात कथाव्यास महामहोपाध्याय -'भागवत-भ्रमर'

आचार्य श्रीबद्रीश जी महाराज

संस्कृत, व्याकरण, वेद, श्रीमद्भागवत, ज्योतिष एवं संगीत
की निःशुल्क शिक्षा के साथ निःशुल्क आवास
एवं भोजन की व्यवस्था

गोपाल खार, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन
मो. 9412280000, 6398559466
e-mail : acharyabadrish@gmail.com

acharya shri badrishji maharaj | badrishjimaharaj
@ acharya badrish | YouTube Acharya badrish ji maharaj
Dhruv Sharma (6398559466)

धर्म रक्षा संघ—परिचय एवं उद्देश्य

परम आराध्य भगवान् श्रीकृष्ण की लीला भूमि ब्रजमण्डल के श्रीधाम वृन्दावन में सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा और संवर्धन हेतु लोकहित का ध्यान रखते हुए श्रीराम नवमी संवत् 2060 तदनुसार दिनांक 11 अप्रैल 2003 शुक्रवार को परम पूज्य महन्त श्रीनृत्यगोपाल दास जी महाराज के संरक्षण में ब्रज के प्रमुख संत धर्माचार्य एवं धर्म सेवकों के सान्निध्य में **धर्म रक्षा संघ** की स्थापना की गयी। धर्म रक्षा संघ अखंड भारत हिन्दू राष्ट्र की भावना से ओतप्रोत एक गैर राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है। धर्म रक्षा संघ मठ, मन्दिर, आश्रम, धार्मिक स्थलों एवं वैदिक सनातन धर्म की रक्षा एवं संवर्धन करने के साथ सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु संकल्पित है। वर्तमान पीढ़ी के साथ आने वाली पीढ़ी को सनातन संस्कृति के अनुसार संस्कारित कर भारत को विश्व गुरु बनाना हमारे प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। अखंड भारत हिन्दू राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त कर भगवा ध्वज का सम्मान बढ़ाना हमारा प्रयास है। सनातन धर्म की रक्षा से ही राष्ट्र की रक्षा संभव है।

समाज को धर्म पूर्वक जोड़कर सनातन-संस्कारों का संरक्षण करना आज की महती आवश्यकता है। हमारा भारत वर्ष अखण्ड हिन्दू राष्ट्र बनकर पुनः विश्वगुरु के रूप में स्थापित हो, श्रीरामजन्म भूमि की भाँति श्रीकृष्णजन्मभूमि अपने गौरवशाली रूप में स्थापित हो। धर्म रक्षा संघ के इस संकल्प में आईये हम सब एक जुट होकर तन-मन-धन से इस प्रयास में संकल्प पूर्वक प्रस्तुत हों।

धर्म रक्षा संघ के कल्याणकारी पावन प्रकल्पों हेतु अपनी सहयोग राशि सीधे बैंक खाते में प्रेषित कर पुण्य के भागी बन सकते हैं।

A/c Name : DHARM RAKSHA SANGH
Current A/c No. : 101705500235
Bank Name : ICICI BANK
IFS Code : ICIC0001017
Branch : Vrindavan

SCAN AND PAY

Follow us on

Dharm Raksha Sangh

Mob. No. +91-9084624790

Email : dharmrakshas@gmail.com

Website : dharmrakshasangh.com

आयकर की धारा 80-G एवं 12-A के अन्तर्गत कर राशि में छूट प्राप्त करने हेतु मान्य
Vide URNo. AACTD6153HE20221 • Valid upto AY 2025-26

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

राजा गुरु

रौद्र नामक सम्वत्सर

विक्रम सम्वत् - २०८३ (2083)

मन्त्री मंगल

(तदनुसार 19 मार्च 2026 से 6 अप्रैल 2027 तक)

सृष्टि संवत्-1955885127, श्रीकृष्णावतार- 5252, युगाब्द(कल्कि संवत्)-5127
निम्बार्काब्द-5022-23, बौद्ध संवत्-2568, जैन संवत्-2552-53, शक संवत् (शाके)-1948
बंगला संवत्-1433-34, हिजरी-1447-48, रामानुजाब्द-1010, नानक शाही संवत्-568
बल्लभाब्द-548-49, हिताब्द-551, हरिदासाब्द-547-548

प्रधान सम्पादकः
श्रीमती ब्रजवाला गौड़
58, लक्ष्मी निकुंज, कानपुर कोठी
रमणरेती, वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ. प्र.
मो. 9837890790, 7017325990

सम्पादकः
श्री ब्रजेश पाठक
117-118, विश्व लक्ष्मी नगर
निकट गोवर्धन चौराह, मथुरा
मो. 9415084550

निःशुल्क

पत्रिका प्राप्ति स्थान

श्रीजगदीश शर्मा 'गुरुजी'
चित्रा स्टूडियो
बनखण्डी महादेव
वृन्दावन
मो. 9897595700

यतो धर्मः ततो जयः
धर्म रक्षा संघ

पी.के. एण्ड पी.के. ज्वैलर्स प्रा.लि.
जी.एम. सर्राफ काम्प्लैक्स
तिलक द्वार, मथुरा
मो.9412281238

प्रकाशक

धर्म रक्षा संघ
श्रीधाम वृन्दावन-281121 (उ. प्र.)

धर्म रक्षा राष्ट्र रक्षा

विषय	पृ. सं.
मांगलिक उद्‌गार	3
पर्व त्यौहार एवं अवकाश	4
प्रातः स्मरणीय श्लोक	5
राशियों का वार्षिक फल	8
सम्वत्सरफल	10
सनातन जीवन पद्धति	11
अष्टचिरंजीवी, 12 ज्योर्तिलिंग	12
वेद, पुराण, चमत्कारी मंगल आदि	13
51 शक्ति पीठों के नाम	14
वार्षिक पञ्चाङ्ग प्रारम्भ	15
एकादशी व्रत, प्रदोष व्रत	41
संक्रान्ति, चतुर्थी, पूर्णिमा, अमावस्या	42
दशावतार जयन्ती	42
श्रीगणेश-महालक्ष्मी पूजन	43
अंक ज्योतिष	44
रवि एवं गुरु-पुष्यामृत योग	45
ज्वालामुखी अशुभ योग	45
गुरु शुक्र तारा/गुरु-शुक्रास्त में वर्जित	46
गण्डमूल नक्षत्र फल विचार	46
गण्डमूल एवं पंचक प्रारंभ/समाप्ति काल	47
विविध मुहूर्त	48
दिन एवं रात्रि का चौघड़िया	50
वार्षिक चौघड़िया समय सारिणी	51
राहू काल	52
क्या है राहू काल ?	53
यात्रा प्रकरण दिशाशूल ज्ञानार्थ चक्रम्	53
क्षणवार जानने का चक्र 'होरा'	54
नवग्रहों के दान, मन्त्र एवं जाप आदि	56
नवग्रह साधना समाधान सूत्रावलि	57
शिववासज्ञान, सर्वांक सिद्धियोग	58
चन्द्रमा एवं नक्षत्र से पाया विचार	58
व्यवसाय में सफलता/परीक्षा में जाने के समय	58

विषय	पृ. सं.
रूद्राभिषेक एवं महामृत्युंजय जाप	59
अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) का माहात्म्य	61
पितृ दोष	62
पितृ दोष शान्ति हेतु उपाय	62
धार्मिक कार्यों में आसन पर बैठने का महात्म्य	63
ॐ की महिमा	64
पूजा-पाठ कैसे करें ?	65
वास्तु - एक दृष्टि में	66
अंग फड़कने के फल	67
अंग पर तिलों के फल	67
स्वप्न-शकुन का फल विचार	68
आरती	70
श्रीगणेशजी की आरती	70
श्रीजगदीश जी की आरती	71
श्रीलक्ष्मीजी की आरती	71
श्रीशंकर जी की आरती	71
श्रीअम्बा जी की आरती	72
श्रीजगदम्बे जी की आरती	72
श्रीराधारानीजी की आरती	72
श्रीहनुमानजी की आरती	73
श्रीखाटूश्यामजी की आरती	73
श्रीसत्यनारायण जी की आरती	73
श्रीगिरिधर की आरती	74
श्रीबालकृष्ण की आरती	74
श्रीभागवत भगवान की आरती	75
श्रीभागवतमहापुराण की आरती	75
श्रीश्यामाजी की आरती	76
श्रीरामजी की स्तुति	76
मन्त्र पुष्पाञ्जलि	77
धर्म रक्षा संघ : परिचय एवं उद्देश्य	78
प्रमुख मन्दिरों के दर्शन का समय	80

मांगलिक उद्गार

वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥

आप सभी के हृदय में स्थित नारायण को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए मांगलिक पत्रिका का **23**वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। **"धर्मो रक्षति रक्षतः"** में विश्वास करने वाली संस्कृति हमारी धार्मिक दृढ़ता को आस्था में परिवर्तित करती है। धर्म का सरल, सुगम बाह्य अंग है कर्मकाण्ड। हमारे जीवन के दैनिक कार्यों व विशेष कार्यों का सम्पादन- ग्रह-गोचर, मुहूर्त, पर्व-तिथि उत्सव के अनुरूप ही इसकी सहायता के लिए वर्षभर की कालगणना और उसकी स्थिति का लेखा-जोखा इस मांगलिक पत्रिका के रूप में आपके सम्मुख आता है। जिसमें ग्रह और उनकी स्थितियाँ, उनका हमारे जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव, विशेष घटनाओं के संकेत, सभी का ज्ञान और अनुपालन हमारे लिए आवश्यक है। साथ ही एकादशी, प्रदोष, उपयोगी मन्त्र, महत्वपूर्ण पूजा-विधान, विविध मुहूर्त, राहूकाल, भद्राकाल, राशिफल, दैनिक जीवनोपयोगी सरल सहज उपाय, विविध पूजा कर्म की सरल विधि साथ ही अन्य दैनिक उपयोगी, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक सामग्री व समस्याओं का सरलतम स्वरूप में समाधान भी पुस्तक में संगृहीत है, जिसे सामान्य पाठक भी समझने में पूर्ण सक्षम होगा।

इस संसार में प्राणियों के समस्त सुख-दुःख ग्रहों के आधीन हैं। कर्मफल देने वाले ग्रह रूप अवतार मुख्य हैं, इनमें सूर्य से राम, चन्द्रमा से कृष्ण, मंगल से नरसिंह, बुध से बुध, गुरु से वामन, शुक्र से परशुराम, शनि से कूर्म, राहू से वराह और केतू से मस्त्य अवतार हुए हैं। ग्रहों के अल्पांश से ही मनुष्यादि प्राणियों की उत्पत्ति हुई है। आकाश में जितने तारे दिखते हैं उनमें से कुछ को नक्षत्र और कुछ को ग्रह कहते हैं। 12 राशियाँ हैं। ग्रह जब नक्षत्रों में घूमते हुए 12 राशियों को पार करते हैं तो उनके गुणों का प्रभाव समस्त सृष्टि पर पड़ता है, जिससे मानव जीवन भी प्रभावित होता है। इन प्रभावों को ज्योतिष द्वारा ही स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। इसलिए ज्योतिष और कर्मकाण्ड का महत्व आज पूरे विश्व में बढ़ा है।

पत्रिका की इन्हीं उपादेयता के कारण पाठकों को वर्षभर व्यग्रता से इसकी प्रतीक्षा रहती है। इस पत्रिका की 10000 प्रतियाँ ब्रज मण्डल ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत एवं विश्व के अनेक देशों में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करती हैं। पत्रिका की वार्षिक तत्थात्मक पञ्चाङ्ग सामग्री सुप्रसिद्ध विद्वान् याज्ञिकरत्न **मंगलमूर्ति आचार्य पं. श्रीराजेश पाण्डेय जी** की देन है। उनकी सहज उदारता ने हमें विशेष उपकृत किया है, एतदर्थ उन्हें हृदय से साधुवाद। **धर्म रक्षा संघ** के उन सभी पदाधिकारियों, कार्यकत्ताओं एवं विज्ञापनदाताओं के भी हम विशेष आभारी हैं जिनके सहयोग और प्रयास से यह मांगलिक पत्रिका जनसामान्य तक सुगमता से **निःशुल्क** पहुँच रही है। विशेष रूप से पूज्य वीतराग संत स्वामी श्री गोविन्दानन्द तीर्थ जी महाराज से प्राप्त प्रेरणा और ऊर्जा से इस मांगलिक पत्रिका का वर्तमान स्वरूप संभव हो पाया है।

अन्त में 'सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय' वाली संस्कृति के अनुगामी होने के कारण मेरी यही अभिलाषा है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥

मैं उन सभी शुभचिन्तकों को भी नमन करती हूँ, जिनकी मंगलकामनाओं ने हमारे विश्वास को दृढ़ किया। आपकी उपयोगी सलाह एवं सुझाव का सदैव स्वागत है।

जय श्रीराधे!

(श्रीमती) ब्रजवाला गौड़
सम्पादक
मो. 9837890790

पर्व, त्यौहार एवं अवकाश

सरकारी छुट्टियाँ एवं प्रमुख पर्व दिन सं. 2083

(19 मार्च 2026 से 6 अप्रैल 2027 तक)

★ नवरात्र प्रारम्भ, श्रीगौतम जयंती	19 मार्च गुरु	★ विजयादशमी दशहरा	20 अक्टू. मंगल
★ गणगौरपूजन	21 मार्च शनि	★ शरद्पूर्णिमा	25 अक्टू. रवि
★ रामनवमी व्रतोत्सव	26 मार्च गुरु	★ बाल्मीकि जयंती	26 अक्टू. सोम
★ श्रीमहावीर जयंती जैन वैशाखी	31 मार्च मंगल	★ करवाचौथ व्रत	29 अक्टू. गुरु
★ हनुमज्जयंती, चैत्रीपूर्णिमा	2 अप्रैल गुरु	★ अहोई अष्टमी व्रत	01 नव. रवि
★ डा. अम्बेडकर जंयती	14 अप्रैल मंगल	★ धनतेरस	06 नव. शुक्र
★ अक्षय तृतीया/परशुराम ज0	19 अप्रैल रवि	★ दीपावली	08 नव. रवि
★ मईडे, श्रमिकदिवस	01 मई शुक्र	★ अन्नकूट गोवर्धन पूजा	10 नव. मंगल
★ श्री बुद्धपूर्णिमा	01 मई शुक्र	★ भईयादूज (टीका)	11 नव. बुध
★ बटसावित्री व्रत शनि जयन्ती	16 मई शनि	★ छठपूजा (बिहार)	15 नव. रवि
★ श्रीगंगादशहरा	25 मई सोम	★ प्रबोधिनीएकादशी (देवउठान)	20 नव. शुक्र
★ ईदुल जुहा (बकरीद)	28 मई गुरु	★ गुरूनानक ज. कार्तिकीपूर्णिमा	24 नव. मंगल
★ मोहर्रम (ताजिया)	26 जून शुक्र	★ क्रिसमडे (बड़ादिन)	25 दिस. शुक्र
★ रथयात्रा जगन्नाथपुरी	16 जुलाई गुरु	★ अंग्रेजी नववर्षारम्भ 2027	01 जन. शुक्र
★ गुरु पूर्णिमा	29 जुलाई बुध	★ लोहड़ी (पं)	13 जन. बुध
★ नागपंचमी (राज बंगाल)	3 अगस्त सोम	★ मकर संक्रान्ति	14 जन. गुरु
★ हरियाली अमावस्या	12 अगस्त बुध	★ सकट चौथ व्रत	25 जन. सोम
★ हरियालीतीज/80वाँस्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त शनि	★ 78 वाँ गणतंत्र दिवस	26 जन. मंगल
★ रक्षा-बन्धन (राखी)	28 अगस्त शुक्र	★ वंसतपंचमी, श्रीसरस्वती पूजन	11 फर. गुरु
★ श्रीकृष्णजन्माष्टमी	4 सित. शुक्र	★ माघी पूर्णिमा	20 फर. शनि
★ श्रीगणेश जन्मोत्सव	14 सित. सोम	★ महा शिवरात्रिव्रत	06 मार्च शनि
★ श्रीराधाष्टमी, श्रीहरिदास जयंती	19 सित. शनि	★ बरसाना होली	16 मार्च मंगल
★ श्रीविश्वकर्मा पूजा	25 सित. शुक्र	★ नन्दगाँव होली	17 मार्च बुध
★ गाँधी जयन्ती	02 अक्टू. शुक्र	★ वृन्दावन होली प्रारंभ	18 मार्च गुरु
★ पितृ अमावस्या	10 अक्टू. शनि	★ होलिकादहन	21 मार्च रवि
★ शारदीय नवरात्र प्रारम्भ	11 अक्टू. रवि	★ धुलैण्डी	22 मार्च सोम
★ श्री दुर्गाष्टमी महाष्टमी	19 अक्टू. सोम	★ संवत् समाप्त श्रीरस्तुः	06 अप्रैल मंगल

प्रातः स्मरणीय

!! हरिः ॐ तत्सत्परमात्मने नमः!!

। देवं नन्दनन्दनं वंदे ।

बोधवचनानि	बोधदायक वचन	बोधवचनानि	बोधदायक वचन
1. सत्यं वद।	सत्य बोलो।	5. आचार्यदेवो भव।	आचार्य को देव मानो।
2. धर्म चर।	धर्म का आचरण करो।	6. अतिथिदेवो भव।	अतिथि को देव मानो।
3. मातृदेवो भव।	माता को देव मानो।	7. स्वाध्यायान्मा प्रमदः।	स्वाध्याय में प्रमाद मत करो।
4. पितृदेवो भव।	पिता को देव मानो।	8. श्रद्धया देयम्।	श्रद्धा से दो।

करदर्शनम्

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये च सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्द, प्रभाते करदर्शनम् ॥1॥

पृथ्वी का वंदन

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥2॥

जगद्गुरु श्रीकृष्ण की वन्दना

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेश नाशाय गोविंदाय नमो नमः॥3॥

माधव का वन्दन

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वंदे, परमानन्दमाधवम्॥4॥

देवियों को प्रणाम

नमो देव्यै महादेव्यै, शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥5॥

पुण्यश्लोक

पुण्यश्लोको नलो राजा, पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोको च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥6॥

सात चिरंजीवी

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो, हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च, सप्तै ते चिरजीविनः॥7॥

पाँच सतियाँ

अहल्या द्रौपदी कुन्ती, तारा मंदोदरी तथा।
पंच नामस्मरेन्नित्यं, महापातकनाशनम्॥8॥

सात मोक्षपुरियाँ

अयोध्या मथुरा माया, काशी काँची अवंतिका।
पुरी द्वारावती चैव, सप्तैता मोक्षदायिकाः॥9॥

नारायण का वन्दन

नारायणं निराकारं नरवीरं नरोत्तमम् ।
नृसिंह नागनाथं च तं वन्दे नरकान्तकम्॥10॥

रघुनंदन राम का वंदन

राघवं रामचन्द्रं च रावणारिं रमापतिम्।
राजीवलोचनं रामं तं वन्दे रघुनन्दनम्॥11॥

सुप्रभात में शुभ अर्चना

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥12॥

गुरू को नमस्कार

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥13॥

तुलसी माता को नमस्कार

तुलसी, श्रीसखि शिवे पापहारिणि पुण्यदे।
नमस्ते नारदनुते नमो नारायणप्रिये॥14॥

गायों में वास की कामना

गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥15॥

नंदी गाय को नमस्कार

पंच गाव: समुत्पन्न: मध्यमाने महार्णवे।
तासां मध्ये तुयानंदा तस्यै देव्यै नमो नम: ॥16॥

पीपल को नमस्कार

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ।
अग्रत: शिवरूपाय अश्वत्थाय नमो नम: ॥17॥

मंगल करने वाले हरि

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरि: ॥18॥

लक्ष्मीपति का नित्य स्मरण

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव।
विद्याबलंदैवबलंतदेव लक्ष्मीपतेतेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि ॥19॥

जय प्राप्ति

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय:।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दन: ॥20॥

सात देवता-देवियों को प्रणाम

विनायकं गुरूं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ॥21॥

गणपति को नमस्कार

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो य: सुरासुरै:।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नम: ॥22॥

त्रिमूर्ति की प्रार्थना

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वर:।
देवा दिशन्तु न: सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दना: ॥23॥

सात नदियों आवाहन

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥24॥

गंगाजी को नमस्कार

नमामि गंगे ! तव पादपंकजम्,
सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं
भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥25॥

सूर्य नमस्कार

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते ॥26॥

भोजन-मन्त्र

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हवि: ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्म कर्म समाधिना ॥27॥

दीप दानमन्त्र

दीप ज्योति: परब्रह्म, दीप ज्योति जनार्दन:।
दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योति नमोऽस्तुते ॥28॥

क्लेश-नाशकमंत्र

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नम: ॥29॥

बाधानाशक मन्त्र

सर्वाबाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरी।
एवमेव त्वया कार्य, मस्मद्वैरिविनाशनम् ॥30॥

सन्तान प्राप्ति मन्त्र

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत: ॥31॥

विद्या-मन्त्र

सरस्वति महाभागे, वरदे कामरूपिणी।
विश्वरूपि विशालाक्षी, हे विद्या परमेश्वरी ॥32॥

रोग-नाशक मन्त्र

अच्युत अनंत गोविन्द नाम उच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगा: सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥33॥

16 विशिष्ट मंत्र जो हर हिन्दू को सीखना चाहिए

1. गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

2.महादेव मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

3.श्री गणेश मंत्र

वक्रतुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।।

4. श्री हरि विष्णु मंत्र

मङ्गलम् भगवान विष्णुः मङ्गलम् गरुणध्वजः।
मङ्गलम् पुण्डरी काक्षः, मङ्गलाय तनो हरिः।।म

5. श्री ब्रम्हा जी मंत्र

ॐ नमस्ते परमं ब्रह्मा नमस्ते परमात्ने।
निर्गुणाय नमस्तुभ्यं सदुयाय नमो नमः।।

6. श्रीकृष्ण मंत्र

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

7. श्री राम मंत्र

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

8. माता दुर्गा मंत्र

ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

9. श्री महालक्ष्मी मंत्र

सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो, धन धान्यः सुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।।

10. माँ सरस्वती मंत्र

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

11. माँ महाकाली मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे।
कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।

12. हनुमान जी मंत्र

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।

13. श्री शनिदेव मंत्र

नीलांजनसमाभासं, रविपुत्रं यमाग्रजम ।
छायामार्तण्ड सम्भूतं, तं नमामि शनैश्चरम्।।

14. श्री कार्तिकेय मंत्र

ॐ शारवाना-भावाया नमः,
ज्ञानशक्तिधरा स्कंदा, वल्लीईकल्याणा सुंदरा।
देवसेना मनः कांता, कार्तिकेया नामोस्तुते।

15. श्री कालभैरव मंत्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धाराणाय,
कुरु कुरु बटुकाय, ह्रीं बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा।

16. भारत माता मंत्र

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे
त्वया हिन्दुभूमे सुखं वर्धितोऽहम्।
महाङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे
पतत्वेष कायो नमस्ते-नमस्ते।।

॥ सं. 2083 में राशियों का वार्षिक फल ॥

मेष— चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

मेषराशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव वाला रहेगा। आकस्मिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। वाहन मकान का योग बनेगा। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। शनि के कारण मानसिक उतार-चढ़ाव से मन व्यथित रहेगा। व्यापार में सामान्य लाभ होगा। सरकारी कर्मचारियों को व्यस्तता रहेगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। सन्तान पक्ष से अच्छा समाचार प्राप्त होगा। दाम्पत्य जीवन में कटुता आयेगी। प्रेम सम्बन्धों में अनुकूल परिस्थितियाँ बनेंगी। किसी यात्रा का अवसर प्राप्त होगा। कठिन संघर्ष के बाद उन्नत्ति प्राप्त होगी। स्थान परिवर्तन का योग बनेगा। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। 1, 5, 9 मास कष्टदायक रहेंगे।

वृष— इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

वृषराशि वालों के लिए यह यह वर्ष मध्यम फल देने वाला रहेगा। नौकरी वालों को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार में कर्ज की आवश्यकता पड़ सकती है, परन्तु सोच-समझ कर निर्णय लेना उचित होगा। आकस्मिक रूप से समस्या का सामना करना पड़ सकता है। दैनिक जीवन व्यस्तापूर्ण रहेगा। स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। मानसिक तनाव से मन खिन्न रहेगा। दाम्पत्य जीवन में घरेलू मसलों से वाद-विवाद बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति होगी। बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। किसी नये कार्य का श्रीगणेश होगा। आकस्मिक खर्चे से व्यय भार बढ़ेगा। 3, 4, 8 मास कष्टदायक रहेंगे।

मिथुन— का, की, कू, घ, ड़, छ, के, को, ह(क्ष)

मिथुनराशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नति कारक रहेगा। विरोधियों पर विजय प्राप्त होगी। समाज में प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। अस्थि तथा उदर रोगों से परेशानियाँ बढ़ सकती हैं। आर्थिक क्षेत्र में कार्य से सफलता प्राप्त होगी। नवीन सम्पत्ति का क्रय होगा। परिवार से सहयोग प्राप्त होगा। स्वजनों से वाद-विवाद हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्ध में मानसिक एवं शारीरिक रुप से काफी व्यस्तता रहेगी। कार्यक्षेत्र में परिश्रम से सफलता प्राप्त होगी। सन्तान के प्रति चिन्तायें बढ़ेंगी। किसी आकस्मिक यात्रा का अवसर प्राप्त होगा। 2, 4, 11 मास कष्टदायक रहेंगे।

कर्क— ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्कराशि वालों के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। एक नवीन उर्जा एवं क्षमता का अनुभव करेंगे। वाणिज्य एवं शेयर से लोगों को मंदी का सामना ना पड़ेगा। व्यापारिक लेन-देन में सावधानी बरतनी चाहिए, जल्दबाजी में कोई निर्णय लेना अच्छा नहीं रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। माता-पिता को तीर्थ यात्रा का अवसर मिलेगा। नेत्र विकार की सम्भावना रहेगी। कृषि क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को लाभकारी सम्भावना दिखाई देगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। गृह क्लेश से मन खिन्न रहेगा। किसी नये व्यापार का श्रीगणेश होगा। 3,7,12 मास कष्टदायक रहेंगे।

सिंह— मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

सिंहराशि वालों के लिए यह वर्ष **शनि की ढैय्या** का रहेगा। यह वर्ष गोचर के अनुसार संघर्षयुक्त व कठिनाइयों वाला रहेगा। कार्य बनने से पूर्व ही बिगड़ जायेगा। सामाजिक कार्यों के प्रति अभिरुचि कम रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। अस्थि रोगों के प्रति विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। अनावश्यक धन व्यय होगा। व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। व्यापारियों को नये निवेश में जोखिम नहीं उठाना चाहिए। शेयर बाजार के लिए यह वर्ष उचित नहीं है। नौकरी पेशा वालों को स्थानान्तरण का सामना करना पड़ सकता है। विरोधियों से त्रस्त रहेंगे। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। 1,9,11 मास कष्टदायक रहेंगे।

कन्या— टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो, (प्र)

कन्याराशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य शुभदायक रहेगा। नये कार्य करने का अवसर मिलेगा। कठिन परिश्रम से आश्चर्यजनक परिणाम सामने आयेंगे। कोर्ट-कचहरी के मामलों में सफलता मिलेगी। मित्रों एवं स्वजनों से सहयोग प्राप्त होगा। यात्रा का योग बनेगा। स्वास्थ्य की ष्टि से यह वर्ष कष्टकारक हो सकता है। उच्चरक्त चाप के प्रति सावधानी रखनी चाहिए। आर्थिक लेन-देन में थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। व्यवसाय में चली आ रही विघ्न बाधायें कम होंगी। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। घर में माँगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। सन्तान सुख की प्राप्ति होगी। मकान-वाहन के क्रय-विक्रय का योग बनेगा। 2,6,11 मास कष्टदायक रहेंगे।

तुला— रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते (त्र)

तुलाराशि वालों के लिए यह वर्ष पष्ठशनि होने से स्वास्थ्य बाधायुक्त रह सकता है। अध्ययन-अध्यापन से जुड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम से सफलता प्राप्त होगी। उदर एवं रक्त सम्बन्धित रोगों से सावधान रहना चाहिए। मानसिक तनाव रहेगा। रक्त शर्करा सम्बधित रोगों का उदय हो सकता है। कार्य क्षेत्र में उतार-चढ़ाव के बाद स्थिति में सुधार होगा। प्रेम संबन्धों में संदेहास्पद स्थिति से बचना चाहिए। शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए। सन्तान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। किसी नये कार्य का श्रीगणेश होगा। पुराने रकम की प्राप्ति होगी। 3,9,10 मास कष्टदायक रहेंगे।

वृश्चिक— तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वृश्चिकराशि वालों के लिए यह वर्ष मिश्रित फल देने वाला नी होगा। कठिन परिश्रम से व्यापार में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धित परेशानियाँ बढ़ेंगी। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। जमा पूँजी घन का विस्तार होगा। घन के लेन-देन में सावधान रहना चाहिए। वाहन खरीदने की योजना बनेगी। पैतृक सम्पत्ति के मामलों में में वाद-विवाद व हो सकता है। व्यापारिक लोगों में व्यवसाय की स्थिति सामान्य होगी। सफल के नये आयाम स्थापित होंगे। प्रेम विवाह में सफलता मिलेगी। कोर्ट-कचहरी के कार्यों में सफलता मिलेगी। 4,6,9 मास कष्टदायक रहेंगे।

धनु— ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे (धी, फू)

धनुराशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की ढैय्या वाला रहेगा। कठिन परिश्रम से भी सफलता प्राप्त नहीं होगी। बाजार की नई नीति से लाभ होगा। पारिवारिक सम्बन्धों में कटुता आयेगी। माता-पिता को कष्ट होगा। नौकरी पेशा से युक्त लोगों को सफलता मिलेगी। जमीन-जायदाद का कार्य करने वालों को कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। आभूषण एवं रेशमी वस्त्र के कारोबार में सुधार होगा। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता बढ़ सकती है। धनागमन के स्त्रोत बने रहेंगे, परन्तु व्यय भी उसी प्रकार से होता रहेगा। व्यर्थ की चिन्ता बनी रहेगी । भूमि-मकान-वाहन के क्रय-विक्रय का योग बनेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। किसी नये कार्य का श्रीगणेश होगा। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। 2,4,12 मास कष्टदायक रहेंगे।

मकर— भो, ज, जी, जू, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी (ज्ञ)

मकरराशि वालों के लिए यह वर्ष उन्नतिदायक रहेगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष कुछ कष्टदायक हो सकता है। कफ-वात-पित्त सम्बन्धित समस्या आ सकती है। आर्थिक क्षेत्र में किये हुए प्रयासों से सफलता प्राप्त होगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। नये सम्पत्ति-वाहन इत्यादि के क्रय का अवसर प्राप्त होगा। व्यवसाय क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य लाभ प्रद रहेगा। नौकरी में पदोन्नति होगी। किसी निकट सम्बन्धी का निधन सम्भव है। जल्दबाजी में निर्णय लेना हानिकारक हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में कटुता आयेगी। सन्तान की उन्नति होगी। परिवार में माँगलिक कृत्य होंगे। 1,3,6 मास कष्टदायक रहेंगे।

कुम्भ— गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

कुम्भराशि वालों के लिए इस वर्ष **शनि की साढ़ेसाती** का नभाव रहेगा। फलस्वरुप बनते हुए कार्य रुक जायेंगे। मानसिक कष्ट, निरर्थक भागदौड़ से जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्यायें आयेंगी। अस्थि रोगों की समस्यायें आयेंगी। धन-सम्पत्ति का वाद-विवाद हो सकता है। क्रय-विक्रय सावधानी से करना चाहिए अन्यथा हानि हो सकती है। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। दाम्पत्य जीवन में परेशानियाँ आयेंगी। प्रेम सम्बन्धों में मतभेद हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्ध में कुछ अच्छी सूचना प्राप्त होगी। माता-पिता को किसी - तीर्थ यात्रा का अवसर मिलेगा। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड पाठ करना चाहिए। 2,9,12 मास कष्टदायक रहेंगे।

मीन— दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन राशि वालों के लिए इस वर्ष **शनि की साढ़ेसाती** का प्रभाव रहेगा। आकस्मिक रुप से परिवार की कुछ समस्यायें बढ़ेंगी। व्यापारियों को व्यापार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। नौकरी पेशा वालों को दबाव का सामना करना पड़ेगा। आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टि से यह वर्ष महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विद्यार्थीवर्ग को सफलता प्राप्त होगी। पति-पत्नी के मध्य असमानता रहेगी। सन्तानसुख की प्राप्ति होगी। सन्तान की उन्नति के योग हैं। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। अनावश्यक खर्च से जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। आर्थिक हानि हो सकती है। भू-सम्पत्ति के मामलों में सावधान रहना चाहिए। विदेश यात्रा का योग है। हनुमान चालीसा तथा सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए। 1,11,12 मास कष्टदायक रहेंगे।

संवत्सरफल

इस वर्ष **रौद्र** नामक संवत्सर का प्रवेश होगा। इस वर्ष राजा **'गुरु'** तथा मंत्री **'मंगल'** हैं। राजा और मंत्री में परस्पर मित्रता होने से शासक वर्ग, प्रजा तथा पशु-पक्षी आदि सुखी रहेंगे। व्यापारी वर्ग और सभी वर्गों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। **जगल्लग्न के विचार से** कर्क लग्न तथा लग्नेश चन्द्रमा राहु के साथ अष्टम भाव में स्थित है जिससे अधिकतर लोगों की मानसिकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। जनता और अपने कार्य का अधिक दबाव रहेगा। यह वर्ष अनेक समस्याओं को जन्म दे सकता है। मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक अशान्ति से बिखराव की स्थिति उत्पन्न होगी। भारत में स्त्री शासित प्रदेशों में विकास की स्थितियाँ बढ़ेंगी। मंत्री पदस्थ मंगल कूटनीतियों की अनेक चाल चलने में दक्ष है। तदनुसार भारतीय प्रशासन आतंकवादी ताकतों के गुप्त निर्णय को उद्घाटित कर उजागर करेगा। रूस, जापान, चीन, फिलीपीन्स द्वीप समूह, पूर्वी भारत एवं आस्ट्रेलिया आदि राज्यों में पर्वत श्रृंखलाओं के विघटन से जन-धन की हानि हो सकती है। विश्व व्यापार में परिवर्तन बनकर सुधार होने पर भी मँहगाई की समस्याऐं उभरी रहेंगी। **वर्ष लग्न के विचार से** चतुर्ग्रही योग होने तथा द्वादस्थ मंगल राहु के अंगारक योग से उग्रवाद व आतंकवादी गतिविधियों से विश्व में दुर्घटनाऐं तथा विस्फोटक सामग्री से जन-धन की हानि होगी। व्यय भाव में मंगल के होने से अनेक राष्ट्रों की सीमाओं पर सैन्य संघर्ष अथवा युद्ध से जनक्षति हो सकती है। नव वर्ष की लग्न वृश्चिक है। लग्नेश राहु के साथ सुखभाव है। अत: भारत के पड़ोसी देशों में आन्तरिक स्थिति विषम होगी। कहीं-कहीं तूफान, चक्रवात तथा किसी प्राकृतिक प्रकोप का सामना करना पड़ सकता है। **आर्द्रा प्रवेशांग के विचार से** आर्द्रा प्रवेश लग्न मकर है। वर्षाकाल में सूर्य के आगे शुक्र, गुरु एवं सूर्य के साथ बुध है इसके प्रभाव से वर्षा काल से अधिकांश भागों में वर्षा सामान्य होगी। कुछ भागों में शनि के प्रभाव से तेज वायु के साथ वर्षा होगी। कुण्डली में मंगल पंचम भाग में अग्नि तत्व है, अत: कुछ पश्चिमी भागों में वर्षा की कमी संभव है। उत्तर दक्षिणी भागों में सामान्य से अधिक वर्षा होगी। वायव्य कोण में सूर्य बुध से अल्प वर्षण योग है। ईशान कोण में वर्षा अच्छी होगी। आग्नेय नैऋत्य कोण में वर्षा अच्छी होगी। उत्तर-दक्षिण में अधिक वर्षा के योग है। **शारदीय धान्य के विचार से** शारदीय कुण्डली में कर्क लग्न लग्नेश कर्क भाव में पंचमेश मंगल के साथ है। सूर्य के आगे शुक्र एवं पीछे चन्द्रमा, सूर्य, बुध साथ हैं। अत: शारदीय फसल पर्याप्त होगी। अष्टम राहु की स्थिति में प्राकृतिक प्रकोप तथा रोग से फसल की कुछ भागों में कमी हो सकती है। **ग्रैष्मिकधान्य के विचार से** ग्रीष्म धान्योत्पत्ति में वृश्चिक लग्न है तथा सूर्य से द्वादश बुध है। इसके प्रभाववश ग्रीष्मकालीन फसल पर्याप्त होगी। लग्नेश मंगल तथा मंत्री भी मंगल है इसलिए लाल वस्तु की उत्पत्ति अच्छी होगी। मसूर, चना, गेहूँ की फसल की अच्छी पैदावार होगी।

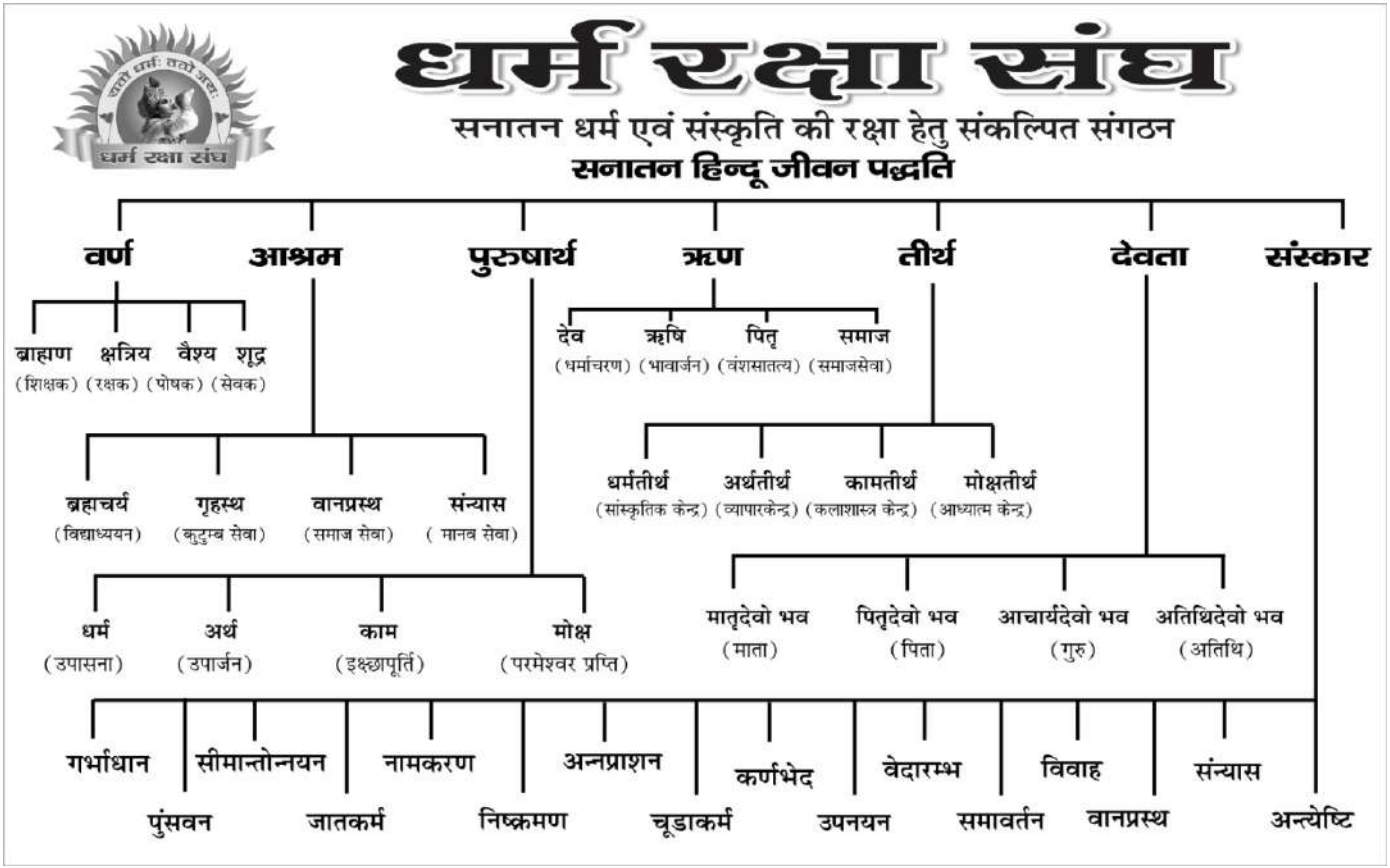

धर्म रक्षा संघ

सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु संकल्पित संगठन

सनातन हिन्दू जीवन पद्धति

- **वर्ण**
  - ब्राह्मण (शिक्षक)
  - क्षत्रिय (रक्षक)
  - वैश्य (पोषक)
  - शूद्र (सेवक)
- **आश्रम**
  - ब्रह्मचर्य (विद्याध्ययन)
  - गृहस्थ (कुटुम्ब सेवा)
  - वानप्रस्थ (समाज सेवा)
  - संन्यास (मानव सेवा)
- **पुरुषार्थ**
  - धर्म (उपासना)
  - अर्थ (उपार्जन)
  - काम (इक्ष्छापूर्ति)
  - मोक्ष (परमेश्वर प्रप्ति)
- **ऋण**
  - देव (धर्माचरण)
  - ऋषि (भावार्जन)
  - पितृ (वंशसातत्य)
  - समाज (समाजसेवा)
- **तीर्थ**
  - धर्मतीर्थ (सांस्कृतिक केन्द्र)
  - अर्थतीर्थ (व्यापारकेन्द्र)
  - कामतीर्थ (कलाशास्त्र केन्द्र)
  - मोक्षतीर्थ (आध्यात्म केन्द्र)
- **देवता**
  - मातृदेवो भव (माता)
  - पितृदेवो भव (पिता)
  - आचार्यदेवो भव (गुरु)
  - अतिथिदेवो भव (अतिथि)
- **संस्कार**
  - गर्भाधान
  - पुंसवन
  - सीमान्तोन्नयन
  - जातकर्म
  - नामकरण
  - निष्क्रमण
  - अन्नप्राशन
  - चूडाकर्म
  - कर्णभेद
  - उपनयन
  - वेदारम्भ
  - समावर्तन
  - विवाह
  - वानप्रस्थ
  - संन्यास
  - अन्त्येष्टि

अष्ट चिरंजीवी

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तएतै चिरजीविनः।।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जित।।

1. अश्वत्थामा 2. बली 3. व्यास 4. हनुमान
5. विभीषण 6. पाचार्य 7. परशुराम 8. मार्कण्डेय ऋषि

सप्तऋषि

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तएतै चिरजीविनः।।

1.कश्यप ऋषि 2. अत्रि ऋषि 3. भारद्वाज ऋषि 4. विश्वामित्र ऋषि
5. गौतम ऋषि 6. जमदग्नि ऋषि 7. वशिष्ठ ऋषि

सप्त पुरी

अयोध्या मथुरा माया काशी काँची अवंतिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः।।

1. अयोध्यापुरी-उत्तर प्रदेश
2. मथुरा-उत्तर प्रदेश
3. माया-हरिद्वार-पुरी उत्तराखंड
4. काशी-वाराणसी
5. कांची-कांचीपुरम
6. अवंतिका-उज्जैन
7. द्वारकापुरी-गुजरात।

12 ज्योर्तिलिंग

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्,
उज्जयिन्यां महाकालं ओमकारं ममलेश्वरम्।।
परल्यां वैद्यनाथ च डाकिन्यां भीमशंकरम्,
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने।।
वारणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बंक गौतमी तटे,
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिलावये।।
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः,
सप्तजन्मकृत पापं स्मरणेन विनश्यति।।

सोमनाथ (गुजरात), मल्लिकार्जुन (आंध्र प्रदेश), महाकालेश्वर (मध्य प्रदेश), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), केदारनाथ (उत्तराखंड), भीमाशंकर (महाराष्ट्र), विश्वनाथ (उत्तर प्रदेश), त्रयम्बकेश्वर (महाराष्ट्र), वैद्यनाथ (झारखंड), नागेश्वर (गुजरात), रामेश्वर (तमिलनाडु) और घुश्मेश्वर (महाराष्ट्र)।

पंच देव :

1. सूर्य, 2.शिव, 3. दुर्गा, 4. गणेश, 5. विष्णु

10 दिशा 10 दिगपाल

1. उत्तर-कुबेर देव 2. दक्षिण-यमदेव 3. पूर्व-इंद्रदेव
4. पश्चिम-वरुण देव 5. वायव्य देव-वायुदेव 6. ईशान-ईशान दे
7. नैऋत्य-सूर्यदेव 8. आग्नेय-अग्निदेव 9. उर्ध्व-ब्रह्मदेव
10. अधस्-विष्णु देव

चारधाम

1. बद्रीनाथ (उत्तराखंड)
2. द्वारिकापुरी (गुजरात)
3. जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा)
4. रामेश्वरम (तमिलनाडु)

चारवेद

1. ऋग्वेद
2. यजुर्वेद
3. सामवेद
4. अथर्ववेद

आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठ

1. उत्तर में - ज्योर्तिमठ (बद्रीनाथ) 2. दक्षिण में श्रृंगेरी पीठ (कर्नाटक)
2. पूर्व में- गोवर्धन मठ (पुरी-ओडिसा) 4. पश्चिम में- शारदा पीठ (द्वारिका-गुजरात)

१३ उपनिषद् विशेष मान्य तथा प्राचीन माने जाते हैं।

(१) ईश, (२) ऐतरेय (३) कठ (४) केन (५) छांदोग्य (६) प्रश्न (७) तैत्तिरीय (८) बृहदारण्यक (९) मांडूक्य (१०) मुंडक (११) श्वेताश्वतर (१२) कौषीतकि तथा (१३) मैत्रायणी।

18 पुराण

(१) ब्रह्म पुराण, (२) पद्म पुराण, (३) विष्णु पुराण, (४) वायु पुराण, (५) भागवत पुराण, (६) नारद पुराण, (७) मार्कण्डेय पुराण, (८) अग्नि पुराण, (९) भविष्य पुराण, (१०) ब्रह्म वैवर्त्त पुराण, (११) लिङ्ग पुराण, (१२) वाराह पुराण, (१३) स्कन्द पुराण, (१४) वामन पुराण, (१५) कूर्म पुराण, (१६) मत्स्य पुराण, (१७) गरुड़ पुराण, (१८) ब्रह्माण्ड पुराण।

चमत्कारी मंगल

मंगल ग्रह के 21 नाम हैं। जीवन के हर क्षेत्र में मंगलकारी परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन अथवा शनिवार और मंगलवार को विशेष रूप से मंगल देवता के निम्न नामों के उच्चारण से सभी कष्टों से छुटकारा एवं समस्याओं से जूझने की शक्ति मिलती है। संभव हो तो मंगल के निम्न नामों के उच्चारण के साथ मंगलयन्त्र का रोली-चावल से पूजन करते रहे :-

(1) मंगल (2) भूमिपुत्र (3) ऋणहर्ता (4) धनप्रदा
(5) स्थिरासन (6) महाकाय (7) सर्वकामार्थ साधक (8) लोहित
(9) लोहिताक्ष (10) सामगानंकृपाकर (11) धरात्मज (12) कुज्जा
(13) भूमिजा (14) भूमिनन्दन (15) अंगारक (16) भौम
(17) यम (18) सर्वरोगहारक (19) वृष्टिकर्ता (20) पापहर्त्ता
(21) सर्वकामफलदाता

ये नाम मंगल के स्वभाव को उजागर करते हैं और मंगली लोगों के लिए विशेष फलदायक हैं।

51 शक्ति पीठों के नाम

भारत में देवी के 51 शक्ति पीठ हैं जो अलग-अलग जगहों पर हैं। इनका हिन्दू धर्म में बहुत महत्त्व है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये सभी शक्ति पीठ कैसे स्थापित हुए ?पौराणिक कथा के अनुसार भगवान शिव की पहली पत्नी सती के पिता दक्ष प्रजापति ने बृहस्पति सर्व नाम का एक महायज्ञ किया था। जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र और दसरे देवी-देवताओं को आमंत्रित किया गया था लेकिन भगवान शिव को नहीं बुलाया। लेकिन फिर भी भगवान शिव बिना आमंत्रित हुए यज्ञ में शामिल हो गए। भगवान शिव के अनादर पर सती ने कुंड में कूदकर अपनी प्राणाहुति दे दी। जिसके बाद देवी सती के शरीर के 52 टुकड़े हुए, जो अलग-अगल जगहों पर गिरे। ये जगह शक्तिपीठ कहलाती हैं।

यहां देखिए 51 शक्ति पीठों के नाम और कहां गिरा कौन सा अंग :-

1. अमरनाथ, जम्मू कश्मी
2. ज्वाला देवी, कांगड़ा- जीभ
3. कात्यायनी, वृन्दावन- बाल
4. विशालक्षी, वाराणसी- कुंडल
5. ललिता, प्रयागराज- उंगलियां
6. त्रिपुरमालिनी, जलंधर- लेफ्ट ब्रेस्ट
7. सावित्री, कुरुक्षेत्र- सीधे पैर का टखना
8. मगध, पटना- शरीर का दाहिना भाग
9. दाक्षायनी, बुरांग(तिब्बत) - दाहिनी हथेली
10. महिषासुरमर्दिनी, कोल्हापुर- तीसरी आंख
11. भ्रामरी, नासिक- ठोड़ी
12. अंबाजी, गुजरात- दिल
13. गायत्री, पुष्कर- कलाई
14. अंबिका, भरतपुर- बायां पैर
15. सर्वशैल पूर्वी, गोदावरी- बायां गाल
16. श्रावणी, कन्याकुमारी- रीढ़ की हड्डी
17. भ्रमरांबा, कुरनूल- दाहिनी पायल
18. नारायणी, कन्याकुमारी- ऊपरी दांत
19. फुलारा, पश्चिम बंगाल- निचला होंठ
20. बहुला, पश्चिम बंगाल- बायां हाथ
21. महिषमर्दिनी, प. बंगाल- सिर का भाग
22. दक्षिणा काली, कोलकाता- उंगलियां
23. देवगर्भा, बीरभूम- हड्डी
24. विमला मुर्शिदाबाद- मुकुट
25. कुमारी शक्ति, हुगली- कंधा
26. नर्मदा, अमरकंटक- दायां नितंब
27. नागपूशनी, श्रीलंका- पायल
28. गंडकी चंडी, नेपाल- गाल
29. महाशिरा, काठमांडू- कूल्ह
30. हिंगलाज, पाकिस्तान- सिर
31. सुगंधा, बांग्लादेश- नाक
32. अपर्णा, बांग्लादेश- बाएं पैर की पायल
33. जेसोरेश्वरी, बांग्लादेश- हथेली
34. भवानी, बांग्लादेश- दाहिना हाथ
35. महा लक्ष्मी, बांग्लादेश- गर्दन
36. श्री पर्वत, लद्दाख - दाएं पैर की पायल
37. पंच सागर,वाराणसी- निचला दाड़
38. मिथिला, दरभंगा - बायां कंधा
39. रत्नावली, चेन्नई- दायां कंधा
40. कालमाधव, अन्नुपुर- बायां नितंब
41. रामगिरि, चित्रकूट -दायां वक्ष
42. भ्रामरी, जलपाईगुड़ी- बायां पैर
43. नंदिनी, पश्चिम बंगाल- हार
44. मंगल चंडिका, प. बंगाल- दाहिनी कलाई
45. कपालिनी पुरबा, प. बंगाल- बायां टखना
46. कामाख्या, गुवाहाटी- योनि
47. जयंती, मेघालय- बायीं जांघ
48. त्रिपुरा सुंदरी, त्रिपुरा- दायां पैर
49. बिराजा, ओडिशा- नाभि
50. जय दुर्गा, झारखंड- कान
51. अवंती, उज्जैन- ऊपरी होंठ

●●●

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

20 मार्च से 2 अप्रैल

चैत्र शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वसन्त ऋतु

(रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
0	गुरु	प्रतिपदा	28:52	0	0	0	0	0	प्रतिपदाक्षय: **नवरात्राम्भ** संवत्सराम्भ गौतम ऋषि जयन्ती
20	शुक्र	द्वितीया	26:30	रेवती	26:27	मे.26:27	06:28	06:26	पंचक सं. 26:27 रवि उत्तर गोले स.सि.अ.सि.यो.26:27 तक, झूलेलाल ज.,चन्द्र दर्शन
21	शनि	तृतीया	23:56	अश्विनी	24:37	मेष	06:27	06:27	गणगौर पूजन श्री मत्स्य जयन्ती
22	रवि	चतुर्थी	21:16	भरणी	22:42	वृ.28:14	06:25	06:27	भ. 10:36 से 21:16 तक
23	सोम	पंचमी	18:38	कृतिका	20:49	वृष	06:24	06:28	श्री पंचमी भक्त मीराबाई जयन्ती स.सि.यो. 20:49 से
24	मंगल	षष्ठी	16:07	रोहिणी	19:4	मि. 30:18	06:23	06:28	स्कन्ध षष्ठी, रोहिणी व्रत
25	बुध	सप्तमी	13:49	मृगशिरा	17:32	मिथुन	06:22	06:29	भ. 13:49 से 24:48 स. सि.यो. 17:32 तक
26	गुरु	अष्टमी	11:48	आर्द्रा	16:18	मिथुन	06:21	06:29	स.सि.यो. 16:18 से
27	शुक्र	नवमी	10:06	पुनर्वसु	15:23	क.9:37	06:20	06:30	**श्री रामनवमी** व्रतोत्सव:, **स्थापना दिवस धर्म रक्षा संघ**, स.सि.यो. 15:23 तक, नवरात्र समाप्त
28	शनि	दशमी	8:45	पुष्य	14:49	कर्क	06:19	06:30	भ. 20:15 से
29	रवि	एकादशी	07:46	अश्लेषा	14:37	सिं. 14:37	06:18	06:31	भ. 7:46 तक कामदा एकादशी व्रत सर्वेषां फूलडोल एकादशी व्रत
30	सोम	द्वादशी	07:09	मधा	14:47	सिंह	06:17	06:32	प्रदोष व्रत हरिमदनोत्सव
31	मंगल	त्रयोदशी	06:55	पू.फा0	15:20	क. 21:34	06:15	06:32	श्री महावीर जयन्ती
01	बुध	चतुर्दशी	07:06	उ0 फा.	16:17	कन्या	06:14	06:32	भ. 07:06 से 19:23 तक
02	गुरु	पूर्णिमा	07:41	हस्त	17:38	कन्या	06:13	06:32	चैत्री पूर्णिमा, **श्रीहनुमत जन्मोत्सव**

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल चैत्र शुक्ल पक्ष

19 मार्च (गुरुवार) - **गुड़ी पड़वा नव संवत्सर**
24 मार्च (मंगलवार) - **यमुना षष्ठी**
26 मार्च (गुरुवार) - **देवी मेला नरी सेमरी कात्यायनी वृन्दावन मेला**
27 मार्च (शुक्रवार) - **श्री राम नवमी**
02 अप्रैल (गुरुवार) - **श्री रंगनाथ व चतुर्भुजी लक्ष्मी विवाहोत्सव रंगनाथ, छप्पन भोग द्वारिकाधीश मथुरा, हनुमान जन्मोत्सव**

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

3 अप्रैल से 17 अप्रैल

वैशाख कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वसन्त ऋतु (रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
3	शुक्र	प्रतिपदा	08:42	चित्रा	19:24	तु. 6:31	06:12	06:33	गुड फ्राइडे
4	शनि	द्वितीया	10:8	स्वाति	21:35	तुला	06:11	06:33	भ.23:03 से स.सि.यो. 21:35 तक
5	रवि	तृतीया	11:59	विशाखा	24:07	वृ.17:29	06:09	06:34	भ.11:59 तक चतुर्दशी चन्द्रोदय 21:50
6	सोम	चतुर्थी	14:10	अनुराधा	26:56	वृश्चिक	06:08	06:34	स.सि.यो. 26:56 तक
7	मंगल	पंचमी	16:34	ज्येष्ठा	29:53	ध.29:53	06:07	06:35	-
8	बुध	षष्ठी	19:01	मूल	सम्पूर्ण	धनु	06:06	06:35	भ. 19:01 से
9	गुरु	सप्तमी	21:19	मूल	08:47	धनु	06:05	06:36	भ. 08:10 तक
10	शुक्र	अष्टमी	23:15	पू.षा.	11:27	म.18:00	06:04	06:36	**शीतला पूजा** (बड़ा बासोड़ा)
11	शनि	नवमी	24:37	उ.षा.	13:39	मकर	06:03	06:37	स.सि.यो. 13:39 से
12	रवि	दशमी	25:16	श्रवण	15:13	कु.27:38	06:02	06:37	भ.12:56से25:16तक पंचक प्रा.27:38
13	सोम	एकादशी	25:08	घनिष्ठा	16:03	कुंभ	06:01	06:38	वरुथिनी एकादशी व्रत वैष्णव, **श्री बल्लभाचार्य** जयन्ती
14	मंगल	द्वादशी	24:12	शतभिषा	16:05	कुम्भ	06:00	06:38	वरुथिनी एकादशी व्रत निम्बार्क मेष में सूर्य 09:33 खरमास समाप्त
15	बुध	त्रयोदशी	22:31	पू.भा.	15:22	मी.09:33	05:59	06:39	भ 22:31 से प्रदोष व्रत
16	गुरु	चतुर्दशी	20:11	उ.भा.	13:58	मीन	05:58	06:40	भ. 09:21 तक स.सि.यो. 13:58
17	शुक्र	अमावस्या	17:21	रेवती	12:1	मे.12:01	05:57	06:41	पंचक समाप्त 12:01 देव पितृ कार्ये अमावस्या, श्री शुकदेव

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल वैशाख कृष्ण पक्ष

(1) समय का नाश सर्वनाश हैं। अतः समय सोच विचार कर व्यतीत करें।

(2) सबसे नम्रता का व्यवहार दिव्यवृत हैं।

(3) पवित्र मन सबसे बड़ा तीर्थ स्थल हैं।

(4) मनुष्य में तीन चीजें वास करती हैं पशुता मनुष्यता दिव्यता जो आप चाहें उसे अपना सकते हैं।

(5) सत्य ही सर्वोत्तम नीति है।

(6) धर्म, देवता, समय, शास्त्र और सदाचार इनका सम्मान करो।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

18 अप्रैल से 1 मई

वैशाख शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वसन्त ऋतु

(रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
18	शनि	प्रतिपदा	14:10	अश्विनी	09:42	मेष	05:56	06:41	ऋषि पाराशर जयंती, चन्द्र दर्शन
19	रवि	द्वितीया	10:49	भरणी	07:09	वृ.12:30	05:55	06:41	**श्री परशुराम जयंती**, अक्षय तृतीया (केचिन्मते)
				परंकृतिका	28:34				
20	सोम	तृतीया परं	07:27	रोहिणी	26:07	वृष	05:54	06:42	भ. 17:50 से 28:14 तक रोहिणी व्रत ग्रीष्म ऋतु-प्रारंम्भ स.सि.अ. सि.यो. 26:07 से, **अक्षय तृतीया** बाँके बिहारी वृन्दावन
0	सोम	चतुर्थी	28:14	0	0	0	0	0	चतुर्थीक्षय:
21	मंगल	पंचमी	25:19	मृगशिरा	23:58	मि.13:2	05:53	06:42	**आद्यशंकराचार्य जयन्ती, सूरदास जयन्ती**
22	बुध	षष्ठी	22:49	आद्रा	22:12	मिथुन	05:52	06:43	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
23	गुरु	सप्तमी	20:49	पुनर्वसु	20:56	क.15:15	05:51	06:43	भ. 20:49 से **श्री गंगा सप्तमी** स.सि.आ.सि.यो. 20:56 से
24	शुक्र	अष्टमी	19:21	पुष्य	20:13	कर्क	05:50	06:44	भ. 08:5 तक देवी बगलामुखी जयन्ती
25	शनि	नवमी	18:27	अश्लेषा	20:4	सिं.20:4	05:49	06:45	श्री जानकी नवमी
26	रवि	दशमी	18:06	मघा	20:26	सिंह	05:48	06:45	–
27	सोम	एकादशी	18:15	पू.फा.	21:18	कं.27:37	05:47	06:46	भ. 06:10 से 18:15 तक मोहिनी एकादशी व्रत (सर्वेषां)
28	मंगल	द्वादशी	18:51	उ.फा.	22:23	कन्या	05:46	06:47	–
29	बुध	त्रयोदशी	19:51	हस्त	24:15	कन्या	05:46	06:47	प्रदोष व्रत अगस्त तारा स.सि.यो. 24:15 तक
30	गुरु	चतुर्दशी	21:12	चित्रा	26:16	तु.13:15	05:45	06:48	भ. 21:12 से **श्री नृसिंह जयन्ती**
1	शुक्र	पूर्णिमा	22:52	स्वाती	28:34	तुला	05:45	06:48	भ. 10:02 तक बुद्ध पूर्णिमा, सत्यव्रत श्री कूर्म जयन्ती

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल वैशाख शुक्ल पक्ष

20 अप्रैल (सोमवार) – चन्दनयात्रा, जल कुम्भदान, श्री द्वारिकाधीशजी, मथुरा, अक्षय तृतीया, श्री बिहारीजी चरण दर्शन

24 अप्रैल (शुक्रवार) – श्रीजी मन्दिर 4 दिन चाव सवारी, राधावल्लभ, वृन्दावन

27 अप्रैल (सोमवार) – श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभू जन्म उत्सव, राधावल्लभ, वृन्दावन

29 अप्रैल (बुधवार) – श्रीनिम्बार्क तप:स्थली पर श्रीनिम्बार्कराधाकृष्णबिहारीजी का 36वां पाटोत्सव

30 अप्रैल (गुरुवार) – श्री नृसिंह जयन्ती

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

2 मई से 16 मई

प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

ग्रीष्म ऋतु

(रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
13	मंगल	प्रतिपदा	24:35	विशाखा	09:08	वृश्चिक	05:36	06:55	–
2	शनि	प्रतिपदा	24:49	विशाखा	सम्पूर्ण	वृ.24:30	05:44	06:49	–
3	रवि	द्वितीया	27:01	विशाखा	07:09	वृश्चिक	05:43	06:49	श्रीनारद जयंती, वृन्दावन परिक्रमा वनविहार
4	सोम	तृतीया	29:24	अनुराधा	09:57	वृश्चिक	05:43	06:50	भ. 16:12 से 29:24 तक स.सि. यो. 9:57 तक
5	मंगल	चतुर्थी	सम्पूर्ण	ज्येष्ठा	12:54	ध.12:54	05:42	06:50	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22:26
6	बुध	चतुर्थी	07:51	मूल	15:53	धनु	05:41	06:51	–
7	गुरु	पंचमी	10:31	पू.षा.	18:45	म.25:23	05:40	06:51	–
8	शुक्र	षष्ठी	12:21	उ.षा.	21:19	मकर	05:40	06:52	भ. 12:21 से 25:11 तक स.सि. यो. 21:19 से
9	शनि	सप्तमी पर	14:02	श्रवण	23:24	मकर	05:39	06:52	कालाष्टमी स.सि.यो. 23:24 तक
10	रवि	अष्टमी	15:06	धनिष्ठा	24:49	कु.12:06	05:39	06:53	पंचक प्रारम्भ 12:6
11	सोम	नवमी	15:24	शतभिषा	25:28	कुम्भ	05:38	06:54	भ. 27:8 से
12	मंगल	दशमी	14:52	पू.भा.	25:16	मी.19:19	05:37	06:54	भ. 14:52 तक स.सि.यो 25:16 से
13	बुध	एकादशी	13:29	उ.भा.	24:17	मीन	05:36	06:55	अपरा एकादशी व्रत (सर्वेषां)
14	गुरु	द्वादशी	11:20	रेवती	22:33	मे.22:33	05:36	06:56	पंचक समाप्त 22:33 प्रदोष व्रत, सावित्री व्रत प्रारम्भ, स.सि.यो.
15	शुक्र	त्रयोदशी परं	08:31	अश्विनी	20:14	मेष	05:35	06:56	भ. 08:31 से 18:51 तक वृष में सूर्य 6:22 मास शिवरात्रि स.सि.यो. 20:14 तक, श्री शशिमोहनदास जी तिरोभाव
0	शुक्र	चतुर्दशी	29:11	0	0	0	0	0	चतुर्दशी क्षय:
16	शनि	अमावस्या	25:30	भरणी	17:19	वृ.22:44	05:35	06:57	देव पितृ कार्ये अमावस्या, वट सावित्री व्रत पूजन, श्री शनि जयन्ती

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

भद्रा विचार

भद्रा भगवान सूर्य की कन्या है। वह काले वर्ण, लम्बे केश, बड़े दाँत, भयंकर रूप वाली है। भद्रा संसार का ग्रास करने के लिए दौड़ी, यज्ञ में विघ्न बाधा पहुँचाने लगी तथा मंगल कार्यों में उपद्रव करने लगी और समस्त जगत को कष्ट पहुँचाने लगी। अत: यात्रा, प्रवेश, मांगल्य, कृत्य, रेवती, व्यापार, उद्योग आदि कार्य भद्रा के समय में न करें। मांगलिक कार्यों में भद्रा का सर्वथा त्याग करें। भद्रा के 12 नाम है- धन्या, दधिमुखी, भद्रा, महामारी, खरानना, कालरात्रि, महारुद्रा, विष्टि, कुलपुत्रिका, भैरवी, महाकाली, असुरक्षयकारी। इन 12 नामों को जो प्रात: काल लेता है उसके समस्त विघ्न दूर हो जाते हैं और सफलता प्राप्त होती है।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

17 मई से 31 मई

प्र. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

ग्रीष्म ऋतु **(रवि उत्तरायणे)**

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
17	रवि	प्रतिपदा	21:40	कृतिका	14:31	वृष	05:34	06:57	पुरुषोत्तम मास प्रारम्भ, रोहिणी व्रत
18	सोम	द्वितीया	17:52	रोहिणी	11:31	मि.22:06	05:34	06:58	स.सि.अ.सि.यो.अ.सि.यो.11:31 से, चन्द्र दर्शन
19	मंगल	तृतीया	14:18	मृगशिरा	08:41	मिथुन	05:33	06:58	भ. 24:42 से
20	बुध	चतुर्थी	11:06	आर्द्रा परं पुनर्वसु	06:11 28:11	क.24:11	05:33	06:58	भ. 11:6 तक
21	गुरु	पंचमी	08:26	पुष्य	26:48	कर्क	05:32	06:59	स.सि.अ.सि. यो. 26:48 तक
22	शुक्र	षष्ठी परं	06:24	अश्लेषा	26:07	सिं.26:07	05:32	07:00	भ. 29:04 से
0	शुक्र	सप्तमी	29:04	0	0	0	0	0	सप्तमीक्षय:
23	शनि	अष्टमी	28:26	मघा	26:08	सिंह	05:32	07:00	भ. 16:45 तक
24	रवि	नवमी	28:30	पू.फा.	26:50	सिंह	05:31	07:01	स.सि.यो. 26:50 से
25	सोम	दशमी	29:10	उ.फा.	28:08	क.09:09	05:31	07:02	**श्री गंगा दशहरा**, तपनकाल प्रारम्भ
26	मंगल	एकादशी	सम्पूर्ण	हस्त	सम्पूर्ण	कन्या	05:30	07:02	भ. 17:45 से
27	बुध	एकादशी	06:21	हस्त	05:56	तु.19:01	05:30	07:03	भ. 6:21 तक कमला पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (सर्वेषां) स.सि.यो. 5:56 तक
28	गुरु	द्वादशी	07:56	चित्रा	08:07	तुला	05:29	07:03	प्रदोष व्रत
29	शुक्र	त्रयोदशी	09:50	स्वाति	10:37	तुला	05:29	07:04	–
30	शनि	चतुर्दशी	11:57	विशाखा	13:17	वृ.06:39	05:29	07:04	भ. 11:57 से25:5 तक, सत्यव्रत पूर्णिमा
31	रवि	पूर्णिमा	14:14	अनुराधा	16:11	वृश्चिक	05:29	07:05	स्नानादि उदय पूर्णिमा

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **प्र. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष**

नोट :- पुरुषोत्तम मास (लोंद मास) अधिकमास - इस मास में कांस्य पात्र में 32 पूप (पूआ) रखकर दान करने का बड़ा महत्व है।

17 मई (रविवार) से 15 जून (सोमवार) तक पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) इस मास में विवाहादि शुभकार्य वर्जित होते हैं किन्तु भगवान कथा, तीर्थाटन, स्नान, दानादि का फल कई गुना अधिक प्राप्त होता है।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

1 जून से 15 जून

द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

ग्रीष्म ऋतु (रवि उत्तरायणे)

ता	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
1	सोम	प्रतिपदा	16:37	ज्येष्ठा	19:08	ध.19:08	05:29	07:06	कर्क में गुरु 25:47
2	मंगल	द्वितीया	19:01	मूल	22:05	धनु	05:29	07:06	-
3	बुध	तृतीया	21:21	पू.षा.	24:59	धनु	05:29	07:06	भ.08:11 से 21:21 तक
4	गुरु	चतुर्थी	23:30	उ.षा.	27:41	म.07:39	05:28	07:07	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22:36
5	शुक्र	पंचमी	25:20	श्रवण	सम्पूर्ण	मकर	05:28	07:07	पर्यावरण दिवस स.सि.यो.
6	शनि	षष्ठी	26:41	श्रवण	06:02	कु.18:58	05:28	07:08	भ. 26:41 से पंचक प्रा. 18:58 स. सि.यो. 06:02 तक
7	रवि	सप्तमी	27:24	धनिष्ठा	07:55	कुम्भ	05:28	07:08	भ. 15:02 तक
8	सोम	अष्टमी	27:23	शतभिषा	09:09	मी.27:32	05:28	07:08	कालाष्टमी व्रत
9	मंगल	नवमी	26:34	पू.भा.	09:39	मीन	05:28	07:09	स.सि.यो. 09:39 से
10	बुध	दशमी	24:57	उ.भा.	09:21	मीन	05:28	07:09	भ. 13:45 से 24:57 तक
11	गुरु	एकादशी	22:36	रेवती	08:15	मे.08:15	5:28	07:10	पंचक स.08:15 कमला पुरुषोत्तमा
12	शुक्र	द्वादशी	19:36	अश्विनी	06:28	मेष	05:28	07:10	एकादशी व्रत वैष्णव स्मार्त
				परंभरणी	28:05				एकादशी व्रत निम्बार्क प्रदोष व्रत स.सि.यो. 06:28 तक
13	शनि	त्रयोदशी	16:07	कृतिका	25:16	वृ.09:23	05:28	07:10	भ. 16:07 से 26:13 तक स.सि. यो.अ.सि.यो. 25:16 से
14	रवि	चतुर्दशी	12:19	रोहिणी	22:13	वृष	05:28	07:11	पितृ कार्ये अमावस्या, रोहिणी व्रत
15	सोम	अमावस्या	08:23	मृगशिरा	19:07	मि.08:40	05:28	07:11	देवकार्ये अमावस्या पुरुषोत्तम मास समाप्त मिथुन में सूर्य 12:53 स.सि. अ.सि.यो.19:07 तक

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल द्वि.ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

11 जून (गुरुवार) - कमला पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वैष्णव)
15 जून (सोमवार) - पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) सम्पन्न

नोट :-

पुरुषोत्तम मास में सकाम कर्म करने की अपेक्षा भगवत् प्रीत्यर्थं, भगवत् आराधना, श्रीमद्भागवत पाठ, विष्णु सहस्त्रनाम पाठ एवं तुलसी अर्चन आदि करने से भगवत् कृपा प्राप्त होती है।

श्रीसम्वत् 2083 | शाके 1948 | सन् 2026 ई.

16 जून से 29 जून

ग्रीष्म ऋतु

द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

(रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
0	सोम	प्रतिपदा	28:30	0	0	0	0	0	प्रतिपदाक्षय:
16	मंगल	द्वितीया	24:52	आर्द्रा	16:11	मिथुन	05:28	07:12	चन्द्र दर्शन
17	बुध	तृतीया	21:38	पुनर्वसु	13:36	क.8:15	05:28	07:12	रम्भातीज व्रत, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती
18	गुरु	चतुर्थी	18:58	पुष्य	11:31	कर्क	05:28	07:12	भ. 8:18 से 18:58 तक स.सि.अ. सि.यो. 11:31 तक
19	शुक्र	पंचमी	16:59	अश्लेषा	10:06	सिं.10:06	05:29	07:13	–
20	शनि	षष्ठी	15:46	मघा	09:25	सिंह	05:29	07:13	अरण्य षष्ठी
21	रवि	सप्तमी	15:20	पू.फा.	09:30	क.15:43	05:29	07:13	भ. 15:20 से 27:29 तक वर्षाऋतु प्रारम्भ रविदक्षिणायणेस.सि.यो. 9:30 से
22	सोम	अष्टमी	15:39	उ.फा.	10:21	कन्या	05:29	07:13	देवी धूमावती जयन्ती
23	मंगल	नवमी	16:39	हस्त	11:53	तु.24:55	05:30	07:14	–
24	बुध	दशमी	18:12	चित्रा	13:58	तुला	05:30	07:14	**गंगा दशहरा**
25	गुरु	एकादशी	20:09	स्वाति	16:28	तुला	05:30	07:14	भ. 07:10 से 20:9 तक निर्जला एकादशी व्रत (सर्वेषां)
26	शुक्र	द्वादशी	22:22	विशाखा	19:15	वृ.12:33	05:30	07:14	स.सि.यो. 19:15 से
27	शनि	त्रयोदशी	24:43	अनुराधा	22:10	वृश्चिक	05:31	07:14	शनि प्रदोष व्रत
28	रवि	चतुर्दशी	27:06	ज्येष्ठा	25:08	ध.25:8	05:31	07:14	भ. 27:6 स.सि.यो. 25:08 से
29	सोम	पूर्णिमा	29:26	मूल	28:03	धनु	05:31	07:14	भ.16:16 तक पूर्णिमा व्रत, वट् सावित्री व्रत पूर्ण

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल द्वि.ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

17 जून (बुधवार) – जगद्गुरु अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज का 83वाँ पाटो.

19 जून (शुक्रवार) – नाव मनोरथ, द्वारिकाधीश, मथुरा

24 जून (बुधवार) – श्री यमुना उत्सव, द्वारिकाधीश, मथुरा, गंगा दशहरा

26 जून (शुक्रवार) – श्रीजी पुष्प नौका (पुष्पकुंज में विराजे, श्री राधाबल्लभ जी, वृन्दावन)

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

30 जून से 14 जुलाई

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वर्षा ऋतु (रवि दक्षिणायने)

ता	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
30	मंगल	प्रतिपदा	सम्पूर्ण	पू.षा.	सम्पूर्ण	धनु	05:32	07:14	–
1	बुध	प्रतिपदा	07:38	पू.षा.	06:50	म.13:29	05:32	07:14	–
2	गुरु	द्वितीया	07:37	उ.षा.	09:26	मकर	05:32	07:14	भ 22:28 से
3	शुक्र	तृतीया	11:20	श्रवण	11:46	कु.24:44	05:33	07:14	भ. 11:20 तक पंचक प्रा0 24:44 चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21:46 स.सि. यो. 11:46 तक
4	शनि	चतुर्थी	12:39	धनिष्ठा	13:43	कुम्भ	05:33	07:14	–
5	रवि	पंचमी	13:30	शतभिषा	15:12	कुम्भ	05:33	07:14	–
6	सोम	षष्ठी	13:47	पू.भा.	16:07	मी.09:53	05:34	07:14	भ. 13:47 से 25:35 तक
7	मंगल	सप्तमी	13:24	उ.भा.	16:23	मीन	05:34	07:14	कालाष्टमी व्रत स.सि.यो. 16:23 तक
8	बुध	अष्टमी	12:21	रेवती	15:59	मे.15:59	05:34	07:14	पंचक समाप्त 15:59
9	गुरु	नवमी	10:37	अश्विनी	14:55	मेष	05:35	07:13	भ. 21:27 से स.सि.यो. 14:55 तक
10	शुक्र	दशमी परं	08:16	भरणी	13:14	वृ.18:41	05:35	07:13	भ. 8:16 तक योगिनी एकादशी व्रत
0	शुक्र	एकादशी	29:12	0	0	0	0	0	स्मार्त एकादशीक्षय:
11	शनि	द्वादशी	26:04	कृतिका	11:03	वृष	05:36	07:13	योगिनी एकादशी व्रत वैष्णव रोहिणी व्रत स.सि.यो.अ.सि.यो. 11:03 से
12	रवि	त्रयोदशी	22:29	रोहिणी	08:28	मि.19:04	05:36	07:13	भ. 22:29 से प्रदोष व्रत मास शिवरात्रि
13	सोम	चतुर्दशी	18:49	मृगशिरा	05:41	मिथुन	05:37	07:13	भ. 08:39 तक स.सि.अ.सि.यो.
–	–	–	–	परं आर्द्रा	26:51	–	–	–	5:41 तक
14	मंगल	अमावस्या	15:13	पुनर्वसु	24:09	क.18:50	05:37	07:13	देव पितृकार्ये अमावस्या

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल आषाढ़ कृष्ण पक्ष

काल-गणना

चौबीस मिनट की एक घड़ी होती है। दो घड़ी अट्ठाईस मिनट का एक मुहूर्त्त होता है। पन्द्रह मुहूर्त्त का एक दिन और पन्द्रह मुहूर्त्त की एक रात होती है। सूर्योदय से पहले तीन मुहूर्त्त का प्रात:काल और फिर तीन मुहूर्त्त का संगवकाल फिर तीन मुहूर्त्त का मध्याह्न काल फिर तीन मुहूर्त्त का अपराह्नकाल और उसके बाद तीन मुहूर्त्त का सायंकाल होता है।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

15 जुलाई से 29 जुलाई

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वर्षा ऋतु

(रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
15	बुध	प्रतिपदा	11:50	पुष्य	21:46	कर्क	05:38	07:12	गुप्तनवरात्र प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन
16	गुरु	द्वितीया	08:52	अश्लेषा	19:51	सिं.19:51	05:38	07:12	**श्री जगन्नाथ रथयात्रा (पुरी)** कर्क में सूर्य 23:40 गुरु पश्चिमास्त 26:40
17	शुक्र	तृतीया परं	06:27	मघा	18:34	सिंह	05:39	07:12	भ. 17:34 से 28:42 तक श्री बल्लभाचार्य जी की पुण्य तिथि
0	शुक्र	चतुर्थी	28:42	0	0	0	0	0	चतुर्थीक्षय:
18	शनि	पंचमी	27:42	पू.फा.	17:59	क.24:02	05:39	07:11	**द्वारिकाधीश पाटोत्सव:**
19	रवि	षष्ठी	27:29	उ.फा.	18:11	कन्या	05:40	07:11	कौमारिकी षष्ठी स.सि.अ.सि.यो. 18:11
20	सोम	सप्तमी	28:02	हस्त	19:09	कन्या	05:40	07:11	भ. 28:2 से सूर्य पूजा
21	मंगल	अष्टमी	29:16	चित्रा	20:48	तु.7:58	05:41	07:10	भ. 16:39 तक
22	बुध	नवमी	सम्पूर्ण	स्वाति	23:02	तुला	05:41	07:10	भड्डली नवमी अवूझ मुहुर्त
23	गुरु	नवमी	07:03	विशाखा	25:42	वृ.19:02	05:42	07:09	स.सि.यो. 25:42 से
24	शुक्र	दशमी	09:12	अनुराधा	28:36	वृश्चिक	05:42	07:09	भ. 22:23 से स.सि.यो. 28:36 तक
25	शनि	एकादशी	11:34	ज्येष्ठा	सम्पूर्ण	वृश्चिक	05:43	07:08	भ.11:34तक देवशयनी एकादशी व्रत (सर्वेषां)
26	रवि	द्वादशी	13:57	ज्येष्ठा	07:34	ध.07:34	05:43	07:08	प्रदोष व्रत स.सि.यो. 7:34 से
27	सोम	त्रयोदशी	16:14	मूल	10:28	धनु	05:44	07:07	–
28	मंगल	चतुर्दशी	18:18	पू.षा.	13:10	म.19:46	05:44	07:07	भ. 18:18 से
29	बुध	पूर्णिमा	20:05	उ.षा.	15:36	मकर	05:45	07:06	भ. 7:11 तक सत्यव्रत, पूर्णिमा **गुरुपूर्णिमा (मुड़िया पूनो)** गोवर्धन परिक्रमा, व्यास पूजा।

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **आषाढ़ शुक्ल पक्ष**

16 जुलाई (गुरुवार) – रथयात्रा, श्री बिहारी जी, श्री राधाबल्लभ जी, वृन्दावन, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज का विरक्त दीक्षोपरान्त श्रीयुवराज पदासीन उत्सव

18 जुलाई (शनिवार) – श्री द्वारिकाधीश जी पाटोत्सव, मथुरा

24 जुलाई (शुक्रवार) – श्रीमाधवाचार्य पाटोत्सव

25 जुलाई (शनिवार) – देवशयन, चातुर्मास नियमादि प्रारम्भ, श्री द्वारिकाधीश जी, मथुरा

29 जुलाई (बुधवार) – मुड़िया पूनो, गुरु पूर्णिमा, परिक्रमा गोवर्धन, निधिवन में फूल बंगला, गजेन्द्र मोक्ष उत्सव, श्रीरंगजी, वृन्दावन, गुरु पूर्णिमा

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

30 जुलाई से 12 अगस्त

श्रावण कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वर्षा ऋतु (रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
30	गुरु	प्रतिपदा	21:30	श्रवण	17:42	मकर	05:45	07:06	–
31	शुक्र	द्वितीया	22:31	धनिष्ठा	19:26	कु.6:34	05:46	07:05	पंचक प्रारम्भ 06:34
1	शनि	तृतीया	23:07	शतभिषा	20:44	कुम्भ	05:47	07:04	भ. 10:49 से 23:7 तक
2	रवि	चतुर्थी	23:15	पू.भा.	21:36	मी.15:23	05:47	07:04	चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 21:21 स.सि. यो. 21:36 से
3	सोम	पंचमी	22:54	उ.भा.	21:59	मीन	05:48	07:03	नाग पंचमी मरुस्थले
4	मंगल	षष्ठी	22:03	रेवती	21:53	मे.21:53	05:48	07:03	भं. 22:03 से पंचक समाप्त 21:53 स.सि.यो.अ.सि.यो. 21:53 से
5	बुध	सप्तमी	20:42	अश्विनी	21:17	मेष	05:49	07:02	भ. 09:22 तक
6	गुरु	अष्टमी	18:52	भरणी	20:13	वृ.25:50	05:49	07:01	कालाष्टमी व्रत
7	शुक्र	नवमी	16:36	कृतिका	18:42	वृष	05:50	07:00	भ. 27:17 से रोहिणी व्रत
8	शनि	दशमी	13:59	रोहिणी	16:50	मि.27:46	05:50	07:00	भ.13:59 तक स.सि.अ.सि.यो. 16:50 तक
9	रवि	एकादशी	11:04	मृगशिरा	14:43	मिथुन	05:51	06:59	कामिका एकादशी व्रत (सर्वेषा)
10	सोम	द्वादशी परं	08:00	आर्द्रा	12:26	क.28:43	05:51	06:58	भ. 28:54 से प्रदोष व्रत, गुरु पूर्वोदय 5:50
0	सोम	त्रयोदशी	28:54	0	0	0	0	0	त्रयोदशीक्षय:
11	मंगल	चतुर्दशी	25:53	पुनर्वसु	10:09	कर्क	05:52	06:57	भ. 15:23 तक मास शिवरात्री व्रत
12	बुध	अमावस्या	23:06	पुष्य	07:59	कर्क	05:52	06:56	हरियाली अमावस्या

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल श्रावण कृष्ण पक्ष

पूजन के अंग

पंचि उपचार – गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य ।

दश उपचार– पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र निवेदन, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य ।

घोडश उपचार – पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तवपाठ, तर्पण, नमस्कार ।

स्नान करके पुष्प व तुलसी दल तोडें । तुलसी का एक–एक पत्ता न तोड़कर पत्तियों के साथ अग्रभाग तोड़ें मंजरी सब फूलों से बढ़कर है । मंजरी तोड़ते समय पत्तियों का रहना आवश्यक है । तुलसीदल मंगल, शुक्र और रवि को द्वादशी, अमावस्या व पूर्णिमा तथा जननाशौच और मरणाशौच में न तोड़ें । किन्तु वृक्ष से गिरा हुआ तुलसी कभी भी ले सकते हैं । बिना स्नान व जूता पहनकर, सन्ध्या समय व रात्रि में भी तुलसी न तोड़ें ।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

13 अगस्त से 28 अगस्त

श्रावण शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वर्षा ऋतु

(रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
13	गुरु	प्रतिपदा	20:41	अश्लेषा परं मघा	06:06 28:38	सिं.06:06	05:53	06:56	–
14	शुक्र	द्वितीया	18:46	पू.फा.	27:42	सिंह	05:53	06:55	सिधारा दूज, स्वामी श्रीकरपात्री जयन्ती, चन्द्र दर्शन
15	शनि	तृतीया	17:28	उ.फा.	27:25	क.09:38	05:54	06:54	भ. 29:10 से **हरियाली तीज**, झूला प्रा., **80वाँ स्वतन्त्रता दिवस**
16	रवि	चतुर्थी	16:52	हस्त	27:50	कन्या	05:54	06:53	भ. 16:52 तक विनायक चतुर्थी स.सि.अ.सि.यो. 27:50 तक
17	सोम	पंचमी	16:59	चित्रा	28:58	तु.16:24	05:55	06:52	नाग पंचमी श्री कल्कि जयन्ती सिंह में सूर्य 07:59
18	मंगल	षष्ठी	17:50	स्वाती	सम्पूर्ण	तुला	05:55	06:51	वर्ण श्रयाल षष्ठी
19	बुध	सप्तमी	19:19	स्वाति	06:46	वृ.26:32	05:56	06:50	भ.19:19 से **श्री तुलसीदास जयन्ती**
20	गुरु	अष्टमी	21:18	विशाखा	09:07	वृश्चिक	05:56	06:49	भ. 08:18 तक दूर्वाष्टमी स.सि.यो. 09:07 से स.सि.यो. 11:52 तक
21	शुक्र	नवमी	23:36	अनुराधा	11:52	वृश्चिक	05:57	06:48	–
22	शनि	दशमी	26:00	ज्येष्ठा	14:48	ध.14:48	05:57	06:47	भ.15:9 से28:18 पवित्रा एकादशी स्मार्त
23	रवि	एकादशी	28:18	मूल	17:44	धनु	05:58	06:46	स.सि.यो. 17:44 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (निम्बार्क)
24	सोम	द्वादशी	सम्पूर्ण	पू.षा.	20:27	म.27:03	05:58	06:45	भौम प्रदोष व्रत
25	मंगल	द्वादशी	06:20	उ.षा.	22:50	मकर	05:59	06:44	अगस्त तारा उदय
26	बुध	त्रयोदशी	07:59	श्रवण	24:47	मकर	05:59	06:43	भ. 09:8 से 21:27 पंचक प्रा. 13:31 सत्यव्रत
27	गुरु	चतुर्दशी	09:08	धनिष्ठा	26:15	कु.13:31	06:00	06:42	पूर्णिमा
28	शुक्र	पूर्णिमा	09:47	शतभिषा	27:12	कुम्भ	06:00	06:41	पूर्णिमा, **रक्षाबन्धन, श्रावणी उपाकर्म,** ऋषि तर्पण, श्री गायत्री जयन्ती

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल श्रावण शुक्ल पक्ष

अचूक उपाय : यदि किसी के विवाह में देरी हो रही हो।

21 विल्व पत्रों को काले तिल मिश्रित दही में डालकर एक एक विल्व पत्र ॐनमः शिवाय बोलकर शिवजी की पूजा करने के पश्चात् चढ़ायें। यह प्रयोग शुक्लपक्ष के सोमवार से आरम्भ करें। ऐसा 41 दिन तक करें। भगवान अशुतोष अवश्य ही कृपा करेंगे।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

29 अगस्त से 11 सितम्बर

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

शरद् ऋतु

(रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
29	शनि	प्रतिपदा	09:56	पू.भा.	27:41	मी.21:34	06:01	06:40	–
30	रवि	द्वितीया	09:37	उ.भा.	27:44	मीन	06:01	06:39	भ. 21:14 से स.सि.यो. 27:44 तक
31	सोम	तृतीया	08:57	रेवती	27:23	मे.27:23	06:02	06:38	भ 8:51 तक पंचक स0 27:23 वहुला चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 20:27
1	मंगल	चतुर्थी	07:41	अश्विनी	26:41	मेष	06:02	06:37	स.सि.अ.सि.यो. 26:41 तक
2	बुध	पंचमी परं	06:12	भरणी	25:42	मेष	06:02	06:36	भ. 28:26 से चन्दन षष्ठी व्रत स. सि.यो. 25:42 से
0	बुध	षष्ठी	28:26	0	0	0	0	0	षष्ठीक्षय:
3	गुरु	सप्तमी	26:25	कृतिका	24:28	वृ.7:23	06:03	06:35	भ. 15:25 तक
4	शुक्र	अष्टमी	24:13	रोहिणी	23:03	वृष	06:03	06:33	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत**, रोहिणी व्रत, चन्द्रोदय 23:28
5	शनि	नवमी	21:53	मृगशिरा	21:30	मि.10:16	06:04	06:32	गोगा नवमी, **नन्दोत्सव**
6	रवि	दशमी	19:29	आर्द्रा	19:52	मिथुन	06:04	06:31	भ. 8:41 से 19:29 तक
7	सोम	एकादशी	17:04	पुनर्वसु	18:13	क.12:38	06:05	06:30	अजा एकादशी व्रत सर्वेषां ससि. यो. 18:13 से
8	मंगल	द्वादशी	14:42	पुष्य	16:39	कर्क	06:05	06:29	प्रदोष व्रत स.सि.यो. 16:39 से
9	बुध	त्रयोदशी	12:30	अश्लेषा	15:13	सिं.15:13	06:06	06:28	भ. 12:30 से 23:31 तक श्रीकृष्ण छटि पूजन, मास शिवरात्री
10	गुरु	चतुर्दशी	10:33	मघा	14:04	सिंह	06:06	06:27	पितृकार्ये अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या
11	शुक्र	अमावस्या	08:56	पू.फा.	13:15	क.19:10	06:07	06:26	स्नानादि देव कार्ये अमावस्या

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **भाद्रपद कृष्ण पक्ष**

2 सितम्बर (बुधवार) – श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्य पाटोत्सव

3 सितम्बर (गुरुवार) – श्रीकृष्ण चरण चिह्न युक्त गोबर्धन शिला के दर्शन, श्रीराधादामोदर, वृन्दावन

4 सितम्बर (शुक्रवार) – जन्माष्टमी रात्रि आरती के बाद जन्म से पहले श्रीकृष्ण कथा, जन्माभिषेक, 2:00 बजे मंगला, 5:00 बजे तक दर्शन, मंगला केवल आज ही के दिन, श्री बिहारी जी, वृन्दावन

5 सितम्बर (शनिवार) – नन्दोत्सव, नन्दगाँव, उत्सव श्रीराधावल्लभ, लट्ठा का मेला, रंगीजी, वृन्दावन

8 सितम्बर (मंगलवार) – श्रीवृन्दावनदेवाचार्य पाटोत्सव

10 सितम्बर (गुरुवार) – कुशोत्पाटिनी अमावस्या

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

12 से 26 सितम्बर

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

शरद् ऋतु

(रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
12	शनि	प्रतिपदा	07:46	उ.फा.	12:54	कन्या	06:07	06:24	चन्द्र दर्शन
13	रवि	द्वितीया	07:08	हस्त	13:06	तु.25:30	06:08	06:23	स.सि.अ.सि.यो. 13:06 तक, **वराहजं.**
14	सोम	तृतीया	07:06	चित्रा	13:54	तुला	06:08	06:22	भ.19:25 से हरितालिका तीज, श्री **गणेशोत्सव** चन्द्र दर्शन निषेध
15	मंगल	चतुर्थी	07:44	स्वाति	15:20	तुला	06:08	06:21	भ. 7:44 तक ऋषि पंचमी
16	बुध	पंचमी	08:59	विशाखा	17:22	वृ.10:51	06:09	06:20	स.सि.यो.अ.सि.यो. 17:22 से
17	गुरु	षष्ठी	10:47	अनुराधा	19:53	वृश्चिक	06:09	06:19	सूर्य षष्ठी बल्देव छटि कन्या में सूर्य 7:53 श्री विश्वकर्मा पूजा स.सि.यो. 19:53 तक
18	शुक्र	सप्तमी	13:00	ज्येष्ठा	22:44	ध.22:44	06:10	06:18	भ.13:00 से 26:13 तक सन्तान सप्तमी
19	शनि	अष्टमी	15:26	मूल	25:42	धनु	06:10	06:16	**श्रीराधाष्टमी** व्रत, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रां, स्वामी श्री हरिदास जयन्ती
20	रवि	नवमी	17:51	पू.षा.	28:34	धनु	06:10	06:15	स.सि.यो. 28:34 से, श्रीचंद्र नवमी
21	सोम	दशमी	20:00	उ.षा.	सम्पूर्ण	म .11:12	06:11	06:14	–
22	मंगल	एकादशी	21:43	उ.षा.	07:06	मकर	06:11	06:13	भ. 8:51 से 21:43 तक जल झूलनी एकादशी व्रत सर्वेषां
23	बुध	द्वादशी	22:50	श्रवण	09:08	कु.21:51	06:12	06:12	पंचक प्रारम्भ 21:51 **श्री वामन जयन्ती**, रवि दक्षिण गोले
24	गुरु	त्रयोदशी	23:18	धनिष्ठा	10:34	कुम्भ	06:12	06:11	प्रदोष व्रत
25	शुक्र	चतुर्दशी	23:06	शतभिषा	11:22	मी.29:29	06:13	06:10	भ.23:06 से अनंत चतुर्दशी गणपति विसर्जन
26	शनि	पूर्णिमा	22:18	पू..भा.	11:31	मीन	06:13	06:09	भ.10:42 तक प्रौष्ठपदी पूर्णिमा महालयारम्भ, पूर्णिमा श्राद्ध

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल भाद्रपद शुक्ल पक्ष

14 सितम्बर (सोमवार) – श्री गणेश जी जन्मोत्सव (पत्थरचौथ)

16 सितम्बर (बुधवार) – श्रीजी के मंदिर से चार दिन चाव (सवारी) निकले, श्री राधाबल्लभ जी, वृन्दावन

19 सितम्बर (शनिवार) – राधाष्टमी मेला, बरसाना, भँवरवन परिक्रमा, मेला गरुड़ गोविन्द जी, श्री हरिदास जी जयन्ती सायं सवारी निधिवन जाती है, वृन्दावन

23 सितम्बर (बुधवार) – श्री गोपालाचार्य पाटोत्सव, मटकीफोर डोंगा लीला, बरसाना, श्रीपद्माचार्य पाटोत्सव

26 सितम्बर (शनिवार) – महालयारम्भः, श्राद्ध पूर्णिमा

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

27 सितम्बर से 10 अक्टूबर

आश्विन कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

शरद् ऋतु

(रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
27	रवि	प्रतिपदा	20:58	उ.भा.	11:07	मीन	06:13	06:07	पितरपक्षारम्भ प्रतिपदा श्राद्ध स.सि.यो. 11:07 तक
28	सोम	द्वितीया	19:13	रेवती	10:15	मे.10:15	06:14	06:06	भ. 30:11 पंचक समाप्त 10:15 द्वितीया श्राद्ध
29	मंगल	तृतीया	17:10	अश्विनी	09:03	मेष	06:14	06:05	भ. 17:10 तक तृतीया श्राद्ध चतुर्थी व्रत स.सि.यो.अ.सि.यो. 09:03 तक, चन्द्रोदय 19:43
30	बुध	चतुर्थी	14:55	भरणी पर कृतिका	07:36 30:02	वृ.13:12	06:15	06:04	चतुर्थी श्राद्ध स.सि.यो. 7:36 से
1	गुरु	पंचमी	12:35	रोहिणी	28:26	वृष	06:15	06:03	पंचमी एवं षष्ठी श्राद्ध रोहिणी व्रत
2	शुक्र	षष्ठी	10:15	मृगशिरा	26:54	मि.15:40	06:16	06:02	भ. 10:15 से 21:7 तक सप्तमी श्राद्ध, श्रीगांधी जं0, श्री शास्त्री जं0
3	शनि	सप्तमी पर	07:59	आर्द्रा	25:29	मिथुन	06:16	06:01	अष्टमी श्राद्ध जीवित्पुत्रिका व्रत, कालाष्टमी
0	शनि	अष्टमी	29:51	0	0	0	0	0	अष्टमीक्षय:
4	रवि	नवमी	27:53	पुनर्वसु	24:13	क.18:32	06:17	05:59	नवमी श्राद्ध सौभाग्यवतीनां श्राद्ध स.सि.यो. 24:13 से
5	सोम	दशमी	26:07	पुष्य	23:08	कर्क	06:17	05:58	भ. 15:00 से 26:7 तक दशमी श्राद्ध स.सि.यो. 23:08 तक
6	मंगल	एकादशी	24:34	अश्लेषा	22:17	सिं.22:17	06:18	05:57	इंद्रिरा एकादशी व्रत एकादशी श्राद्ध स.सि.यो. 22:17 तक
7	बुध	द्वादशी	23:16	मधा	21:40	सिंह	06:18	05:56	निम्बार्क एकादशी व्रत, द्वादशी सन्यासीनां श्राद्ध
8	गुरु	त्रयोदशी	22:15	पू.फा.	21:19	क.27:19	06:19	05:55	भ. 22:15 से त्रयोदशी श्राद्ध प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री
9	शुक्र	चतुर्दशी	21:35	उ.फा.	21:19	कन्या	06:19	05:54	भ. 9:55 तक चतुर्दशी श्राद्ध, दुर्मरणश्राद्धं
10	शनि	अमावस्या	21:19	हस्त	21:42	कन्या	06:20	05:53	सर्वपितृ अमावस्या श्राद्धं भूले बिछडों का श्राद्ध, पितृ विसर्जन

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल आश्विन कृष्ण पक्ष

27 सितम्बर (रविवार) – प्रतिपदा श्राद्ध, पितृपक्ष आरम्भ

28 सितम्बर (सोमवार) – सांझी का कार्यक्रम, श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी निज गुरु श्रीबालकृष्णशरण देवाचार्य जी की श्राद्ध तिथि

2 अक्टूबर (शुक्रवार) – श्रीघनश्यामशरण देवाचार्य पाटोत्सव

7 अक्टूबर (बुधवार) – रंगों की सांझी प्रारम्भ, श्री राधावल्लभ जी, वृन्दावन

10 अक्टूबर (शनिवार) – सांझी पूर्ण, पितृ विसर्जन

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

11 से 26 अक्टूबर

आश्विन शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

शरद ऋतु (रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
11	रवि	प्रतिपदा	21:30	चित्रा	22:32	तु.10:07	06:20	05:52	**शारदीय नवरात्रारम्भ** माता महाश्राद्ध, श्रीअग्रसेन जयन्ती
12	सोम	द्वितीया	22:13	स्वाति	23:51	तुला	06:21	05:51	चन्द्र दर्शन
13	मंगल	तृतीया	23:27	विशाखा	25:42	वृ.19:14	06:21	05:50	सिन्दूर तृतीया
14	बुध	चतुर्थी	25:13	अनुराधा	28:02	वृश्चिक	06:22	05:49	भ. 12:20 से 25:13 तक शुक्रास्त पश्चिम में 23:15 स.सि.अ.सि.यो. 28:00 तक
15	गुरु	पंचमी	27:25	ज्येष्ठा	सम्पूर्ण	वृश्चिक	06:23	05:48	–
16	शुक्र	षष्ठी	29:54	ज्येष्ठा	06:47	ध.06:47	06:23	05:47	सरस्वती आवाहनं
17	शनि	सप्तमी	सम्पूर्ण	मूल	09:46	धनु	06:24	05:46	सरस्वती पूजन तुला में सूर्य 19:52
18	रवि	सप्तमी	08:28	पू.षा.	12:48	म.19:30	06:24	05:45	भ. 8:28 से 21:39 तक स.सि.यो. 12:48 से
19	सोम	अष्टमी	10:51	उ.षा.	15:38	मकर	06:25	05:44	**श्री दुर्गाष्टमी पूजा** स.सि.यो. 15:38 से
20	मंगल	नवमी	12:50	श्रवण	18:01	मकर	06:25	05:43	महानवमी एवं **विजया दशमी**, शमीपूजा नीलकंठ दर्शन, नवरात्र सम्पन्न
21	बुध	दशमी	14:11	धनिष्ठा	19:47	कु.06:54	06:26	05:42	भ. 26:29 से पंचक प्रा0 6:54, श्रीमाधवाचार्य जयंती
22	गुरु	एकादशी	14:48	शतभिषा	20:48	कुम्भ	06:26	05:41	भ. 14:48 तक पापांकुशा एकादशी व्रत सर्वेषां
23	शुक्र	द्वादशी	14:35	पू.भा.	21:02	मी.14:59	06:27	05:40	प्रदोष व्रत हेमन्त ऋतु प्रारम्भ
24	शनि	त्रयोदशी	13:36	उ.भा.	20:31	मीन	06:27	05:40	–
25	रवि	चतुर्दशी	11:35	रेवती	19:21	मे.19:21	06:28	05:39	भ. 11:55 से 22:48 तक पंचक समाप्त 19:21 सत्यव्रत, शरद पूर्णिमा स.सि.यो. 19:21 से, कोजागरी व्रत
26	सोम	पूर्णिमा	09:41	अश्विनी	17:40	मेष	06:28	05:38	पूर्णिमा, बाल्मीक जयन्ती, भक्त मीराबाई जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **आश्विन शुक्ल पक्ष**

11 अक्टूबर (रविवार) – **नवरात्रारम्भ, अग्रसेन जयंती**

13 अक्टूबर (मंगलवार) – **आदिवाणीकार युगलशतक निर्माता श्रीभट्टदेवाचार्य जी महाराज का पाटोत्सव**

20 अक्टूबर (मंगलवार) – **विजयादशमी, दशहरा मेला, रावण दहन**

22 अक्टूबर (गुरुवार) – **छप्पन भोग, श्री द्वारिकाधीश जी, मथुरा**

26 अक्टूबर (सोमवार) – **श्री बिहारी जी का मुकुट कटि, काछनी, मुरली धारण, शरद् पूर्णिमा, महारास, वृन्दावन, ब्रज परिक्रमा एवं कार्तिक स्नान प्रारम्भ**

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

27 अक्टूबर से 9 नवम्बर

कार्तिक कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

हेमन्त ऋतु (रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
27	मंगल	प्रतिपदा परं	07:01	भरणी	15:38	वृ.21:05	06:30	05:37	स.सि.यो. 15:38 से
0	मंगल	द्वितीया	28:06	0	0	0	0	0	द्वितीयाक्षय:
28	बुध	तृतीया	25:06	कृतिका	13:25	वृष	06:30	05:36	भ. 14:36 से 25:6 तक शुक्रदय पूर्वस्यां 22:10 रोहिणी व्रत स.सि.यो.
29	गुरु	चतुर्थी	22:10	रोहिणी	11:11	मि.22:07	06:31	05:35	**करवाचौथ व्रत** चन्द्रोदय 20:15
30	शुक्र	पंचमी	19:24	मृगशिरा	09:03	मिथुन	06:32	05:34	-
31	शनि	षष्ठी	16:57	आर्द्रा परं पुनर्वसु	07:11 29:39	क.24:02	06:33	05:33	भ. 16:57 से 27:54 तक
1	रवि	सप्तमी	14:51	पुष्य	28:30	कर्क	06:34	05:32	**अहोई अष्टमी** व्रत चन्द्रोदय 25:27 श्री राधाकुण्ड स्नान स.सि.यो. 28:30 तक
2	सोम	अष्टमी	13:10	अश्लेषा	27:45	सिं.27:45	06:34	05:32	-
3	मंगल	नवमी	11:54	मघा	27:26	सिंह	06:36	05:31	भ. 23:28 से
4	बुध	दशमी	11:03	पू.फा.	27:29	सिंह	06:36	05:30	भ. 11:03 तक
5	गुरु	एकादशी	10:35	उ.फा.	27:55	क.09:35	06:36	05:30	रमा एकादशी व्रत (सर्वेषां)
6	शुक्र	द्वादशी	10:30	हस्त	28:42	कन्या	06:37	05:29	प्रदोष व्रत **धन त्रयोदशी** यम दीपदान **श्री धनवन्तरी जयन्ती**
7	शनि	त्रयोदशी	10:47	चित्रा	29:52	तु.17:17	06:38	05:29	भ. 10:47 से 23:7 तक श्री **हनुमतजन्मोत्सव** मास शिवरात्री स.सि.यो. 29:52 से
8	रवि	चतुर्दशी	11:27	स्वाति	सम्पूर्ण	तुला	06:38	05:28	नरक चतुर्दशी, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपावली, पितृकार्ये अमावस्या
9	सोम	अमावस्या	12:31	स्वाति	07:23	वृ.26:49	06:39	05:28	सोमवती अमावस्या

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **कार्तिक कृष्ण पक्ष**

29 अक्टूबर (गुरुवार) - **करवाचौथ व्रत**

1 नवम्बर (रविवार) - **अहोई अष्टमी, अर्द्धरात्रि दाम्पत्य स्नान, राधाकुण्ड, गोवर्धन**

6 नवम्बर (शुक्रवार) - **श्रीमाधवभट्टाचार्य पाटोत्सव**

7 नवम्बर (शनिवार) - **श्रीमहावाणीकार रसिकराज राजेश्वर श्रीहरिव्यास देवाचार्य पाटोत्सव**

8 नवम्बर (रविवार) - **महालक्ष्मी पूजन, गोकरण जागरण, श्रीजी चौपड़ खेलें, श्री द्वारिकाधीश जी, मथुरा**

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

10 से 24 नवम्बर

कार्तिक शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

हेमन्त ऋतु **(रवि दक्षिणायने)**

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
10	मंगल	प्रतिपदा	14:00	विशाखा	09:18	वृश्चिक	06:39	05:27	**अन्नकूट, गोवर्धन पूजा,** चंद्र दर्शन
11	बुध	द्वितीया	15:53	अनुराधा	11:37	वृश्चिक	06:40	05:27	**भाई दूज, यम द्वितीया,** चित्रगुप्त विश्वकर्मा पूजा स.सि.अ.सि.यो. 11:37 तक
12	गुरु	तृतीया	18:09	ज्येष्ठा	14:18	ध.14:18	06:41	05:26	–
13	शुक्र	चतुर्थी	20:42	मूल	17:16	धनु	05:42	05:26	भ. 7:25 से 20:42 तक छटि पर्व प्रारम्भ
14	शनि	पंचमी	23:23	पू.षा.	20:23	म.27:9	06:42	05:25	सौभाग्य पंचमी
15	रवि	षष्ठी	26:01	उ.षा.	23:28	मकर	06:43	05:24	सूर्यषष्ठी सायं सूर्य अर्घ्य स.सि.यो. 23:28 तक
16	सोम	सप्तमी	28:19	श्रवण	26:16	मकर	06:44	05:24	भ. 28:19 से, वृश्चिक में सूर्य 19:42 स.सि.यो. 26:16 तक
17	मंगल	अष्टमी	30:05	धनिष्ठा	28:34	कुम्भ	06:45	05:23	भ. 17:12 तक पंचक प्रा0 15:25 **गोपाष्टमी**
18	बुध	नवमी	सम्पूर्ण	शतभिषा	30:10	कु.15:25	06:46	05:23	**अक्षय नवमी** जुगल जोड़ी परिक्रमा वृन्दावन मथुरा गरूण गोविन्द
19	गुरु	नवमी	07:06	पू.भा.	सम्पूर्ण	मी.24:45	06:47	05:23	–
20	शुक्र	दशमी	07:15	पू.भा.	06:54	मीन	06:47	05:22	भ.18:53 से 30:31 तक देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त), भीष्म पंचक प्रा., तीन वन परिक्रमा, तुलसीशालिग्राम विवाह
0	शुक्र	एकादशी	30:31	0	0	0	0	0	एकादशीक्षय:
21	शनि	द्वादशी	28:56	उ.भा. परं रेवती	06:50 29:54	मे.29:54	06:48	05:22	पंचक समाप्त 29:54 देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत (निम्बार्क)
22	रवि	त्रयोदशी	26:37	अश्विनी	28:15	मेष	06:49	05:22	प्रदोष व्रत स.सि.यो. 28:15 तक
23	सोम	चतुर्दशी	23:42	भरणी	26:01	मेष	06:50	05:22	भ. 23:42 से बैकुंठ चतुर्दशी
24	मंगल	पूर्णिमा	20:22	कृतिका	23:24	वृ.7:22	06:50	05:21	भ. 10:02 तक कार्तिकी पूर्णिमा स्नान पूर्ण भीष्म पंचक समा0 स.सि.यो. 23:24 तक **श्रीनिम्बार्काचार्य जयन्ती**

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **कार्तिक शुक्ल पक्ष**

10 नवम्बर (मंगलवार) – गोवर्धन पूजा, अन्नकूट महोत्सव, निम्बार्क तीर्थ, श्रीजी चांदी की छड़ी में विराजें, वृन्दावन

15 नवम्बर (रविवार) – श्रीजी हाथ में छड़ी लें, गोचारण पोशाक में नटवर वेश, श्रीराधाबल्लभ जी, वृ.

18 नवम्बर (बुधवार) – जुगल जोड़ी परिक्रमा, वृन्दावन-मथुरा, श्री सर्वेश्वर प्रभु का प्राकट्य दिवस, पुष्कर

20 नवम्बर (शुक्रवार) – कंश वध लीला, मथुरा

21 नवम्बर (शनिवार) – तीन वन परिक्रमा, वृन्दावन-मथुरा, तुलसी विवाह

22 नवम्बर (रविवार) – श्री राधाबल्लभ जी का पाटोत्सव, वृन्दावन

24 नवम्बर (मंगलवार) – आद्याचार्य श्री निम्बार्क भगवान् का 5120वाँ जयन्ती महो., श्रीनिम्बार्ककोट, वृन्दावन

श्रीसम्वत् 2083 | शाके 1948 | सन् 2026 ई.

25 नवम्बर से 8 दिसम्बर

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

हेमन्त ऋतु | (रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
25	बुध	प्रतिपदा	16:50	रोहिणी	20:35	वृष	06:51	05:21	रोहिणी व्रत स.सि.यो. श्री हरिराम व्यास महोत्सव प्रा0 किशोरवन वृन्दावन
26	गुरु	द्वितीया	13:15	मृगशिरा	17:46	मि.7:10	06:52	05:21	भ.23:31 से
27	शुक्र	तृतीया परं	09:48	आर्द्रा	15:08	मिथुन	06:53	05:21	भ. 9:48 तक चतुर्थी व्रत स.सि.यो. 15:01 से, चंद्रोदय 20:15
0	शुक्र	चतुर्थी	30:39	0	0	0	0	0	चतुर्थीक्षय:
28	शनि	पंचमी	27:57	पुनर्वसु	12:49	क.7:24	06:53	05:21	**श्री व्यास पंचमी**
29	रवि	षष्ठी	25:46	पुष्य	10:59	कर्क	06:54	05:21	भ. 25:46 से स.सि.यो. 10:59 तक
30	सोम	सप्तमी	24:11	अश्लेषा	09:41	सिं.9:41	06:55	05:21	भ. 12:58 तक
1	मंगल	अष्टमी	23:13	मघा	09:00	सिंह	06:56	05:21	महाकाल भैरवाष्टमी
2	बुध	नवमी	22:51	पु.फा.	08:54	क.15:01	06:56	05:21	–
3	गुरु	दशमी	23:03	उ.फा.	09:23	कन्या	06:57	05:21	भ.10:57 से 23:3 तक
4	शुक्र	एकादशी	23:44	हस्त	10:22	तु.23:05	06:58	05:21	उत्तपत्ति एकादशी व्रत (सर्वेषां)
5	शनि	द्वादशी	24:51	चित्रा	11:48	तुला	06:59	05:21	स.सि.यो. 11:48 से
6	रवि	त्रयोदशी	26:21	स्वाति	13:37	तुला	06:59	05:21	भ. 26:21 तक, प्रदोष व्रत
7	सोम	चतुर्दशी	28:12	विशाखा	15:47	तु.09:15	07:00	05:21	भ. 15:16 स.सि.यो. 15:47 से
8	मंगल	अमावस्या	30:21	अनुराधा	18:15	वृश्चिक	07:01	05:21	अमावस्या सर्वकार्ये

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

तुलसी असमय के सखा, धीरज धर्म विवेक।
साहित साहस सत्यव्रत, राम भरोसो एक।।
आवत ही हरषै नही, नैनन नहि सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइये, कोई कचन वरषै मेह।।
तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण यह मंत्र है, तज दै वचन कठोर।।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जल तक घट में प्राण।।
सचिव वैद गुरु तीन जौ, प्रिय बालहि भय आस।
राज धर्म तन तीन कर, होई बेगहि नास।।
चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु नहि चाहिये, वे साहन के साह।।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026 ई.

9 से 23 दिसम्बर

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

हेमन्त ऋतु (रवि दक्षिणायने)

ता	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
9	बुध	प्रतिपदा	सम्पूर्ण	ज्येष्ठा	21:00	ध.21:00	07:01	05:21	–
10	गुरु	प्रतिपदा	08:45	मूल	23:57	धनु	07:02	05:21	चंद्र दर्शन
11	शुक्र	द्वितीया	11:22	पू.षा.	27:03	धनु	07:03	05:22	–
12	शनि	तृतीया	14:06	उ.षा.	30:11	म.9:50	07:03	05:22	भ.27:26 से स.सि.यो. 30:11 से
13	रवि	चतुर्थी	16:47	श्रवण	सम्पूर्ण	मकर	07:04	05:22	भ. 16:47 तक श्री वैनायकी चतुर्थी व्रत
14	सोम	पंचमी	19:15	श्रवण	09:11	कु.22:31	07:05	05:22	पंचक प्रां0 22:31 **श्री विहार पंचमी,** श्रीरामजानकी विवाहोत्सव स.सि.यो. 9:11 तक
15	मंगल	षष्ठी	21:19	धनिष्ठा	11:52	कुम्भ	07:06	05:23	स्कन्ध षष्ठी
16	बुध	सप्तमी	22:45	शतभिषा	14:02	कुम्भ	07:06	05:23	भ. 22:45 धनु में सूर्य 10:25, खरमास प्रा.
17	गुरु	अष्टमी	23:25	पू.भा.	15:30	मी.9:8	07:07	05:24	भ. 11:5 तक
18	शुक्र	नवमी	23:14	उ..भा.	16:09	मीन	07:08	05:24	स.सि.यो.अ.सि.यो. 16:09 से
19	शनि	दशमी	22:19	रेवती	15:57	मे.15:57	07:08	05:24	पंचक समाप्त 15:57
20	रवि	एकादशी	20:14	अश्विनी	14:55	मेष	07:09	05:25	भ.9:11 से 20:14 तक मोक्षदा एकादशी व्रत (सर्वेषां) स.सि.यो. 14:55 तक, श्रीगीता जयंती
21	सोम	द्वादशी	17:36	भरणी	13:08	वृ.18:32	07:09	05:25	प्रदोष व्रत, शिशिर ऋतु प्रा0
22	मंगल	त्रयोदशी	14:23	कृतिका	10:45	वृष	07:10	05:26	रोहिणी व्रत स.सि.यो. 10:45
23	बुध	चतुर्दशी परं	10:47	रोहिणी मृगशिरा	07:56 28:52	मि.18:24	07:10	05:26	भ. 10:47 से 20:52 तक पूर्णिमा व्रत स.सि.यो. 28:52 तक
0	बुध	पूर्णिमा	30:57	0	0	0	0	0	पूर्णिमाक्षय:

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

॥ पारद शिवलिंग ॥

पारद शिवलिंग घर एवं प्रतिष्ठान में मगंलमय एवं सुखदायी है। पारइ शिवलिंग को सोमवार प्रदोष या किसी श्रेष्ठ मुहूर्त वाले दिन यथा विधि प्रतिष्ठित कराके घर में देवस्थान में स्थापित करना चाहिय। यादि संभव हो तो प्रति प्रदोश , मास शिवरात्रि, श्रावण के सोमवार एवं संक्रन्ति वाले दिन पारद शिवलिंग के विशेष आराधना करें। ऐसा माना जाता हे कि पारद शिव लिंग शनि से उत्पन्न दोषों एवं कालसर्प योग के दोष में कमी लाता है। पारद शिवलिंग पूजन का भी कोई विलोम असर नहीं है।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2026-27 ई.

24 दिस. से 7 जनवरी

पौष कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

शिशिर ऋतु (रवि दक्षिणायने)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
24	गुरु	प्रतिपदा	27:06	आर्द्रा	25:46	मिथुन	07:11	05:27	स.सि.यो. 25:46 से
25	शुक्र	द्वितीया	23:25	पुनर्वसु	22:49	क.17:33	07:11	05:27	स.सि.यो. 22:49 तक
26	शनि	तृतीया	20:04	पुष्य	20:12	कर्क	07:12	05:29	भ.09:44 से 20:14 तक चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 20:16
27	रवि	चतुर्थी	17:17	अश्लेषा	18:04	सि.18:4	07:12	05:29	–
28	सोम	पंचमी	14:57	मघा	16:32	सिंह	07:13	05:30	–
29	मंगल	षष्ठी	13:24	पु.फा.	15:42	क.21:40	07:13	05:30	भ. 13:24 से 25:00 तक
30	बुध	सप्तमी	12:36	उ.फा.	15:36	कन्या	07:13	05:31	कालाष्टमी व्रत स.सि.यो. 15:36 से
31	गुरु	अष्टमी	13:32	हस्त	16:13	तु.28:51	07:13	05:31	–
1	शुक्र	नवमी	13:09	चित्रा	17:29	तुला	07:13	05:32	भ. 25:46 से, ईशवी नववर्ष प्रा0
2	शनि	दशमी	14:24	स्वाति	19:19	तुला	07:14	05:33	भ. 14::24 तक स.सि.यो. 19:19 तक
3	रवि	एकादशी	16:08	विशाखा	21:36	वृ.15:2	07:14	05:33	सफला एकादशी व्रत (सर्वेषां)
4	सोम	द्वादशी	18:15	अनुराधा	24:14	वृश्चिक	07:14	05:34	स.सि.यो. 24:14 तक
5	मंगल	त्रयोदशी	20:39	ज्येष्ठा	27:06	ध.27:6	07:14	05:34	भ.20:39 से प्रदोष व्रत मास शिवरात्री, छप्पन भोग गरूड़ गोविन्द
6	बुध	चतुर्दशी	23:14	मूल	30:07	धनु	07:15	05:35	भ. 9:56 तक श्री शशिमोहनदास जी आविर्भाव जयन्ती
7	गुरु	अमावस्या	25:53	पू.षा.	सम्पूर्ण	धनु	07:15	05:36	अमावस्या

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल पौष कृष्ण पक्ष

॥ स्फटिक श्री यंत्र ॥

स्फटिक् शान्ति का प्रतीक है एवं स्फटिक् श्री यंत्र शानित एवं समृद्धि का अपने घर एवं प्रतिष्ठसप में चांदी की कटोरी में शुक्रवार या किसी श्रेष्ठ मुहूर्त में पीले अथवा लाल रेशमी वस्त्र में उपरोक्तश्री यंत्र की स्थापना करने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। प्रति शुक्रवार विशिष्ट भोग लगावें एवं नित्य प्रति अगरबत्ती दिखावें। स्फटिक् श्रीयंत्र का कोई भी विलोम असर नहीं है।

श्रीसम्वत् 2083 | शाके 1948 | सन् 2027 ई.

8 से 22 जनवरी | **पौष शुक्ल पक्ष** | 27.35N 77.42E VRINDABAN

शिशिर ऋतु | (रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
8	शुक्र	प्रतिपदा	28:33	पू.षा.	09:12	म.15:58	07:15	05:37	–
9	शनि	द्वितीया	31:07	उ.षा.	12:15	मकर	07:15	05:38	**खिचड़ी महोत्सव प्रा0** वृन्दावन स.सि.यो. 12:15 से, चंद्र दर्शन
10	रवि	तृतीया	सम्पूर्ण	श्रवण	15:11	कु.28:32	07:15	05:39	पंचक प्रारम्भ 28:32
11	सोम	तृतीया	09:28	धनिष्ठा	17:53	कुम्भ	07:15	05:39	भ.22:28 से
12	मंगल	चतुर्थी	11:29	शतभिषा	20:13	कुम्भ	07:15	05:40	भ. 11:29 तक
13	बुध	पंचमी	13:01	पू.भा.	22:04	मी.15:36	07:15	05:41	लोहड़ी पर्व
14	गुरु	षष्ठी	13:58	उ.भा.	23:18	मीन	07:15	05:41	मकर में सूर्य 21:10 संक्रान्ति खरमास समाप्त स.सि.यो. 23:18 से
15	शुक्र	सप्तमी	14:13	रेवती	23:50	मे.23:50	07:15	05:42	भ14:13 से 25:57 तक पंचक समाप्त, स.सि.यो.अ.सि.यो. 23:50
16	शनि	अष्टमी	13:42	अश्विनी	23:38	मेष	07:15	05:43	–
17	रवि	नवमी	12:26	भरणी	22:41	वृ.28:17	07:14	05:44	–
18	सोम	दशमी	10:26	कृतिका	21:04	वृष	07:14	05:45	भ. 21:7 से पुत्रदा एकादशी स्मार्त स.सि.यो. 21:4 से
19	मंगल	एकादशी परं	07:49	रोहिणी	18:53	मि.29:34	07:14	05:46	पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव), त्रिस्पर्शा
0	मंगल	द्वादशी	28:41	0	0	0	0	0	द्वादशीक्षय:
20	बुध	त्रयोदशी	25:11	मृगशिरा	16:16	मिथुन	07:14	05:46	प्रदोष व्रत स.सि.यो. 16:16 तक
21	गुरु	चतुर्दशी	21:29	आर्द्रा	13:23	क.29:09	07:14	05:47	भ. 21:29 से स.सि.यो. 13:23 से
22	शुक्र	पूर्णिमा	17:46	पुनर्वसु	10:24	कर्क	07:13	05:48	भ. 7:38 तक सत्यव्रत, पौषी पूर्णिमा, स.सि.यो. 10:24 तक

विशेष उत्सव | ☆ स.का. समाप्ति काल | पौष शुक्ल पक्ष

हनुमान जी की शक्ति और नवग्रह

भगवान भास्कर बोले, प्रिय हनुमान! मैं सभी ग्रहों का स्वामी होने के नाते तुम्हें वरदान देता हूँ कि जिस प्राणी पर तुम्हारी दृष्टि अनुकूल होगी उसके कोई भी ग्रह प्रतिकूल नहीं होंगे और मैं भी नहीं। किसी भी ग्रह की शान्ति या तुष्टि पुष्टि के लिए साधक को सर्वप्रथम हनुमान गायत्री या हनुमान जी के किसी भी मंत्र का सवा लाख जप करना चाहिए। ग्रह कितना भी प्रतिकूल क्यों न हो उसमें सौम्यता अवश्य आयेगी। **"ॐ हनुमते नम: आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्, लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्। ॐ हनुमते नम:"** मंत्र का नित्य जप 12 मंगलवार तक 12-12 माला जप करें। इसे करने से सभी प्रकार की विपत्तियों का निवारण होगा।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2027 ई.

23 जन. से 6 फरवरी

माघ कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

शिशिर ऋतु

(रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
23	शनि	प्रतिपदा	14:12	पुष्य	7:30	सि.28:52	07:13	05:49	-
				अश्लेषा	28:52				
24	रवि	द्वितीया	10:57	मघा	26:40	सिंह	07:13	05:50	भ.21:33 से
25	सोम	तृतीया पर	08:10	पु.फा.	25:02	क.30:48	07:12	05:51	भ. 8:10 तक संकटी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 21:13
0	सोम	चतुर्थी	30:00	0	0	0	0	0	चतुर्थीक्षय:
26	मंगल	पंचमी	28:33	उ.फा.	24:6	कन्या	07:11	05:51	भारतीय **गणतंत्र दिवस 78 वाँ**
27	बुध	षष्ठी	27:53	हस्त	23:55	कन्या	07:11	05:52	भ. 27:53 से स.सि.यो. 23:55 तक
28	गुरु	सप्तमी	28:02	चित्रा	24:32	तु.12:13	07:11	05:53	भ. 15:57 तक, **श्रीरामानन्दाचार्य जं0**
29	शुक्र	अष्टमी	28:57	स्वाति	25:53	तुला	07:11	05:54	कालाष्टमी व्रत
30	शनि	नवमी	30:33	विशाखा	27:55	वृ. 21:25	07:10	05:54	-
31	रवि	दशमी	सम्पूर्ण	अनुराधा	30:27	वृश्चिक	07:10	05:55	भ. 19:37 से
1	सोम	दशमी	08:41	ज्येष्ठा	सम्पूर्ण	वृश्चिक	07:09	05:56	भ. 08:41 तक
2	मंगल	एकादशी	11:10	ज्येष्ठा	09:21	ध.9:21	07:09	05:57	षट्तिला एकादशी व्रत (सर्वेषां)
3	बुध	द्वादशी	13:50	मूल	12:25	धनु	07:08	05:58	प्रदोष व्रत
4	गुरु	त्रयोदशी	16:31	पू.षा.	15:31	म.22:16	07:08	05:59	भ. 16:31 से 29:48 तक मास शिवरात्रि
5	शुक्र	चतुर्दशी	19:05	उ.षा.	18:31	मकर	07:07	05:59	स.सि.यो. 18:31 से
6	शनि	अमावस्या	21:25	श्रवण	21:18	मकर	07:07	06:00	शनैश्चरी मौनी अमावस्या स.सि.यो. 21:18 तक

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **माघ कृष्ण पक्ष**

30 जनवरी (शनिवार) - **श्रीगोपेश्वरशरण देवाचार्य पाटोत्सव**

3 फरवरी (गुरुवार) - **तिल का भोग, दाल भक्षण, श्रीनाथ जी, श्रीसुदर्शन चक्रावतार**

श्री भगवान् निम्बार्काचार्य का 20वाँ पाटोत्सव, पं0 श्री जगन्नाथ प्रसाद भक्तमाली जी का 128वाँ जन्म जयन्ती महोत्सव, वृन्दावन

6 फरवरी (शनिवार) - **श्री दाऊजी की झांकी, श्री राधाबल्लभ जी, वृन्दावन, श्री बलभद्र भट्टाचार्य पाटोत्सव**

श्रीसम्वत् 2083 **शाके 1948** **सन् 2027 ई.**

7 से 20 फरवरी **माघ शुक्ल पक्ष** 27.35N 77.42E VRINDABAN

शिशिर ऋतु **(रवि उत्तरायने)**

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
7	रवि	प्रतिपदा	23:27	धनिष्ठा	23:48	कु.10:33	07:06	06:01	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, पंचक प्रा0 10:33
8	सोम	द्वितीया	25:06	शतभिषा	25:56	कुम्भ	07:06	06:02	चंद्र दर्शन
9	मंगल	तृतीया	26:19	पू.भा.	27:39	मी.21:13	07:05	06:02	गौरी तृतीया स.सि.यो. 27:39 से
10	बुध	चतुर्थी	27:04	उ.भा.	28:55	मीन	07:05	06:03	भ.14:41 से 27:4 तक वरद् चतुर्थी
11	गुरु	पंचमी	27:18	रेवती	29:41	मे.29:41	07:04	06:04	पंचक समा0 29:41 **वसंत पंचमी**, सरस्वती जयंती फाग महोत्सव प्रा0 स.सि.यो. 7:14 से
12	शुक्र	षष्ठी	26:59	अश्विनी	29:55	मेष	07:03	06:04	स.सि.यो. 29:55 तक, मंदार षष्ठी
13	शनि	सप्तमी	26:06	भरणी	29:37	मेष	07:02	06:05	भ. 26:06 से कुम्भ में सूर्य 10:10, अचला सप्तमी
14	रवि	अष्टमी	24:40	कृतिका	28:46	वृ.11:24	07:01	06:06	भ. 13:23 तक
15	सोम	नवमी	22:44	रोहिणी	27:25	वृष	07:00	06:07	रोहिणी व्रत स.सि.यो.अ.सि.यो. 27:25 से
16	मंगल	दशमी	20:19	मृगशिरा	25:37	मि.14:31	06:59	06:08	भ. 30:55 से **ठा. दामोदर प्राकट्योत्सव वृन्दावन**
17	बुध	एकादशी	17:31	आर्द्रा	23:28	मिथुन	06:58	06:08	भ. 17:31 तक जया एकादशी व्रत सर्वेषां
18	गुरु	द्वादशी	14:27	पुनर्वसु	21:05	क.15:41	06:58	06:09	प्रदोष व्रत, वसन्त ऋतु प्रा0 स.सि.यो.अ.सि.यो. 21:05 से
19	शुक्र	त्रयोदशी	11:14	पुष्य	18:35	कर्क	06:57	06:09	–
20	शनि	चतुर्दशी	07:59	अश्लेषा	16:07	सि.16:07	06:56	06:10	भ. 7:59 से 18: 26 तक माघी पूर्णिमा,
–	–	परं	–	–	–	–	–	–	श्री ललिता जयन्ती
0	शनि	पूर्णिमा	28:53	0	0	0	0	0	पूर्णिमाक्षय:

विशेष उत्सव ☆ **स.का. समाप्ति काल** **माघ शुक्ल पक्ष**

7 फरवरी (रविवार) – मोहन भोग, टोपा, दुशाला के दर्शन, श्री राधाबल्लभ जी, वृन्दावन

11 फरवरी (गुरुवार) – बसन्ती पोशाक धारण, शृंगार आरती के समय बसन्त उत्सव, श्री राधाबल्लभ जी, बसन्ती कमरा के दर्शन, शाह जी मन्दिर, वृन्दावन, वंसत पंचमी (होरी डण्डा रोपण)

12 फरवरी (शुक्रवार) – भाष्यकार श्रीनिवासाचार्य एवं श्रीदेवाचार्य पाटोत्सव

16 फरवरी (मंगलवार) – ठा. श्री राधादामोदर प्राकट्योत्सव, वृन्दावन

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2027 ई.

21 फर. से 8 मार्च

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वसन्त ऋतु (रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
21	रवि	प्रतिपदा	26:03	मघा	13:50	सिंह	06:55	06:11	–
22	सोम	द्वितीया	23:38	पू.फा.	11:54	क.17:32	06:54	06:11	–
23	मंगल	तृतीया	21:48	उ.फा.	10:27	कन्या	06:53	06:12	भ.10:43 से 21:48 तक
24	बुध	चतुर्थी	20:40	हस्त	09:38	तु.21:35	06:52	06:13	चतुर्थी व्रत स.सि.यो. 9:38 तक, चंद्रोदय 21:57
25	गुरु	पंचमी	20:17	चित्रा	09:32	तुला	06:51	06:14	माँ यशोदा जयन्ती
26	शुक्र	षष्ठी	20:42	स्वाति	10:13	वृ.29:18	06:50	06:14	भ. 20:42 से
27	शनि	सप्तमी	21:54	विशाखा	11:39	वृश्चिक	06:50	06:15	भ. 9:18 तक
28	रवि	अष्टमी	23:46	अनुराधा	13:46	वृश्चिक	06:49	06:16	कालाष्टमी
1	सोम	नवमी	26:06	ज्येष्ठा	16:26	ध.16:26	06:48	06:17	–
2	मंगल	दशमी	28:44	मूल	19:26	धनु	06:47	06:17	भ. 15:25 से 28:44 तक
3	बुध	एकादशी	सम्पूर्ण	पू.षा.	22:33	म.29:29	06:46	06:18	–
4	गुरु	एकादशी	07:24	उ.षा.	25:35	मकर	06:45	06:18	विजया एकादशी व्रत सर्वेषां
5	शुक्र	द्वादशी	09:53	श्रवण	28:20	मकर	06:43	06:18	प्रदोष व्रत स.सि.यो. 28:20 तक
6	शनि	त्रयोदशी	12:03	धनिष्ठा	30:41	कु.17:30	06:42	06:19	भ. 12:3 से 24:54 तक पंचक प्रां0 17:30 महाशिवरात्रि
7	रवि	चतुर्दशी	13:46	शतभिषा	सम्पूर्ण	कुम्भ	06:41	06:20	–
8	सोम	अमावस्या	14:58	शतभिषा	08:34	मी.27:36	06:40	06:20	सोमवती अमावस्या, खप्पर पूजा

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल फाल्गुन कृष्ण पक्ष

जन्मदिन कैसे मनायें?

दीपक ज्ञान का प्रतीक है। दीपक की ज्योति उर्ध्वगामी होती है तथा स्वयं तिल-तिल जलकर अन्धकार में प्रकाश उत्पन्न करता है। ऐसी शुभ ज्योति को जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर बुझाना नहीं चाहिए। हमारी संस्कृति में शुभ अवसर पर दीप जलाना चाहिए। दीपक को बुझाकर अन्धकार की ओर नहीं जाना चाहिए। जितनी उम्र हो उतने ही दीपक जलाकर ॐ, स्वास्तिक या राम लिखें। रोली चावल से पूजा करें तथा जिसका जन्मदिन है उसके तिलक करें। उसके जीवन का प्रत्येक वर्ष प्रकाशवान रहे ऐसी भावना से दीपक जलायें एवं बड़ों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लें।

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2027 ई.

9 से 22 मार्च

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वसन्त ऋतु (रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
9	मंगल	प्रतिपदा	15:40	पू.भा.	09:57	मीन	06:39	06:21	स.सि.यो. 9:57 से, चंद्र दर्शन
10	बुध	द्वितीया	15:52	उ.भा.	10:52	मीन	06:38	06:21	फुलैरादूज
11	गुरु	तृतीया	15:37	रेवती	11:19	मे.11:19	06:37	06:22	भ.27:17 से पंचक स0 11:19 स.सि.यो.
12	शुक्र	चतुर्थी	04:57	अश्विनी	11:12	मेष	06:36	06:22	भ. 14:57 तक स.सि.यो. 11:22 तक
13	शनि	पंचमी	13:54	भरणी	11:02	वृ.16:52	06:35	06:23	–
14	रवि	षष्ठी	12:31	कृतिका	10:23	वृष	06:34	06:23	रोहिणी व्रत
15	सोम	सप्तमी	10:51	रोहिणी	09:25	मि.20:48	06:33	06:24	भ. 10:51 से 21:52 तक मीन सूर्य 7:00 स.सि.अ.सि.यो. 9:25 से, खरमास प्रा0
16	मंगल	अष्टमी	08:54	मृगशिरा	08:12	मिथुन	06:32	06:24	**होलाष्टक प्रा0 लट्ठमार होली बरसाना, श्रीजी मन्दिर लड्डू की होली**
17	बुध	नवमी	06:43	आर्द्रा पुनर्वसु	06:45 29:06	क.23:31	06:31	06:25	**लट्ठमार होली नन्दगाँव**
0	बुध	दशमी	28:21	0	0	0	0	0	दशमीक्षयः
18	गुरु	एकादशी	25:51	पुष्य	27:20	कर्क	06:30	06:25	भ. 15:6 से 25:51 तक आमल की एवं रंगभरनी एकादशी व्रत (स्मार्त), होली प्रारम्भ वृन्दावन
19	शुक्र	द्वादशी	23:17	अश्लेषा	25:31	सिं.25:31	06:29	06:26	आमल की एकादशी व्रत (वैष्णव), गोविन्द द्वादशी
20	शनि	त्रयोदशी	20:45	मघा	23:44	सिंह	06:28	06:26	शनि प्रदोष व्रत
21	रवि	चतुर्दशी	18:21	पू.फा.	22:06	क.27:46	06:27	06:27	भ. 18:21 से 29:17 सत्यव्रत पूर्णिमा **होलिका दहन** स.सि.यो. 22:06 से
22	सोम	पूर्णिमा	16:13	उ.फा.	20:45	कन्या	06:25	06:27	धुलैड़ी पूर्णिमा, श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल **फाल्गुन शुक्ल पक्ष**

9 मार्च (मंगलवार) - **संध्या आरती पर गुलाल लगायें, श्री राधावल्लभ जी, वृन्दावन**

12 मार्च (शुक्रवार) - **श्री विश्वाचार्य पाटोत्सव**

16 मार्च (मंगलवार) - **श्री मथुरेश जी का पाटोत्सव, मथुरा, लड्डुओं की होली, श्रीजी मन्दिर, बरसाना लट्ठमार होली, रंगीली गली, बरसाना**

17 मार्च (बुधवार) - **लट्ठमार होली, नन्दगाँव**

18 मार्च (गुरुवार) - **लट्ठमार होली, जन्मभूमि, मथुरा। रंगहोली प्रारम्भ, वृन्दावन**

21 मार्च (रविवार) - **होलिका दहन भद्रोपरान्त**

22 मार्च (सोमवार) - **चैतन्य महाप्रभु ज., धुलेण्डी, डोलोत्सव-बाँकेबिहारी/राधावल्लभ-वृन्दावन, चतुर्भुज लक्ष्मी जी विवाह, रंगजी मन्दिर, वृन्दावन**

श्रीसम्वत् 2083 शाके 1948 सन् 2027 ई.

23 मार्च से 6 अप्रैल

चैत्र कृष्ण पक्ष

27.35N 77.42E VRINDABAN

वसन्त ऋतु

(रवि उत्तरायणे)

ता.	वार	तिथि	स.का.	नक्षत्र	स.का.	चन्द्र	सूर्यो.	सूर्या.	पर्व विवरण
23	मंगल	प्रतिपदा	14:28	हस्त	19:49	कन्या	06:24	06:28	वसन्तोत्सव: प्रारम्भ, **गणगौर पूजन**
24	बुध	द्वितीया	13:14	चित्रा	19:25	तु.7:37	06:23	06:28	भ. 24:55 से श्री **रंगजी मन्दिरोत्सव वृन्दावन**
25	गुरु	तृतीया	12:37	स्वाति	19:39	तुला	06:22	06:29	भ.12:37 तक, चतुर्थी व्रत, चंद्रोदय 21:41
26	शुक्र	चतुर्थी	12:43	विशाखा	20:35	वृ.14:21	06:21	06:29	स.सि.यो. 20:35 से
27	शनि	पंचमी	13:33	अनुराधा	22:14	वृश्चिक	06:20	06:30	**श्री रंग पंचमी**
28	रवि	षष्ठी	15:04	ज्येष्ठा	24:31	ध.24:31	06:19	06:30	भ. 15:4 से 28:7 तक स.सि.यो. 24:31 से
29	सोम	सप्तमी	17:10	मूल	27:17	धनु	06:18	06:31	**शीतला पूजन** (बासोड़ा)
30	मंगल	अष्टमी	19:39	पू.षा.	सम्पूर्ण	धनु	06:17	06:32	शीतलाष्टमी माता पूजन, कालाष्टमी, **रंगजी रथोत्सव**
31	बुध	नवमी	22:16	पू.षा.	06:20	म.13:6	06:15	06:32	–
1	गुरु	दशमी	24:45	उ.षा.	09:24	मकर	06:14	06:32	भ. 11:30 से 24:45 तक
2	शुक्र	एकादशी	26:51	श्रवण	12:15	कु.25:28	06:13	06:32	पंचक प्रा0 25:28 पापमोचिनी एकादशी व्रत (वैष्णव, वल्लभ) स.सि.यो. 12:15 से
3	शनि	द्वादशी	28:26	धनिष्ठा	14:41	कुम्भ	06:12	06:33	पापमोचिनी एकादशी व्रत निम्बार्क
4	रवि	त्रयोदशी	29:23	शतभिषा	16:32	कुम्भ	06:11	06:33	भ. 29:23 से प्रदोष व्रत
5	सोम	चतुर्दशी	29:40	पू.भा.	17:46	मी.11:28	06:09	06:34	भ. 17:31 तक मास शिवरात्री
6	मंगल	अमावस्या	29:20	उ.भा.	18:22	मीन	06:08	06:34	अमावस्या चान्द्रवर्ष समाप्त स.सि. यो. 18:22 तक श्री रस्तु ।।

विशेष उत्सव ☆ स.का. समाप्ति काल चैत्र कृष्ण पक्ष

23 मार्च (मंगलवार) – **वसन्तोत्सव, गणगौर पूजा**
आचार्यपीठस्थ श्रीराधामाधवजी का फाग महोत्सव
24 मार्च (बुधवार) – **रंगजी ब्रह्मोत्सव प्रारम्भ, वृन्दावन, श्री गांगलभट्टाचार्य पाटोत्सव**
27 मार्च (शनिवार) – **रंगोत्सव, श्री राधाबल्लभ जी, श्री बिहारी जी, वृन्दावन**
30 मार्च (मंगलवार) – **रथोत्सव, श्री रंगजी, वृन्दावन**
3 अप्रैल (शनिवार) – **श्रीश्यामभट्टाचार्य एवं श्रीबालकृष्णशरण देवाचार्य जी का 119वां पाटोत्सव**
6 अप्रैल (मंगलवार) – **चान्द्र सम्वत् सम्पन्न, श्रीरस्तु**

एकादशी

चैत्र	शुक्ल	कामदा	29 मार्च रवि
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी	13 अप्रैल सोम
वैशाख	शुक्ल	मोहिनी	27 अप्रैल सोम
प्र.ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	13 मई बुध
प्र.ज्येष्ठ	शुक्ल	पुरुषोत्तमा	27 मई बुध
द्वि.ज्येष्ठ	कृष्ण	पुरुषोत्तमा	11 जून गुरु
द्वि.ज्येष्ठ	शुक्ल	निर्जला	25 जून गुरु
आषा.	कृष्ण	योगिनी	10 जुलाई शुक्र
आषा.	शुक्ल	देवशयनी	25 जुलाई शनि
श्रावण	कृष्ण	कामिका	9 अगस्त रवि
श्रावण	शुक्ल	पवित्रा	23 अगस्त रवि
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	7 सित. सोम
भाद्रपद	शुक्ल	पद्मा	22 सित. मंगल
आश्वि.	कृष्ण	इन्दिरा	6 अक्टू. मंगल
आश्वि.	शुक्ल	पापांकुशा	22 अक्टू. गुरु
कार्तिक	कृष्ण	रमा	5 नव. गुरु
कार्तिक	शुक्ल	प्रबोधिनी	20 नव. शुक्र
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पन्ना	4 दिस. शुक्र
मार्गशीर्ष	शुक्ल	मोक्षदा	20 दिस. रवि
पौष	कृष्ण	सफला	3 जन. रवि
पौष	शुक्ल	पुत्रदा	19 जन. मंगल
माघ	कृष्ण	षट्तिला	2 फर. मंगल
माघ	शुक्ल	जया	17 फर. बुध
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	4 मार्च गुरु
फाल्गुन	शुक्ल	आमला	18 मार्च गुरु
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	2 अप्रैल शुक्र

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	30 मार्च	सोमवार
वैशाख	कृष्ण	15 अप्रैल	बुधवार
वैशाख	शुक्ल	29 अप्रैल	बुधवार
प्र.ज्येष्ठ	कृष्ण	14 मई	गुरुवार
प्र.ज्येष्ठ	शुक्ल	28 मई	गुरुवार
द्वि.ज्येष्ठ	कृष्ण	12 जून	शुक्रवार
द्वि.ज्येष्ठ	शुक्ल	27 जून	शनिवार
आषाढ़	कृष्ण	12 जुलाई	रविवार
आषाढ़	शुक्ल	26 जुलाई	रविवार
श्रावण	कृष्ण	10 अगस्त	सोमवार
श्रावण	शुक्ल	25 अगस्त	मंगलवार
भाद्रपद	कृष्ण	8 सितम्बर	मंगलवार
भाद्रपद	शुक्ल	24 सितम्बर	गुरुवार
आश्वि.	कृष्ण	8 अक्टूबर	गुरुवार
आश्वि.	शुक्ल	23अक्टूबर	शुक्रवार
कार्तिक	कृष्ण	6 नवम्बर	शुक्रवार
कार्तिक	शुक्ल	22 नवम्बर	रविवार
मार्गशीर्ष	कृष्ण	6 दिसम्बर	रविवार
मार्गशीर्ष	शुक्ल	21 दिसम्बर	सोमवार
पौष	कृष्ण	5 जनवरी	मंगलवार
पौष	शुक्ल	20 जनवरी	बुधवार
माघ	कृष्ण	3 फरवरी	बुधवार
माघ	शुक्ल	18 फरवरी	गुरुवार
फाल्गुन	कृष्ण	5 मार्च	शुक्रवार
फाल्गुन	शुक्ल	20 मार्च	शनिवार
चैत्र	कृष्ण	4 अप्रैल	रविवार
चैत्र	कृष्ण	16 मार्च	गुरुवार

संक्रान्तियाँ

मेष	14 अप्रैल	पुण्यकाल 15:57 तक	तुला	17 अक्टूबर	दिन 13:28 उपरान्त
वृष	15 मई	पुण्यकाल 12:46 तक	वृश्चिक	16 नवम्बर	दिन 13:18 उपरान्त
मिथुन	15 जून	प्रातः 6:27 से	धनु	16 दिसम्बर	सायं 16:49 तक
कर्क	16 जुलाई	दिन 11:40 उपरान्त	मकर	14 जनवरी	पुण्यकाल अग्रिम दिन
सिंह	17 अगस्त	अपरान्ह 12:23 तक	कुम्भ	13 फरवरी	सूर्योदय से 16:34
कन्या	17 सितम्बर	अपरान्ह 14:17 तक	तक		

गणेश चतुर्थी व्रत

वैशाख (2026)	5 अप्रैल	रवि
प्र.ज्येष्ठ	5 मई	मंगल
द्वि.ज्येष्ठ	4 जून	गुरु
आषाढ़	3 जुलाई	शुक्र
श्रावण	2 अगस्त	रवि
श्रावण (वरद्-4)	16 अगस्त	रवि
भाद्रपद (बहुला-4)	31 अगस्त	सोम
भाद्रपद (गणेश ज.)	14 सितम्बर	सोम
आश्विन	29 सितम्बर	मंगल
कार्तिक करवाचौथ	29 अक्टूबर	गुरु
मार्गशीर्ष	27 नवम्बर	शुक्र
मार्गशीर्ष (वैनायकी)	13 दिसम्बर	रवि
पौष	26 दिसम्बर	शनि
माघ सकट चौथ	25 जनवरी	सोम
माघ तिल चतुर्थी	10 फरवरी	बुध
फाल्गुन	14 फरवरी	बुध
चैत्र	25 मार्च	गुरु

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्यजयन्ती (2026)	21 मार्च
श्री रामनवमी जन्मोत्सव	26 मार्च
श्री परशुराम जयन्ती	19 अप्रैल
श्री नृसिंह जयन्ती	30 अप्रैल
श्री कूर्म जयन्ती	1 मई
श्री बौद्धावतार जयन्ती	1 मई
श्री कल्कि जयन्ती	11 अगस्त
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	4 सितम्बर
श्री वराहावतार जयन्ती	1 3 सितम्बर

व्रत की पूर्णिमा

चैत्र (2026)	1 अप्रैल	बुधवार
वैशाख	1 मई	शुक्रवार
प्र.ज्येष्ठ	30 मई	शनिवार
द्वि.ज्येष्ठ	29 जून	सोमवार
आषाढ़	29 जुलाई	बुधवार
श्रावण	27 अगस्त	गुरुवार
भाद्रपद	26 सितम्बर	शनिवार
आश्विन	25 अक्टूबर	रविवार
कार्तिक	24 नवम्बर	मंगलवार
मार्गशीर्ष	23 दिसम्बर	बुधवार
पौष (2027)	22 जनवरी	शुक्रवार
माघ	27 फरवरी	शनिवार
फाल्गुन	29 मार्च	सोमवार

अमावस्याएँ

वैशाख (2026)	17 अप्रैल	शुक्रवार
प्र.ज्येष्ठ	16 मई	शनिवार
द्वि.ज्येष्ठ	15 जून	सोमवार
आषाढ़	14 जुलाई	मंगलवार
श्रावण	12 अगस्त	बुधवार
भाद्रपद	11 सितम्बर	शुक्रवार
आश्विन	14 अक्टूबर	शनिवार
कार्तिक	9 नवम्बर	सोमवार
मार्गशीर्ष	8 दिसम्बर	मंगलवार
पौष (2027)	7 दिसम्बर	गुरुवार
माघ	6 फरवरी	शनिवार
फाल्गुन	8 मार्च	सोमवार
चैत्र	6 अप्रैल	मंगलवार

श्रीगणेश-महालक्ष्मी पूजन

इस वर्ष श्री महालक्ष्मी पूजन (दीपावली) 8 नवम्बर, 2026 (रविवार) में ही मनाया जायेगा। इस दिन स्वाती नक्षत्र वृद्धि के कारण दिन-रात वर्तमान रहेगा। आयुष्मान योग मध्यरात्रौ उपरान्त 3:02 तक रहेगा जिसके बाद सौभाग्य योग जानें। नक्षत्र व वार के संयोग से लुम्बक योग बना है। शुभ नक्षत्र मुहूर्त में दीपावली होना श्रेष्ठ माना गया है।

दीपावली पूजन और दिन के लग्न मुहूर्त्त

इस वर्ष धनु लग्न दिन 9:33 बजे शुरू होकर 11:37 बजे तक शुभ फल प्रदायक रहेगी। मकर लग्न 11:37 बजे से दोपहर 1:21 बजे तक रहेगी जिसमें अमृत का चौघड़िया मुहूर्त दोपहर 12:03 बजे तक सर्वश्रेष्ठ किन्तु इसके उपरान्त काल का चौघड़िया नेष्ट कहा जायेगा। कुम्भ लग्न दोपहर 1:21 बजे से 2:50 बजे तक रहेगी जिसमें 13:24 के शुभ चौघड़िया मुहूत श्रेष्ठ रहेगा।

दीपावली पूजन और रात्रि के लग्न मुहूर्त्त

रात्रि बेला में वृष लग्न सांय 5:54 मिनट से प्रारम्भ होकर रात्रि 7:51 मिनट तक रहेगी जिसमें शुभ का चौघड़िया मुहूर्त 7:07 बजे तक वर्तमान रहेगा जो दीपावली पूजन के लिए उद्योग धन्धे, व्यापारी वर्ग, नौकरी पेशा, ट्रांसपोर्ट का कार्य करने वाले तथा गृहस्थी के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

मिथुन लग्न रात्रि 07:51 से 10:05 बजे तक रहेगी जिसमें दीपावली पूजन में नौकरी का कार्य करने वालों के लिए श्रेष्ठ जानें। **कर्क लग्न** रात्रि 10:05 बजे से देर रात 12:23 तक रहेगी। कर्क का स्वामी चन्द्र सुख भाव में बैठा है जिसमें निशीथ काल वर्तमान रहेगा। '**निशीथे लक्ष्यादि पूजनं कृत्यं शुभम्**' यह समय महालक्ष्मी पूजन के लिए सर्वोत्तम कहा गया है।

●●●

अंक ज्योतिष

अंक	अधिपति	रंग	दिशा	मित्र	सम	शत्रु	विशेषता
1	सूर्य	लाल	पूर्व-अग्नि	2,5,7	3,4,9	6,8	नेतृत्व, आत्मविश्वास
2	चन्द्र	हरा	वायव्य	5,3,6,8	1,4	7,9	भावुक, संवेदन शील
3	गुरु	पीला	ईशान	2,7,9,8	1,4	5,6	ज्ञान, अध्यापन
4	राहु	नीला भूरा	पूर्व नैऋत्य	2,7,5	3,9	1,6,8	संघर्ष, अलग सोच
5	बुध	हरा सफेद	उत्तर	1,4,3	2,6,7	8,9	बुद्धिमत्ता, व्यापार
6	शुक्र	गुलाबी	अग्नेय	3	1,2,4,5,7,8	9	प्रेम, कला, विलास
7	केतु	सफेद पीला	वायव्य	5,3,6,8	1,4	2,9	आध्यात्मिक, धार्मिक
8	शनि	काला	पश्चिम	3	2,5,6,7,9	1,4	कर्म, परिश्रम
9	मंगल	लाल	दक्षिण	8	1,2,3,4,7	6,5	साहस, ऊर्जावान

अंक ज्योतिष (Numerology) एक प्राचीन विद्या है जिसमें अंकों (1-9) के माध्यम से व्यक्ति के स्वभाव, भाग्य, कार्यक्षेत्र, रिश्तों और जीवन की संभावनाओं का अध्ययन किया जाता है। यह मान्यता है कि हर अंक में एक विशेष ऊर्जा और कंपन (vibration) होती है, जो जीवन को प्रभावित करती है।

1. मूलांक (Birth Number)

आपकी जन्म तिथि से निकाला जाता है। उदाहरण: यदि जन्म 24 तारीख को हुआ है:- 2 + 4 = 6 (मूलांक 6) यह आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, पसंद-नापसंद, और सोचने के तरीके को दर्शाता है। इसे आपका "आंतरिक स्वभाव" माना जाता है। मूलांक बताता है आप अंदर से कैसे हैं।

2. भाग्यांक (Life Path Number)

पूरी जन्म तिथि (DD/MM/YYYY) के योग से निकाला जाता है।

उदाहरण: 24/08/1995, 2+4+0+8+1+9+9+5 =38 → 3+8 =11 → 1+1 =2 (भाग्यांक 2)

अंक ज्योतिष (Numerology) में मूलांक और भाग्यांक दोनों ही व्यक्ति के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को दर्शाते हैं, लेकिन इनका कार्य अलग-अलग होता है। इन दोनों के आपसी संबंध से ही व्यक्ति का स्वभाव, अवसर और जीवन की दिशा समझी जाती है। यह आपके जीवन की दिशा, अवसर, कर्मफल, और सामाजिक पहचान को दर्शाता है। इसे आपका "जीवन पथ" कहा जाता है। भाग्यांक बताता है- जीवन आपको कहाँ ले जाएगा।

मूलांक और भाग्यांक का संबंध

1. सामंजस्य (Harmony)

अगर मूलांक और भाग्यांक एक-दूसरे के मित्र ग्रहों से जुड़े हों, तो जीवन में कम संघर्ष और अवसर जल्दी मिलते हैं, निर्णय सही साबित होते हैं

2. विरोध (Conflict)

अगर दोनों अंकों के ग्रह आपस में शत्रु हों, तो आप अंदर से कुछ और चाहेंगे, लेकिन परिस्थितियाँ आपको अलग दिशा में ले जाएँगी। निर्णय लेने में दुविधा, मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी

3. संतुलन (Balance)

जब दोनों अलग प्रकृति के हों, तो व्यक्ति बहुआयामी प्रतिभा वाला होता है जीवन में उतार-चढ़ाव के बाद स्थिरता पाता है

सरल शब्दों में समझें

मूलांक = आपका स्वभाव (आप क्या चाहते हैं), भाग्यांक = आपकी नियति (जीवन क्या चाहता है) जब दोनों एक दिशा में हों, तो जीवन सरल होता है।, जब अलग दिशा में हों, तो संघर्ष के बाद बड़ी सफलता मिल सकती है।

रविपुष्य एवं गुरुपुष्यामृत योग 2026-27

ता.	मास	घ. मि.	से	घं. मि.	तक	संज्ञा
27	मार्च	15:23	"	30:19	"	पुष्य
28	"	06:19	"	14:49	"	पुष्य
23	अप्रैल	20:56	"	29:50	"	गुरु पुष्य
24	"	05:50	"	20:13	"	पुष्य
20	मई	28:11	"	29:32	"	पुष्य
21	"	05:32	"	26:48	"	गुरु पुष्य
17	जून	13:36	"	29:28	"	पुष्य
18	"	05:28	"	11:31	"	गुरु पुष्य
14	जुलाई	24:09	"	29:38	"	पुष्य
15	"	05:38	"	21:46	"	पुष्य
11	अगस्त	10:09	"	29:52	"	पुष्य
12	"	05:52	"	07:59	"	पुष्य
07	सितम्बर	18:13	"	30:05	"	पुष्य
08	"	06:05	"	16:39	"	पुष्य
04	अक्टूबर	24:13	"	30:17	"	रवि पुष्य
05	"	06:17	"	23:08	"	पुष्य
31	"	29:39	"	30:33	"	पुष्य
01	नवम्बर	06:33	"	28:30	"	रवि पुष्य
28	"	12:49	"	30:54	"	पुष्य
29	"	06:54	"	10:59	"	रवि पुष्य
25	दिसम्बर	22:49	"	31:12	"	पुष्य
26	"	07:12	"	20:12	"	पुष्य
22	जनवरी	10:24	"	31:13	"	पुष्य
23	"	07:13	"	07:30	"	पुष्य
18	फरवरी	21:05	"	30:57	"	गुरु पुष्य
19	"	06:57	"	18:35	"	पुष्य
17	मार्च	29:06	"	30:30	"	पुष्य
18	"	06:30	"	27:20	"	गुरु पुष्य

ज्वालामुखी अशुभ योग 2026-27

22 मार्च	21.16	से	22.42	तक
25 अप्रैल	18.27	से	20.04	तक
1 सितम्बर	26.41	से	30.02	तक
2 सितम्बर	06.02	से	06.12	तक
5 अक्टूबर	23.08	से	26.07	तक
9 दिसम्बर	21.21	से	31.02	तक
10 दिसम्बर	07.02	से	08.45	तक
13 फरवरी	29.37	से	31.01	तक
14 फरवरी	07.01	से	24.40	तक
14 फरवरी	28.46	से	31.00	तक
15 फरवरी	07.00	से	22.44	तक
12 मार्च	14.57	से	30.35	तक
13 मार्च	06.35	से	11.02	तक

●●●

गुरू-शुक्र (तारा) उदयास्त सं. 2083 (सन् 2026-27)

	गुरु				शुक्र		
16 जुलाई	अस्त	पश्चिम	26.40	14 अक्टूबर	अस्त	पश्चिम	23.15
10 अगस्त	उदय	पूर्व	05.50	28 अक्टूबर	उदय	पूर्व	22.10

गुरु-शुक्रास्त में वर्जित कर्म

गुरु और शुक्र का अस्त होना (जिसे **तारा डूबना** भी कहा जाता है) भारतीय ज्योतिष में गुरु एवं शुक्र ग्रह को तारा माना गया है, इसके अस्त हो जाने पर भारतीय ज्योतिषशास्त्र किसी भी नर-नारि के विवाह की अनुमति नहीं देता है और न ही किसी उत्तम मांगलिक कार्य की। निम्नांकित शुभ कार्यों को शास्त्र वचनानुसार निषिद्ध एवं त्याज्य माना गया है - गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, कूआ-तालाब का निर्माण, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, नामकरण, मुण्डन, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, सगाई, विवाह, गोदान, देव-प्रतिष्ठा (मूर्ति-स्थापना) चातुर्मास्य-प्रयोग, अग्निहोत्र (यज्ञ) प्रारम्भ, सकाम अनुष्ठान, यात्रा, दीक्षा, संन्यास ग्रहण आदि।

गण्डमूल नक्षत्र फल विचार

यदि कोई बालक/बालिका का गण्डमूल नक्षत्रों में जन्म हुआ हो तो वह जातक के माता, पिता, धन तथा स्वयं के लिये अनिष्टप्रद होता है, अत: इस अरिष्ट निवारण के लिये लगभग 27 दिन बाद उसी नक्षत्र काल में योग्य ब्राह्मण के द्वारा गण्डमूल शान्ति करानी चाहिये।

छ: नक्षत्र हैं मूल के मूल मघा और रेव। अश्विनी आश्लेषा सहित ज्येष्ठा को कह देव॥

गण्डमूल नक्षत्र : (1) अश्विनी (2) अश्लेषा (3) मघा (4) ज्येष्ठा (5) मूल (6) रेवती

गण्डमूल नक्षत्रों के पद (चरण) फल-

नक्षत्र चरण	अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती
1	पितृकष्ट	शान्ति करने से सुख	मातृकष्ट	बड़े भाई को कष्ट	पितृकष्ट	धनप्राप्ति
2	सुख	धनहानि	पितृकष्ट	छोटे भाई को कष्ट	मातृकष्ट	मन्त्रीतुल्यमान
3	मन्त्री तुल्यमान	मातृकष्ट	सुख	मातृकष्ट	धनहानि	सुख
4	राजा तुल्यमान	पितृकष्ट	धनविद्या लाभ	स्वयं को कष्ट	शान्ति	अनेक कष्ट

मूल तथा गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल

सन् 2026 ई.

ता.	मास	घं. मि.	से	ता. मा	घं.मि.	तक
19	मार्च	28:04	से	21 मार्च	24:37	तक
28	मार्च	14:49	से	30 मार्च	14:47	तक
06	अप्रैल	26:56	से	09 अप्रैल	08:47	तक
16	अप्रैल	13:58	से	18 अप्रैल	09:42	तक
24	अप्रैल	20:13	से	26 अप्रैल	20:26	तक
04	मई	09:57	से	06 मई	15:53	तक
13	मई	24:17	से	15 मई	20:14	तक
21	मई	26:48	से	23 मई	26:08	तक
31	मई	16:11	से	02 जून	22:05	तक
10	जून	09:21	से	12 जून	06:28	तक
18	जून	11:31	से	20 जून	09:25	तक
27	जून	22:10	से	29 जून	28:03	तक
07	जुलाई	16:23	से	09 जुलाई	14:55	तक
15	जुलाई	21:46	से	17 जुलाई	18:34	तक
24	जुलाई	28:36	से	27 जुलाई	10:28	तक
03	अगस्त	21:59	से	05 अगस्त	21:17	तक
12	अगस्त	07:59	से	13 अगस्त	28:38	तक
21	अगस्त	11:52	से	23 अगस्त	17:44	तक
30	अगस्त	27:44	से	01 सित.	26:41	तक
08	सित.	16:39	से	10 सित.	14:04	तक
17	सित.	19:53	से	19 सित.	25:42	तक
27	सित.	11:07	से	29 सित.	09:03	तक
05	अक्टू.	23:08	से	07 अक्टू.	21:40	तक
14	अक्टू.	28:02	से	17 अक्टू.	09:46	तक
24	अक्टू.	20:31	से	26 अक्टू.	17:40	तक
01	नव.	28:30	से	03 नव.	27:26	तक
11	नव.	11:37	से	13 नव.	17:16	तक
20	नव.	30:50	से	22 नव.	28:15	तक
29	नव.	10:59	से	01 दिस.	09:00	तक
08	दिस.	18:15	से	10 दिस.	23:57	तक
18	दिस.	16:09	से	20 दिस.	14:55	तक
26	दिस.	20:12	से	28 दिस.	16:32	तक

सन् 2027 ई.

ता.	मास	घं. मि.	से	ता. मा	घं. मि.	तक
04	जन.	24:14	से	06 जन.	30:07	तक
14	जन.	23:18	से	16 जन.	23:38	तक
23	जन.	07:30	से	24 जन.	26:40	तक
31	जन.	30:27	से	03 फर.	12:25	तक
10	फर.	28:55	से	12 फर.	29:55	तक
19	फर.	18:35	से	21 फर.	13:50	तक
28	फर.	13:46	से	02 मार्च	19:26	तक
10	मार्च	10:52	से	12 मार्च	11:22	तक
18	मार्च	27:20	से	20 मार्च	23:44	तक
27	मार्च	22:14	से	29 मार्च	27:17	तक
06	अप्रैल	18:22	से	08 अप्रैल	17:59	तक

पंचक प्रारम्भ व समाप्ति काल

सन् 2026 ई.

16	मार्च	18:08	से	20 मार्च	26:27	तक
12	अप्रैल	27:38	से	17 अप्रैल	12:01	तक
10	मई	12:06	से	14 मई	22:33	तक
06	जून	18:58	से	11 जून	08:15	तक
03	जुलाई	24:44	से	08 जुलाई	15:59	तक
31	जुलाई	06:34	से	04 अग.	21:53	तक
27	अग.	13:31	से	31 अग.	27:23	तक
23	सित.	21:51	से	28 सित.	10:15	तक
21	अक्टू.	06:54	से	25 अक्टू.	19:21	तक
17	नव.	15:25	से	21 नव.	29:54	तक
14	दिस.	22:31	से	19 दिस.	15:57	तक

सन् 2027 ई.

10	जन.	28:32	से	15 जन.	23:54	तक
07	फर.	10:33	से	11 फर.	29:41	तक
06	मार्च	17:30	से	11 मार्च	11:19	तक
02	अप्रैल	25:28	से	07 अप्रैल	18:25	तक

विविध मुहूर्त्त

बही खाता मुहूर्त्त

तिथि : 1(कृ.) 2,3,5,7,8,10,12,13,15,(शुक्ल)
वार : सू.चं., बुध, गुरू, शुक्र
नक्षत्र : अश्वि., रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा 3, चि., अनु.श्र., ध.रे.
लग्न : 1,6,4,7,9,10 ।

नौकरी करने का मुहूर्त्त

तिथि : 2,3,5,7,10,13,15
वार : बुध, गुरू, शुक्र
नक्षत्र : अ., मृग. पु., चि.अनु.रे. ।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त्त

तिथि : 2,3,4,5,6,9,10,11,12,13, 14,15 शुभ
वार : सूर्य, शनि, गुरू, शुक्र
नक्षत्र : अ., ह., चि., अनु., पु., ध., ज्ये., पुन., रे., लग्न, स्थिर ।

दुकान करने का मुहूर्त्त

तिथि : 1,2,3,4,5,6,7,8,10,11,13,15
वार : रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि
नक्षत्र : मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, तीनों उत्तरा, अश्विनी, पुष्य ।

कार्य सिद्धि हेतु मुहूर्त्त

तिथि : 2,3,5,10,13 (कृ.)
वार : सूर्य, चन्द्र, गुरू, शुक्र
नक्षत्र : अश्वि., रो., मृ.पुन. उत्तरा 3, श्र., ध., श., रे. ।

जल या कूप (कुआँ) पूजन

मृग, मूल, पुन, पुष्य, श्रवण, हस्त, नक्षत्र एवं बुध- गुरुवार सोम के दिन जल या कुम्भ पूजन शुभ होता है ।

आपरेशन कराने का मुहूर्त्त

तिथि : 2,3,4,5,7,8,9,10,12,14,15
वार : सूर्य, मंगल, गुरू
नक्षत्र : अ., मृ., पु., ह., स्वा., अनु., ज्ये., श्र., रिक्ता तिथि 4,9,14 आपरेशन के लिये सर्वश्रेष्ठ तिथि हैं ।

अभिजित मुहूर्त्त

बुधवार को छोड़कर बाकी सभी दिन 11:30 पर अभिजित मुहू र्त्त आता है, ये सभी कार्यों में विजय प्रदान करने वाला है ।

गाड़ी (वाहन) खरीदने के मुहूर्त्त

(खरीदने के शुभ नक्षत्र) पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, हस्त, ज्येष्ठा, मृग, चित्रा, अनुराधा, रेवती, सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, गुरूवार तिथि 5,10,15,3,8,13 इस तिथि, वार नक्षत्र में गाड़ी खरीदनी चाहिये ।

वरवरण मुहूर्त्त नक्षत्र (सगाई)

नक्षत्र : उत्तरा 3, रोहिणी, अनुराधा, मृगशिरा, मूल, रेवती, हस्त, मघा, स्वाती, कृत्तिका, पूर्वा, 3 इन नक्षत्रों में अच्छा चन्द्रमा देखकर सगाई (टीका) कर लेना चाहिये।

विवाह रवि चन्द्र गुरु शुद्धि चक्रम्

शुद्ध	पूज्य	अशुद्ध (नेष्ट)
सूर्य 3,6,10,11	1,2,5,7,9	4,8,12
गुरु 2,5,9,11,7	1,3,6,10	4,8,12
चन्द्र 3,6,7,10,11	1,2,5,9	12,4,8

नोट : कृष्ण पक्ष में 12 वाँ चन्द्र पुरुषों के लिए ग्राह्य है, उच्च, मित्र, स्वग्रही गुरु - 4, 8, 12वाँ भी ग्राह्य माना गया है।

विवाह नक्षत्र : रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती, मृगशिरा, मघा, अनुराधा, हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवाह के हैं।

अभिजित मुहूर्त्त : दिनमान के 15 भाग करने पर आठवां भाग अभिजित मुहूर्त्त कहलाता है। इसमें अनेक दोष निवारण की शक्ति है। अत: कोई शुभ लग्न मुहूर्त्त न मिलने पर (अत्यावश्यक में) जातकादि सभी शुभकार्य अभितिज मुहूर्त्त में किये जा सकते हैं। परन्तु बुधवार में अभिजित मुहूर्त्त नहीं होता है। भगवान श्रीरामजी का जन्मोत्सव इसी बेला में मनाया जाता है।

भद्रा वास : 1,2,3 और 8 राशि में चन्द्रमा हो तो भद्रावास स्वर्ग में होता है, ऐसे ही 4, 5,11,12 राशिस्थ चन्द्रमा में पृथ्वीलोक में विचरण करती है। और 6,7,9 एवं 10 वें चन्द्र में भद्रा पाताल वासिनी कही गई है। जहाँ रहती है वहीं फल है। भूलोकस्था सदात्याज्या स्वर्ग-पातालगा शुभा। भद्रा दिन में तिथि के उत्तरार्ध की और रात्रि में पूर्वार्ध की शुभ होती है।

विविध मुहूर्त्त

गृहारम्भ मुहूर्त्त

मास : वैशाख, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन मास ही शिलान्यास के लिए शुभ माने जाते हैं ।

वार : सूर्य और मंगलवार को छोड़कर सभी

तिथि : प्रतिपदा, अमा., अष्टमी को छोड़कर सभी

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

तिथि : शुक्ल, प्रतिपदा, रिक्ता, अमा., छोड़कर शेष

वार : मंगलवार को छोड़कर शेष सभी वार

नक्षत्र : मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, अश्विनी, पुष्य, हस्त अभिजित, पुनर्वसु स्वाति श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी उ.फा., उ.षा., उ.भा. ।

कर्णभेद, चूड़ाकरण, मुण्डन संस्कार

तिथि : 1,2,3,5,6,7,8,10,11,12,13,15

वार : चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र, शुभयोग में रविवार

नक्षत्र : जन्मादिभात 12 या 16 दिन वा 6/7/8

मासेषु व विषमवर्षे शुभानि अश्वि., म.पु. पुष्य. हस्त. चि. स्वा. अनु. अभि. श्रव. ध. श. रेव. भेषुचन्द्र । अर्कबले अष्टशुभलग्ने॥ वर्ज्या : चैत्र पौष हरिशयनं जन्ममासं तथा ताराविरुद्धं च । रोगवानं मृत्युवानं हानिप्रदायिका: ॥ज्येष्ठसुते व ज्येष्ठमासे विवर्जिता:॥

चुनाव में नामांकन मुहूर्त्त

दोनों पक्ष की शुभतिथियाँ - 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13, 15 और कृष्ण पक्ष की 1 श्रेष्ठ ।

शुभ वार - रवि,सोम,बुध,गुरू,शुक्रवार ।

सूर्य की होरा - टेण्डर लेने, चुनाव नामांकन, नौकरी फार्म भरने, राजकाज का चार्ज, शपथ ग्रहण में श्रर्वश्रेष्ठ रहती है । वार चाहे जो भी हो सूर्य की होरा या राशी की होरा में सफलता सुनिश्चित है ।

शुभनक्षत्र - अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्दा., पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, स्वाती, अनु., उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, उ.भा. और रेवती । शुभलग्न - जिससे नवम एवं दशम भाव प्रभावशाली हों अर्थात कोई पापग्रह न हो और लग्न भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो । राशि से चन्द्रमा शुभ स्थान पर हो । शपथग्रहण - जहाँ तक हो सके स्थिर लग्न में करनी चाहिये ।

गृहप्रवेश मुहूर्त्त

मास : वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन

वार : सोम, बुध, गुरू, शुक्र, शनि

तिथि : रिक्ता (4,14,9) अमावस्या छोड़कर

नक्षत्र : रोहिणी मृगशिरा, उ.फा.,चित्रा, अनुराधा उ.षा., उ.भा., रेवती

जातकर्म (नामकरण)

तिथि : सत्

वार : रवि, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्रवार

नक्षत्र : अ.रो.मृ.पु.पु.उफा.ह.चि., स्वा.अनु. उषा.श्रव.ध.श.उभा.रे. जन्मत:, 10/ 11/ 12/ 15/ 16 वें दिने या सवा महीने में ।

उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत)

ब्राह्मण, वैश्य और क्षत्रियों के लिये

तिथि : 2,3,5,10,11,12, वर्जित पौ 11 मा 12. आ 10 ज्ये 2

वार : सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, रविपुष्य, गुरुपुष्यामृत शुभ ।

नक्षत्र : अ.रो.मृ.आ.पुन.पु.श्ले.पूफा.उफा.ह.चि. स्वा.अनु.मू.पूषा.उषा.श्र.ध.श.पूभा. उभा. रेवतीनक्षत्रे उभयपक्षे ग्राह्य: वैशा. ज्ये. आषा. माघ. फाल्गुन मास ।

साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षयतीज), 3. आश्विन शुक्ल दशमी (विजयादशमी), 4. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा व दीपावली प्रदोषबेला चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त हैं। इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांगशुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्धबली होने से इन्हें साढ़ेतीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त कहते हैं।

लोकप्रसिद्ध मुहूर्त्त

आषाढ़ शुक्ल नवमी (भड्डली नवमी), कार्तिक शुक्ल एकादशी (देवउठान), माघ शुक्ल बसन्त पंचमी (श्रीसरस्वती जयन्ती), फाल्गुन शुक्ल द्वितीया (फुलेरा दौज) - ये मुहूर्त्त लोकव्यवहार में सिद्ध माने जाते हैं । कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को उत्तर वासी मान्यता नहीं देते हैं । ये प्रत्येक कर्म में बड़ी ही श्रद्धा के साथ अपनाये जाते हैं । इन्हें 'अनपूछा' मुहूर्त्त कहा जाता है ।

दिन का चौघड़िया

शुभ, चर, अमृत और लाभ के चौघड़िया का समय श्रेष्ठ या उत्तम माना गया है। इनमें प्रत्येक शुभ कार्य का शुभारम्भ कर सकते हैं।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघड़िया	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
दूसरी चौघड़िया	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरी चौघड़िया	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथी चौघड़िया	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
पांचवी चौघड़िया	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
छठवीं चौघड़िया	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवीं चौघड़िया	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
आठवीं चौघड़िया	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि का चौघड़िया

उद्वेग, रोग तथा काल के चौघड़िया का समय खराब माना गया है इन चौघड़िया में शुभ और महत्त्वपूर्ण कार्य वर्जित है।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघड़िया	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौघड़िया	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
तीसरी चौघड़िया	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौघड़िया	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
पांचवी चौघड़िया	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
छठवीं चौघड़िया	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवीं चौघड़िया	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
आठवीं चौघड़िया		चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

चौघडिया मुहूर्त्त - एक चौघड़िया सूर्योदय तक लगभग डेढ घण्टे तक रहती है। चौघड़िया मुहूर्त्त अपना विशेष स्थान रखते हैं। जिनके स्वामी ग्रह इस प्रकार हैं। यथा- उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र , काल का शनि, शुभ का गुरू और रोग का स्वामी भौम है। जिसका जो स्वामी है उससे सम्बन्धित धातु तथा अन्याय पदार्थ का उपयोग करने से करोबार में विशेष लाभ का अवसर रहता है यात्रा में सूक्ष्म विचार करना चाहिये। अमृत के चौघड़िया में पूर्व दिशा की यात्रा दिशाशूल सम्मुख दोषयुक्त रहेगी। क्योंकि सोम में पूर्व दिशा में दिशाशूल दोष होता है। शुभ कार्य और यात्रा के लिय कोई मुहूर्त्त न बनने पर उत्तम चौघड़िया देखकर कार्य करना चाहिये।

चौघड़िया की सटीक कालगणना के लिए साथ के पृष्ठ पर वार्षिक चौघड़िया समय सारिणी दी गई है जिसमें पहली और पन्द्रहवीं तारीख का सूर्योदय सूर्योस्त एवं पहली से लेकर आठवीं चौघड़िया का वास्तविक समय दिया है। सूर्योदय के समयानुसार चौघड़िया की काल गणना की जाती है। हर पन्द्रह दिनों में सूर्योदय काल में दो मिनट से 45 मिनट तक का अन्तर आता है। बीच की तारीख में अन्दाज से समय का हिसाब लगायें। अत: समय सारिणी के अनुसार चौघड़िया देखना श्रेयस्कर है।

वार्षिक चौघड़िया समय सारिणी

दिनांक	सूर्योदय पहली चौ प्रारम्भ	दूसरा चौघड़िया प्रारम्भ	तीसरी चौघड़िया प्रारम्भ	चौथी चौघड़िया प्रारम्भ	पाँचवीं चौघड़िया प्रारम्भ	छठी चौघड़िया प्रारम्भ	सातवीं चौघड़िया प्रारम्भ	आठवीं चौघड़िया प्रारम्भ	सूर्यास्त आठवीं चौ. समाप्त
01 जन.	07/13	08/30	09/47	11/05	12/22	13/39	14/57	16/ 14	17/32
15 जन.	07/15	08/33	09/52	11/10	12/29	13/47	15/06	16/24	17/42
01 फर.	07/09	08/29	09/52	11/10	12/31	13/52	15/12	16/33	17/56
15 फर.	07/00	08/23	09/46	11/10	12/33	13/56	15/20	16/43	18/07
01 मार्च	06/48	08/12	09/38	11/04	12/31	13/57	15/23	16/49	18/16
15 मार्च	06/33	08/02	09/31	11/00	12/30	13/57	15/26	16/57	18/24
01 अप्रैल	06/14	07/46	09/18	10/50	12/23	13/55	15/27	16/59	18/32
15 अप्रैल	05/59	07/34	09/09	10/44	12/20	13/54	15/29	17/04	18/39
01 मई	05/45	07/22	09/00	10/38	12/16	13/54	15/32	17/10	18/48
15 मई	05/35	07/15	08/55	10/35	12/16	13/56	15/36	17/16	18/56
01 जून	05/29	07/11	08/53	10/35	12/17	13/59	15/41	17/23	19/05
15 जून	05/28	07/10	08/53	10/36	12/19	14/02	15/45	17/28	19/11
01 जुलाई	05/32	07/14	08/57	10/40	12/23	14/05	15/48	17/30	19/14
15 जुलाई	05/38	07/19	09/01	10/43	12/25	14/06	15/48	17/30	19/12
01 अगस्त	05/47	07/26	09/06	10/45	12/25	14/05	15/45	17/25	19/04
15 अगस्त	05/54	07/31	09/09	10/46	12/24	14/01	15/39	17/16	18/54
01 सित.	06/02	07/36	09/11	10/45	12/20	13/54	15/29	17/03	18/37
15 सित.	06/08	07/39	09/11	10/42	12/14	13/46	15/17	16/49	18/21
01 अक्टू.	06/15	07/43	09/12	10/40	12/09	13/37	15/06	16/34	18/03
15 अक्टू.	06/23	07/48	09/14	10/39	12/05	13/30	14/56	16/21	17/48
01 नव.	06/33	07/55	09/17	10/40	12/02	13/24	14/47	16/09	17/32
15 नव.	06/43	08/03	09/24	10/44	12/04	13/24	14/44	16/04	17/24
01 दिस.	06/56	08/14	09/32	10/50	12/08	13/26	14/44	16/02	17/21
15 दिस.	07/06	08/23	09/40	10/57	12/14	13/31	14/48	16/05	17/23

राहु काल

• राहु काल दिन का एक ऐसा समय है जब राहु अपने पूर्ण प्रभाव में रहता है और इस मध्य यदि कोई भी शुभ कार्य किया जाये तो उसकी सफलता में संदेह रहता है। राहु को शुभकार्यों में बाधा डालने वाला ग्रह माना जाता है। राहु काल का निर्धारण प्रतिदिन सूर्योदय के समयानुसार किया जाता है। प्रस्तुत तालिका में प्रत्येक माह की पहली तारीख के सूर्योदय के समयानुसार राहु काल का आँकलन दिया गया है। माह की 15 तारीख आते-आते राहु काल गणना में 10 मिनट तक का अन्तर आ सकता है।

वार	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
रविवार	16:16 - 17:33	16.35 - 17.55	16.49 - 18.15	17.01 - 18.38
सोमवार	08:32 - 9.49	08.30 - 09.51	08.13 - 09.39	07.41 - 09.15
मंगलवार	15:00 - 16.17	15.15 - 16.36	15.15 - 16.36	15.28 - 17.02
बुधवार	12.25 - 13.43	12.33 - 13.54	12.33 - 13.54	12.23 - 13.55
गुरूवार	13.39 - 14.57	13.54 - 15.16	13.54 - 15.16	13.55 - 15.28
शुक्रवार	11.05 - 12.23	11.11 - 12.33	11.11 - 12.33	10.50 - 12.22
शनिवार	09.48 - 11.06	09.50 - 11.11	09.50 - 11.11	09.16 - 10.49

वार	मई	जून	जुलाई	अगस्त
रविवार	17.11 - 18.49	17.26 - 19.08	17.31 - 19.14	17.24 - 19.03
सोमवार	07.20 - 08.59	07.10 - 08.52	07.15 - 08.58	07.26 - 09.06
मंगलवार	15.33 - 17.12	15.41 - 17.24	15.49 - 17.31	15.43 - 17.23
बुधवार	12.16 - 13.54	12.17 - 13.59	12.22 - 14.05	12.25 - 14.04
गुरूवार	13.54 - 15.34	14.00 - 15.42	14.06 - 15.48	14.04 - 15.43
शुक्रवार	10.38 - 12.16	10.35 - 12.17	10.40 - 12.23	10.45 - 12.24
शनिवार	08.59 - 10.38	08.52 - 10.35	08.57 - 10.40	09.05 - 10.45

वार	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
रविवार	16.57 - 18.31	16.31 - 17.58	16.09 - 17.31	16.02 - 17.20
सोमवार	07.37 - 09.10	07.44 - 09.12	07.56 - 09.18	08.18 - 09.35
मंगलवार	15.27 - 17.02	15.01 - 16.29	14.46 - 16.08	14.44 - 16.01
बुधवार	12.18 - 13.52	12.06 - 13.34	12.02 - 13.24	13.26 - 13.44
गुरूवार	13.52 - 15.26	13.37 - 15.05	13.24 - 14.45	13.35 - 14.52
शुक्रवार	10.44 - 12.18	10.40 - 12.08	10.41 - 12.02	10.45 - 12.24
शनिवार	09.10 - 10.44	09.12 - 10.40	09.20 - 10.41	09.34 - 10.51

क्या है राहुकाल?

राहु को छाया ग्रह माना गया है। यह ग्रह अशुभ फल प्रदान करता है। इसलिए इसके आधिपत्य का जो समय रहता है, उस दौरान शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय में से आठवें भाग का स्वामी राहु होता है। इसे ही राहुकाल कहते हैं। प्रत्येक दिन लगभग 90 मिनट का एक निश्चित समय होता है, जो राहुकाल कहलाता है। राहुकाल दिनमान के आठवें भाग का नाम है। राहुकाल का समय किसी स्थान के सूर्योदय व वार पर निर्भर करता है।

राहुकाल विचार केवल दिन में ही किया जाता है। राहुकाल का विशेष रविवार, मंगलवार तथा शनिवार को आवश्यक माना गया है। बाकी दिनों में राहुकाल का नकारात्मक प्रभाव विशेष नहीं होता। राहुकाल स्थान और तिथि के अनुसार अलग-अलग होता है अर्थात् प्रत्येक वार को अलग समय में शुरू होता है। यह काल कभी सुबह, कभी दोपहर तो कभी शाम के समय आता है, लेकिन सूर्यास्त से पूर्व ही पड़ता है। राहुकाल की अवधि दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय) के 8वें भाग के बराबर होती है यानी राहुकाल का समय डेढ़ घण्टा होता है। वैदिक शास्त्रों के अनुसार इस समय अवधि में शुभ कार्य आरंभ करन से बचना चाहिए। कहते है कि राहुकाल में घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए, कोई महत्वपूर्ण या मांगलिक कार्य भी नहीं करना चाहिए।

यात्रा-प्रकरण - दिशाशूल ज्ञानार्थ चक्रम्

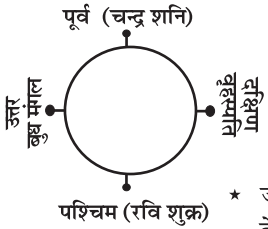

सोम सनीचर पूरब ना चालू। मंगल बुध उत्तर दिसि कालू॥
रवि शुक्र जो पच्छिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥
गुरु को दक्खिन करे पयाना। फिर नहीं समझो ताको आना॥

यात्रा कैसे शुभ हो।

★ जाने के समय नेबला, मछली, दर्पण, चील, चकवा और नीलकण्ठ इन्हें देखना अत्यन्त शुभ एवं मनोकामनापूर्ण करने वाला माना जाता है। अमृत, साधु, सुन्दर पुष्प, अच्छे फल, सुहानी बात, और सीताराम की कविता ये सात सुन्दर शकुन है।

★ यात्रारम्भ में बिल्लियों का युद्ध, रजस्वला स्त्री का सामने आना, जननी का तिरस्कार, अकाल वृष्टि परिवारीय मृत सूतकों में शुभ की इच्छा रखने वाला यात्रा न करे।

★ घर से निकलते समय '**गमने वाञ्छये सुमाधवे**' उच्चारण करके निकले।

रामलखन कौसिक सहित, सुमिरहु करहु पयान। लक्षि लाभ जय जगत जसु, मंगल सगुन पयान॥
भरत सगुसूदन लखन, सहित सुमिरि रघुनाथ। करहु काज सुम साज सब, मिलाहि सुमंगल साथ॥

नोट - दिशाशूल में यदि यात्रा करना आवश्यक ही हो तो निम्नांकित वस्तु खाने से यात्रा शुभ होगी ।

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
वस्तु	घी, गुड़ लाल चन्दन पान लाल सुपाड़ी युक्त	दूध रबड़ी श्वेत चन्दन मसूर, गेहूँ	गुड़ लाल चन्दन मसूर गेहूँ	पुष्प पिश्ता मूंग का हलुआ पान कस्तूरी	दही गुड़ बेसन हलुआ लाल चन्दन	घी, दही वर्फी,काजू पान कपूर युक्त	तिल, चना उड़द आँवला पान लौंग युक्त

चन्द्र दिशा ज्ञान	मेष, सिंह और धनु का चन्द्रमा कन्या, वृष तथा मकर का चन्द्रमा कुम्भ, तुला एवं मिथुन का चन्द्रमा कर्क, वृश्चिक एवं मीन का चन्द्रमा	पूर्व में दक्षिण में पश्चिम में उत्तर में
चन्द्र दिशा फल	सम्मुख चन्द्रमा हो तो लाभ पीछे हो तो दुःख	दाहिने हो तो शुभ बायें हो तो हानि

क्षणवार जानने का चक्र "होरा"

वार	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
सू.	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शू	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
चं.	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	शु	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
मं.	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
बु.	बु.	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
गु.	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शु.	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं
श.	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं

उदाहरण - कल्पना करो कि आज मंगलवार है । आपको कार्य सिद्धार्थ किसी बड़े अधिकारी से मिलना है, तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरू की होरा उत्तम होती है ऐसा लिखा है । अत: उस दिन गुरू की होरा मालूम करनी है जो कि किस-किस समय पर होती है । उपरोक्त चक्र में मंगल के सामने देखा तो उस दिन 7/14/21 वें भाग में गुरू की होरा मिली । अत: मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से 6/13/20 वें घण्टे के बाद एक-एक घण्टे तक गुरू की होरा जाननी चाहिये ।

नोट - होरा मुहूर्त्त गणनानुसार ही सप्तवारों के निश्चय किये गये हैं । जैसे रविवार को पच्चीसवाँ होरा मुहूर्त्त चन्द्रमा का होने से रविवार के बाद वार गणना में चन्द्रवार आता है ।

होरा ज्योतिष शास्त्र का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। शुभ मुहूर्त के अभाव में कोई मंगल कार्य न रुके इसके लिए ज्योतिष में होरा चक्र की व्यवस्था बनाई गई है।होरा काल में किया गया कार्य शुभ मुहुर्त में किए गए कार्य की भांति सि) होता है इसलिए होरा शास्त्र को कार्य सि) का अचूक माध्यम माना गया है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार एक अहोरात्र अर्थात दिन-रात में सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक 24 होरा होती हैं।प्रत्येक दिन के प्रारंभ में प्रथम होरा उस ग्रह की होती है जिसका वह वार होता है। जैसे रविवार को पहली होरा-सूर्य ग्रह की होगी सोमवार को पहली होरा-चंद्र ग्रह की होगी बुधवार को पहली होरा-बुध ग्रह की होगी गुरुवार को पहली होरा- गुरु ग्रह की होगी शुक्रवार को पहली होरा-शुक्र ग्रह की होगी शनिवार को पहली होरा-शनि ग्रह की होगी।प्रत्येक दिन पहली होरा वार वाले ग्रह की होने के बाद अगली होरा उसी दिन से छठे दिन की होगी और यही क्रम इसी प्रकार आगे बढ़ता जाएगा। उदाहरण के लिए सोमवार के दिन किसी भी ग्रह की होरा देखनी हो तो हम उसे इस प्रकार से देखेंगे:-

पहली होरा – चंद्र ग्रह की होगी दूसरी होरा – शनि ग्रह की होगी

तीसरी होरा – गुरु ग्रह की होगी चौथी होरा – मंगल ग्रह की होगी

पाँचवीं होरा– सूर्य ग्रह की होगी छठी होरा – शुक्र ग्रह की होगी

सातवीं होरा – बुध ग्रह की होगी आठवीं होरा फिर से चंद्र की होगी

और यह क्रम ऐसे ही चलता रहेगा। इस प्रकार जो भी वार हो उसी वार की होरा से आगे की होरा निकाली जा सकती हैं और अपने कार्य को सफल बनाने के लिए उसका प्रारंभ किया सकता है। प्रत्येक होरा किसी विशेष कार्य के लिए शुभ होती है। जो इस प्रकार है:–

सूर्य की होरा :– सूर्य की होरा में सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करना, पदभार संभालना, उच्च अधिकारियों से भेंटवार्ता करना, टेंडर के लिए आवेदन एवं माणिक रत्न धारण करना शुभ माना जाता है।

चंद्र की होरा :– चंद्र की होरा को सभी कार्य के लिए शुभ माना गया है अत: आप किसी भी कार्य का श्रीगणेश कर सकते हैं। इसके अलावा चंद्र की होरा में बागवानी, खाद्य संबंधी क्रियाएँ, समुद्र व चांदी से संबंधित कार्य एवं मोती धारण करने के लिए बहुत शुभ मानी जाती है।

मंगल की होरा :– मंगल की होरा में पुलिस व अदालती मामलों से संबंधित कार्य करना शुभ माना जाता है। इसके अलावा इस होरा में नौकरी ज्वश्वइन करना, सट्टा लगाना, उधार देना, किसी सभा–समिति में हिस्सा लेना, मूंगा एवं लहसुनिया रत्न धारण करना शुभ फलदायी होता है।

बुध की होरा :– बुध की होरा में नए व्यापार शुरू करना लाभकारी होता है। इसके अलावा इस होरा में लेखन व प्रकाशन का कार्य करना, प्रार्थना पत्र देना, विद्यारंभ करना, कोष संग्रह करना और पन्ना रत्न धारण करना भी शुभ माना जाता है।

गुरु की होरा :– इस होरा में उच्च अधिकारियों भेंट करना, शिक्षा विभाग में जाना व शिक्षक से मिलना, विवाह संबंधी कार्य करना और पुखराज रत्न धारण करना शुभ माना जाता है अर्थात इन कार्यों को करने में आपको सफलता मिलेगी।

शुक्र की होरा :– इस होरा काल में जातकों के लिए नए वस्त्र पहनना, आभूषण खरीदना अथवा उसे धारण करना, फिल्म जगत से संबंधित कार्य करना, मश्वडलिंग करना, यात्रा पर जाना एवं हीरा व ओपल रत्न धारण करना शुभ माना जाता है।

शनि की होरा :– शनि की होरा में मकान की नींव रखना अच्छा माना जाता है। इसके साथ इस होरा काल में कारखाना शुरू करना, वाहन अथवा भूमि खरीदना और नीलम व गोमेद रत्न को धारण करने से जातकों को कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।

नवग्रहों के दान, मन्त्र एवं जाप आदि

रत्न	बीज-मन्त्र	जप.सं.	आराधन	धारण	दान	वार
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	7,000	हरिवंशपुराण श्रवण	माणिक्य	गेहूँ, गाय, गुड़, तांबा, सोना, लाल, वस्त्र, लाल कमल, रक्तचन्दन, मूंगा आदि।	रवि
चन्द्र	ॐश्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः	11,000 सन्ध्याकाल	शिवस्तुति	मोती मूनस्टोन	चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चाँदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, घृत, दधि, मोती।	सोम
मंगल	ॐक्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	10,000	शिवस्तुति	प्रवाल मूंगा	तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी विद्रुम ।	मंगल
बुध	ॐब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	9,000 5 घड़ी दिन शेष	अमावस्या व्रत उपवास	पन्ना	कांसा, हाथीदांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, स्वर्ण, कपूर, वस्त्र, फल, षढ़रस-भोजन, घृत, सर्वपुष्प।	बुध
गुरु	ॐग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	19,000 सन्ध्याकाल	अमावस्या व्रत	पुखराज	पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र।	गुरू
शुक्र	ॐद्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	16,000 सूर्योदय	गौ-पूजा	हीरा जरकन	चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गन्धद्रव्य, चीनी, गौ, भूमि।	शुक्र
शनि	ॐखां खीं खौं सः शनैश्चराय नमः	23,000 सूर्योदय	मृत्युंजय-जप शनिवार का उपवास	नीलम	तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण, छाता।	शनि
राहु	ॐभ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	18,000 रात्रि	मृत्युंजय-जप शनिवार का उपवास	फिरोजा	अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्रपात्र, सप्त-धान्य, उड़द, गोमेद, काला पुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा, खड्ग।	शनि
केतु	ॐप्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः	17,000 रात्रि	मृत्युंजय-जप शनिवार का उपवास	लहसुनिया	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैदुर्य, काला पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र।	शनि

नवग्रह साधना समाधान सूत्रावली-

आहार-व्यवहार, वस्त्र-विचार, नित्य के जनजीवन में अरिष्ट कष्टप्रदायक ग्रहों के वारानुसार वेशभूषा वस्त्र धारण करना, यथाशक्ति अनुदान करना आदि सरल सुगम ग्रहजनित आधि-व्याधि निवरक सूत्र हैं।

सूर्य - रविवार के दिन मसूर की दाल, गुड़का हलवा, लाल रंग के वस्त्र धारण करें। लाल बोतल के पानी का उपयोग करें। सूर्य, पिता एवं पितृपक्ष- दादा दादी और दशम भाव कारक हैं। सूर्य विषयक विकार शान्त करने हेतु पिता एवं दादा-दादी तथा वयोवृद्धजन की सेवा करें।

चन्द्र - यदि चन्द्रमा नीच का अथवा क्षीण है तो सोमवार के दिन दही, चावल, दूध, एवं सफेद वस्तु का भोजन में सेवन व सफेद वस्त्र धारण करें। चन्द्रमा माता और उनके सम्बन्ध वाले रिश्तेदार यथा मौसा- मौसी, मामा -मामी तथा चतुर्थ भाव का कारक होने से मातृपक्ष से सम्बधित रिश्तेदारों की सेवा करें चन्द्रजनित दोष स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं।

मंगल - मंगल यदि निर्बल एवं कष्टकारक है तो लाल वस्त्र व रुमाल का प्रयोग, भोजन में गाजर, टमाटर, लालमिर्च, मसूर की दाल, लाल रंग के फल का सेवन करें। मंगल भाई, पराक्रम व तृतीय भाव का कारक है। अत: मंगल दोष निवारण के लिये भ्राता एवं इनके प्रियजन के प्रति सम्मान व सेवा सहायता का मनोभाव रखें।

बुध - बुधवार के दिन साबुत हरे मूंग, इसी की छिलके सहित दाल, हरी, साग- सब्जी तथा सभी हरे रंग के फल का भोजन में प्रयोग अधिक करें एवं हरे रंग के रुमाल, हरे वस्त्र भी धारण करें। हरे रंग की बोतल में रखा पानी पीना भी अनुकूल रहता है। बुध बहन, बुआ, पुत्री, भूमि, भवन, वाहन, व्यापार आदि का कारक है। बुधजनित दोष निवारण हेतु बहन, बुआ, पुत्री आदि की सेवा सुश्रुषा करना विशेष शुभ है।

गुरु - यदि निर्बल एवं कष्ट प्रदायक है तो इस दिन चने की दाल, बेसन, बेसन का हलवा, तुअर दाल, सभी पीले रंग के फलों का सेवन, पीले रंग के मिष्ठान का भोजन करें। वृहस्पति गुरुजनित विकार निवारण हेतु शिक्षक, गुरु, ब्राह्मण, साधु, सन्त, गौ माता आदि की सेवा साधना करें।

शुक्र - दोष निवारण हेतु उड़द की दाल, दूध-दही, खीर, साबूदाना, पोहा, केला, चावल, मैदा, सूजी, सफेद मिष्ठान का प्रयोग करें तथा सफेद रंग की पोशाक पहनें। सभी स्त्री वर्ग का सम्मान करें।

शनि - दोष निवारण हेतु काले उड़द, काले तिल, काले अंगूर, जामुन आदि काले फूलों का सेवन, काले वस्त्र अथवा आसमानी व हल्के नीले रंग के वस्त्र धारण करें। शनि सेवक नौकर, दलित, निर्धन षष्ठ भाव का कारक है। अत: इन जन समुदाय की सहायता व अनुराग करें।

शिववासज्ञानम्

हवन दिन तिथि संख्या को दूना करके 5 और मिलावें, 7 से भाग करने पर 1 शेष बचे तो शिवजी का वास कैलाश पर श्रेष्ठ, 2 शेष में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, 3 शेष में वृषारूढ़ श्रेष्ठ, 4 शेष में सभायां सन्ताप, 5 शेष में ज्ञानवेलायां पीड़ा, 6 शेष में क्रीड़ायां दु:ख शोक और 0 शेष अर्थात् भाग पूरा लगने पर शिववास शमशानभूमि में होता है। जिसका फल मृत्यु कहा गया है ।

शिववास शुभ तिथि

शुक्ल पक्ष की तिथियाँ	2	5	6	9	12	13
कृष्ण पक्ष की तिथियाँ	1	4	5	8	11	12

सर्वांक सिद्धियोग

शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें-क्रमश: 7,8,3 का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हों तो क्लेष, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्तमें हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायाँ स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायाँ स्वर चलते समय दक्षिण व नैऋत्य को नहीं जाना चाहिए, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने का मन च चाहे तो कदापि न जाये क्योंकि मुहूर्त्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

चन्द्रमा से पाया विचार

जन्मकुण्डली के 1,6,11 वें स्थान में चन्द्रमा हो तो स्वर्णपाद, 2,5,9 चांदी, 3,7,10 में तांबा और 4,8,12 भाव में हो तो लोहे के पाया के जन्म हुआ है ऐसा जानें यह मत सर्वमान्य है।

नक्षत्र से पाया विचार

आर्द्रादि दशकं रूपं विशाखादि युगलोहकम्। पूषादि सप्तताम्रश्च, रेवत षष्ठ स्वर्णकम्॥

आद्रादि 10 नक्षत्र चांदी के पाया। विशाखा से 4 में लोहपाद। पू.षा. से 7 तक ताम्रपाद और रेवती से 6, नक्षत्रों में जन्म हो तो स्वर्णपाद से जानना चाहिये। तांबा, चांदी, श्रेष्ठ, लोहा और स्वर्णपाद फल नेष्ट होता है।

व्यवसाय में सफलता हेतु		परीक्षा में जाने के समय
रविवार -	पान खाकर जायें।	पान या तुलसी खाकर जायें ।
सोमवार-	दर्पण देखकर जायें।	दर्पण देखकर जायें ।
मंगलवार-	गुड़ खाकर जायें।	आलू, अरबी, गाजर, शकरकंदी, खाकर जायें।
बुधवार-	धनिया चबाकर जायें।	शहद खाकर जायें ।
गुरुवार-	जीरा खाकर जायें।	दही बतासे या दही पेड़ा खाकर जायें ।
शुक्रवार-	दही खाकर जायें।	कालीमिर्च, अदरक, राई खाकर जायें ।
शनिवार-	अदरक खाकर जायें।	तेल या तिल ग्रहण करके जायें ।

रुद्राभिषेक एवं महामृत्युंजय जाप

सावन के महीने में महामृत्युंजय करने से समस्त नकारात्मकता की शांति हो जाती है, जिससे भविष्य में आने वाली सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। जिनके घर महामृत्युंजय की पूजा होती है उस घर में भगवान शिव का वास होता है। इस कारण उस घर में भूत-प्रेत कभी नहीं आते, दु:ख-दरिद्रता कभी नहीं आती एवं भगवान शिव की कृपा से सदैव शांति बनी रहती है। घर का कोई सदस्य किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त है और इलाज कराने के बाद भी स्वास्थ्य लाभ नहीं हो रहा हो तो भगवान शिव के महामृत्युंजय मंत्र का जाप घर में कराना चाहिए। जिन घर में आर्थिक तंगी चल रही है एवं प्रयास करने के बाद भी नौकरी नहीं लग पा रही है, जिसके कारण वे परेशान हो रहे हों, तो वह व्यक्ति कहीं महामृत्युंजय मंत्र का जाप करा ले, तो उसके घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी।

रुद्राभिषेक विधान एक सम्पूर्ण जानकारी :

रुद्र अर्थात् भूत, भगवान शिव का अभिषेक। शिव और रुद्र परस्पर एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं। शिव को ही रुद्र कहा जाता है क्योंकि रुदं दु:खम्, द्रावयति-नाशयति इति रुद्र: अर्थात् जो भौतिक सभी दु:खों को नष्ट कर देते हैं। हमारे धर्मग्रंथों के अनुसार हमारे द्वारा किए गए पाप ही हमारे दु:खों का कारण हैं। रुद्रजप और रुद्राभिषेक से हमारी कुंडली से पातक कर्म एवं महापातक भी जलकर भस्म हो जाते हैं और साधक में शिवत्व का उदय होता है तथा भगवान शिव का शुभाशीर्वाद भक्त को प्राप्त होता है और उनके सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। यह कहा जाता है कि एक मात्र सर्वशक्तिशाली रुद्र की पूजा से सभी देवताओं की पूजा स्वत: हो जाती है। ऋग्वेदोपनिषद् में शिव के बारे में कहा है -

सर्वदेवानां आत्मा रुद्र:, सर्वदेवा: शिवात्मका।।

अर्थात् सभी देवताओं की आत्मा में रुद्र उपस्थित हैं और सभी देवता रुद्र की आत्मा हैं।

हमारे शास्त्रों में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए रुद्राभिषेक के निमित्त अनेक द्रव्यों तथा पूजन सामग्री को बताया गया है। साधक रुद्राभिषेक पूजन विभिन्न विधि से तथा विभिन्न मनोरथों को लेकर करते हैं। किसी खास मनोरथ की पूर्ति के लिए तदनुसार पूजन सामग्री तथा विधि से रुद्राभिषेक की जाती है। रुद्राभिषेक के विभिन्न पूजन के लाभ इस प्रकार हैं

- जल से अभिषेक करने पर वर्षा होती है।
- असाध्य रोगों एवं बाधा-दोष एवं ऐसी बीमारी जो पकड़ में नहीं आ रही हो, को शांत करने के लिए कुशोदक से रुद्राभिषेक करें।
- भवन-वाहन के लिए दही से रुद्राभिषेक करें।
- लक्ष्मी प्राप्ति के लिए गन्ने के रस से रुद्राभिषेक करें।
- धन-वृद्धि के लिए शहद एवं घी से अभिषेक करें।
- तीर्थ के जल से अभिषेक करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है एवं बाधा शांति होती है।
- इत्र मिले जल से अभिषेक करने से बीमारी नष्ट होती है।
- पुत्र प्राप्ति के लिए दूध से और यदि संतान उत्पन्न होकर पुत्र पैदा हो तो गोघृत से रुद्राभिषेक करें।

- रुद्राभिषेक से योग्य तथा विद्वान संतान प्राप्ति होती है।
- ज्वर की शांति के हेतु शीतल जल (गंगाजल) से रुद्राभिषेक करें।
- सहस्रनाम मंत्रों का उच्चारण करते हुए घृत की धारा से रुद्राभिषेक करने पर वंश का विस्तार होता है।
- प्रमेह रोग की शांति भी दुग्धाभिषेक से हो जाती है।
- शक्कर मिले दूध से अभिषेक करने पर जड़बुद्धि वाला भी विद्वान हो जाता है।
- सरसों के तेल से अभिषेक करने पर शत्रु पराजित होता है एवं उसका मारण होता है।
- शहद के द्वारा अभिषेक करने पर यक्ष्मा (तपेदिक) दूर हो जाती है एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
- गो-दूध से तथा शुद्ध घी द्वारा अभिषेक करने से आरोग्यता प्राप्त होती है।
- पुत्र की कामना वाले व्यक्ति शक्कर मिश्रित जल से अभिषेक करें। ऐसे में अभिषेक साधारण रूप से जल से ही होता है।

परन्तु विशेष अवसर पर या सोमवार, प्रदोष और शिवरात्रि आदि पर्व के दिनों में मंत्र, गोदुग्ध या अन्य दूध मिलाकर अथवा केवल दूध से भी अभिषेक किया जाता है। विशेष पूजा में दूध, दही, घृत, शहद और चीनी से अलग-अलग अथवा सबको मिलाकर पंचामृत से भी अभिषेक किया जाता है। तंत्रों में रोग निवारण हेतु अन्य विभिन्न वस्तुओं से भी अभिषेक करने का विधान है। इस प्रकार विविध द्रव्यों से शिवलिंग का विधिवत अभिषेक करने पर अभीष्ट कामना की पूर्ति होती है। किन्तु यदि पारद के शिवलिंग का अभिषेक किया जाए तो बहुत ही शीघ्र फल प्राप्त होता है। विद्वानों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पुराणों में तो इससे सम्बन्धित अनेक कथाओं का विवरण प्राप्त होता है। रावण ने अपने दसों सिरों को काट कर उसके रक्त से शिवलिंग का अभिषेक किया था तथा सिरों को हवन की अग्नि को अर्पित कर दिया था, जिससे वह त्रिलोकविजयी हो गया। भस्मासुर ने शिवलिंग का अभिषेक अपनी आँखों के आँसुओं से किया, तो वह भी भगवान के वरदान का पात्र बन गया।

रुद्राभिषेक करने की विशेष तिथियाँ :

- कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, चतुर्थी, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, अमावस्या, शुक्लपक्ष की द्वितीया, पंचमी, षष्ठी, नवमी, द्वादशी, त्रयोदशी तिथियों में अभिषेक करने से सुख-समृद्धि, संतान प्राप्ति एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।
- कालसर्प योग, गृहक्लेश, व्यापार में नुकसान, शिक्षा में रुकावट, सभी कार्यों की बाधाओं को दूर करने के लिए रुद्राभिषेक आपके अभीष्ट सिद्धि के लिए फलदायक है।
- किसी कामना से किए जाने वाले रुद्राभिषेक में शिव-वास का विचार करने पर अनुष्ठान अवश्य सफल होता है और मनोवांछित फल प्राप्त होता है।
- प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, अष्टमी, अमावस्या तथा शुक्लपक्ष की द्वितीया व नवमी के दिन भगवान शिव माता गौरी के साथ होते हैं। इस तिथि में रुद्राभिषेक करने से सुख-समृद्धि उपलब्ध होती है।

अधिक मास (पुरुषोत्तम मास) का माहात्म्य

हिन्दू पंचांग में अधिक मास को बहुत ही पवित्र और पुण्यदायी महीना माना जाता है। हिन्दू धर्म में समय की गणना केवल तिथियों तक सीमित नहीं होती, बल्कि हर मास का अपना आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व होता है, इन्हीं में से एक अधिक मास है। इसे मलमास या पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। सनातन धर्म में इस पुरुषोत्तम मास को आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र माना गया है। यह मास लगभग हर 32 महीने 16 दिन के बाद आता है। हिन्दू पंचांग सूर्य और चन्द्रमा की गणना पर आधारित है। एक चन्द्र वर्ष 354 दिनों का होता है, सौर वर्ष 365 दिन का होता है। इस हिसाब से इन दोनों के बीच 11 दिन का अंतर आ जाता है। इसी अंतर को दूर करने और पंचांग में संतुलन बनाये रखने के लिए हर तीसरे साल पंचांग में एक अतिरिक्त महीना जोड़ा जाता है जिसे अधिकमास या पुरुषोत्तम मास कहते हैं। इस महीने में भगवान की भक्ति, दान, जप, तप, तीर्थयात्रा और पवित्र नदियों में स्नान करने का विशेष महत्व है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह मास स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण के स्वरूप से जुड़ा है, श्रीमद्भागवत् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने पुरुषोत्तम मास को अपना ही स्वरूप बताया है। यही कारण है कि इस मास में किये गये धार्मिक एवं पुण्य कार्यो को विशेष फलदायी माना गया है, इस मास में भगवान् विष्णु एवं श्रीकृष्ण की उपासना से सभी मनोकामनाऐं पूर्ण होती हैं।

भविष्य पुराण की कथानुसार अधिक मास को शुरु में मलमास कहा जाता था और इस मास को शुभ कार्यो के लिए वर्जित माना जाता था। इस कारण इस मास का अधिपति बनने का कोई देवता तैयार नहीं था। एक समय मल मास ने दु:खी होकर भगवान् विष्णु से कहा कि - हे प्रभु! क्षण, मुहूर्त, दिन, पक्ष, मास अपने-अपने स्वामी की आज्ञानुसार नियत होकर विचरण करते हैं, मुझ अभागे का न तो कोई स्थान है और न ही कोई स्वामी। शुभकार्य भी मुझमें नहीं किये जाते, किसी देवता ने मुझे अपना नाम नहीं दिया। मल मास की पीढ़ा को समझते हुए भगवान् विष्णु ने कहा कि आज से मैं स्वयं तुम्हें अपना नाम देता हूँ, तभी से मलमास को पुरुषोत्तम मास कहा जाने लगा।

इस महीने में किया गया छोटा सा भी पुण्य कार्य कई गुना फल देता है। इस महीने में भगवान् विष्णु और भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा अर्चना का विशेष माहात्म्य है। इस माह में श्रीमद्भगवद् गीता और श्रीमद्भागवत् का पाठ करना चाहिए। व्रत, उपवास, दान (अन्न, वस्त्र, गौ, स्वर्ण आदि), तीर्थस्नान, भजन, कीर्तन आदि करना चाहिए। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस माह में कुछ शुभकार्य नहीं किये जाते, जैसे विवाह, गृहप्रवेश, नया कार्य या व्यापार शुरु करना, मुण्डन, बड़े मांगलिक कार्य आदि वर्जित हैं। यह महीना मुख्यत: भक्ति, साधना और आत्मशुद्धि के लिए माना जाता है। पुरुषोत्तम मास में भगवान् का नाम जप बहुत फलदायी माना जाता है। कुछ प्रमुख मन्त्रों का जाप इस मास में अवश्य करना चाहिए जैस- **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।, ॐ विष्णवे नमः।, श्री कृष्णं शरणं मम:।** इन मंत्रों का 108 बार जप करना शुभ माना जाता है।

इस मास में पापक्षय जल्दी होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि अन्य महीनों की तुलना में इस मास में धार्मिक कार्य करने से पाप शीघ्र ही नष्ट होते हैं और पुण्य कई गुना बढ़ जाता है, मन की शुद्धि तेजी से होती है इसलिए इसे आत्म शुद्धि का महीना कहा जाता है। सत्कर्मो से आध्यात्मिक उन्नति तेज होती है।

संवत् 2083 में अधिक मास की शुरुआत 17 मई 2026 (रविवार) प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होगी। वहीं अधिक मास का समापन 15 जून, 2026 (सोमवार) द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की अमावस्या को होगा।

पितृ-दोष

पितृ दोष के कारण परिवार में अनेक छोटे बड़े संकट उत्पन्न होते है जैसे कि -

1. घर के बुजुर्गो का स्वास्थ्य सदैव खराब रहता है।
2. घर में अशांति का वातावरण बना रहना, घर के लोगों की विचारधाराओं में असमानतायें बनी रहती है।
3. घर के कार्यों में रूकावटें आना। कार्य समय पर नही होना
4. घर के बुजुर्गो तथा अन्य लोगों का दूसरों से अनावश्यक रूप से विवाद होना।
5. संतानों को उनके कार्य में असफलता प्राप्त होना, उनके परिश्रम का वाछिंत प्रतिफल प्राप्त नहीं होना।
6. कर्ज होना, व्यय अधिक होना तथा निरर्थक व्यय होना ।
7. समाज एवं परिवार में अपमान होना ।
8. वंशवृद्धि में रूकावटें अथवा वंशवृद्धि का रुक जाना ।

पितृ-शान्ति हेतु उपाय

पितृ शान्ति हेतु निम्न उपायों का पालन करने से निश्चित ही उत्तम परिणाम परिलक्षित होते है।

1. प्रत्येक पूर्णिमा को घर में श्री सत्यनारायण भगवान का पूजन करें तथा यथाशक्ति भोग अर्पित करें और आरती करें। साथ ही हवन कर कम से कम 108 आहुतियां अवश्य दें। पूजन के पश्चात् किसी सुपात्र ब्राह्मण को भोजन करायें। तथा यथाशक्ति उसे दान दें।
2. गुरुवार के दिन कुत्तों को (विशेष रूप से उन कुत्तों को जो गलियों में घूमते फिरते हैं) जलेबी अथवा इमरती खिलायें तथा दूध पिलायें।
3. जिन स्थानों पर कौये दिखाई देते हों वहाँ उनके खाये जाने योग्य पदार्थो को उन्हें अर्पित करें। काक ग्रास से पित्तर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।
4. घर में नित्य गीता के एक अध्याय का पाठ करें। इस पाठ को स्नानादि करके भगवान श्रीकृष्ण की तस्वीर के समक्ष घी का दीप प्रज्वलित करके सम्पन्न करें। इस पाठ को सम्पन्न कर किसी गरीब व्यक्ति को चाहें अल्पमात्रा में ही सही किन्तु कुछ दान अवश्य दें।
5. प्रतिदिन रात्रि में जब शयन करने जायें, तब अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुये- **आर्यमायैः नमः** मंत्र को 11 बार बोलें और फिर सोयें ।
6. यदि पितरों की तस्वीरें घर में लगी हों तो नित्य उनके समक्ष एक घी का दीपक जलायें तथा परिवार के समस्तजनों के कल्याण की कामना करें। यदि पितरों की तस्वीरें नहीं हों तो घर में किसी भी एक निश्चित स्थान को स्वच्छ करें। उस पर सम्भव हो तो 8-15 दिन में गाय के गोबर से लीप दें अथवा गंगाजल या गोमूत्र मिले जल से स्थान शुद्धि करें तथा इस स्थान पर पितरों के नाम से घी का दीपक जलाया करें।
7. श्राद्ध पक्ष में नियम से विधि अनुसार अपने पितरों का श्राद्ध अवश्य करें। जिस दिन श्राद्ध करें उस दिन पहले पितरों को अगियार (अग्नि-आहार) करें इसके पश्चात् किसी योग्य ब्राह्मण को भोजन करायें, उसे यथाशक्ति दक्षिणा दें और उसके पश्चात् परिवारिजन भोजन करें।

धार्मिक कार्यों में आसन पर बैठने का माहात्म्य

पूजा-पाठ, साधना, तपस्या आदि कर्मकाण्ड के लिए उपयुक्त आसन पर बैठने का विशेष महत्व होता है। हमारे महर्षियों के अनुसार जिस स्थान पर प्रभु को बैठाया जाता है, उसे दर्भासन कहते हैं और जिस पर स्वयं साधक बैठता है, उसे आसन कहते हैं।

योगियों की भाषा में यह शरीर भी आसन है और प्रभु के भजन में इसे समर्पित करना सबसे बड़ी पूजा है। जैसा देश वैसा वेष बात भक्त को अपने इष्ट के समीप पहुँचा देती है।

कभी जमीन पर बैठकर पूजा नहीं करनी चाहिए, ऐसा करने से पूजा का पुण्य भूमि को चला जाता है। ब्रह्माण्ड पुराण तंत्रसार में कहा गया है कि इन कर्मकाण्डों हेतु भूमि पर बैठने से दु:ख, पत्थर पर बैठने से रोग, पत्तों पर बैठने से चित्तभ्रम, लकड़ी पर बैठने से दुर्भाग्य, घास-फूस पर बैठने से अपयश, कपड़े पर बैठने से तपस्या में हानि और बांस पर बैठने से दरिद्रता आती है।

उल्लेखनीय है कि बिना आसन बिछाये धार्मिक कर्मकाण्ड करने के लिए बैठने से उसमें सिद्धि अर्थात् पूर्ण सफलता नहीं मिलती, ऐसे संकेत हमारे धर्मशास्त्र में दिए गये हैं। प्राचीन काल में ऋषि-मुनि काले हिरण की चर्म, कुशासन, गोबर का चौका, चीता या बाघ की चर्म, लाल कंबल आदि का आसन उपयोग में लेते थे। इसके पीछे मान्यता यह थी कि काले हिरण की चर्म के निर्मित आसन का प्रयोग करने से ज्ञान की सिद्धि होती है। कुश के आसन पर बैठकर जाप करने से सभी प्रकार के मंत्र सिद्ध होते हैं। गोबर के चौके पर बैठने से पवित्रता मिलती है। चीता या बाघ की कर्म से निर्मित आसन पर बैठने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। लाल कंबल से बने आसन पर बैठने से किसी इच्छा से किए जाने वाले कर्मों में सफलता मिलती है।

आपने देखा होगा कि साधु-महात्मा, ऋषि-मुनि जो नियमित रूप से पूजा-पाठ व धार्मिक अनुष्ठान करते रहते हैं। एक विशेष प्रकार की आध्यात्मिक शक्ति का संचय होने के कारण उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन जाता है। चेहरे पर तेज और विशेष प्रकार की चमक देखने को मिलती है। ये लोग कर्मकाण्ड करते समय विद्युत के कुचालक आसन बिछाकर बैठते हैं, क्योंकि इससे उनकी संचित की गई शक्ति व्यर्थ नहीं जाती। अन्यथा सुचालक आसन के माध्यम से शक्ति क्षीण होकर पृथ्वी में चली जाने से व्यर्थ हो जायेगी और साधना का इच्छित लाभ नहीं मिलेगा। यही आसन बिछाने का वैज्ञानिक कारण है। नंगे पैर पूजा करना भी उचित नहीं है, हो सकें तो पूजा का आसन व वस्त्र अलग रखने चाहिए जो शुद्ध रहे तथा अपना आसन, माला आदि किसी को नहीं देने चाहिए, इससे पुण्य क्षय हो जाता है।

निम्न आसनों का विशेष महत्व है :-

- कंबल के आसन पर बैठकर पूजा करना सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। लाल रंग का कंबल भगवती, लक्ष्मी, हनुमानजी आदि की पूजा के लिए तो सर्वोत्तम माना जाता है।
- आसन हमेशा चौकोर होना चाहिए, कंबल के आसन के अभाव में कपड़े का या रेशमी आसन चल सकता है।
- कुश का आसन योगियों के लिए सर्वश्रेष्ठ है। यह कुश नामक घास से बनाया जाता है, जो भगवान के शरीर से उत्पन्न हुई है। इन आसनों पर बैठकर पूजा करने से सर्व सिद्धि मिलती

- है। विशेषत: पिण्ड श्राद्ध इत्यादि के कार्यों में कुश का आसन सर्वश्रेष्ठ माना गया है। स्त्रियों को कुश का आसन प्रयोग में नहीं लाना चाहिए, इससे अनिष्ट हो सकता है।
- मृगचर्म आसन ब्रह्मचर्य, ज्ञान, वैराग्य, सिद्धि, शांति एवं मोक्ष प्रदान करने वाला सर्वश्रेष्ठ आसन है। इस पर बैठकर पूजा करने से सारी इन्द्रियाँ संयमित रहती है। कीड़े मकोड़ों, रक्त विकार, वायु पित्त विकार आदि से साधक की रक्षा करता है। यह शारीरिक ऊर्जा भी प्रदान करता है।
- व्याघ्र चर्म आसन का प्रयोग बड़े-बड़े यति, योगी तथा साधु-महात्मा एवं स्वयं भगवान शंकर करते हैं। यह आसन सात्विक गुण, धन-वैभव, भू-संपदा, पद-प्रतिष्ठा आदि प्रदान करता है।
- आसन पर बैठने से पूर्व आसन का पूजन करना चाहिए या एक-एक चम्मच जल एवं एक फूल आसन के नीचे अवश्य चढ़ाना चाहिए। आसन देवता से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि मैं जब तक आपके ऊपर बैठकर पूजा करूँ, तब तक आप मेरी रक्षा करें तथा मुझे सिद्धि प्रदान करें। पूजा के बाद अपने आसन को मोड़कर रख देना चाहिए तथा किसी को भी प्रयोग के लिए नहीं देना चाहिए।

ॐ की महिमा

श्रृष्टि के रचयिता विष्णु, पालनहार ब्रह्मा और संहारक महेश का संयुक्त रूप है। ॐ ज्योतिष के अनुसार भी इसमें समस्त श्रृष्टि समाई है। तीन अक्षरों अ, ऊ, और म से मिलकर बना है ॐ। इस सृष्टि से इसे ईश्वर के तीनों स्वरूपों ब्रह्मा, विष्णु और महेश का संयुक्त रूप कहा जाता है। इसे हमारे प्रत्येक मंत्र से जोड़ा जाता है तथा मंत्र के साथ ॐ के जुड़ते ही ॐ की शक्ति दोगुनी हो जाती है।

ॐ का उच्चारण शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। यह अनादि अनन्त और निर्वाण की अवस्था का प्रतीक है। ॐ ओ से प्रारम्भ होता है। चेतना के इस स्तम्भ में इंद्रियाँ बर्हिमुख होती है। आगे ॐ की ध्वनि होती है, इसे तेजस भी कहते है। इस स्तर में साधक अन्तर्मुखी हो जाता है और वह पूर्ण कर्मों और वर्तमान के बारे में सोचता है। इस स्तर पर अभ्यास करने पर जीवन की गुत्थियाँ सुलझती है। प्राणायाम या कोई विशेष आसन करते समय इसका उच्चारण करते हैं, इसका उच्चारण 11, 21 और 31 बार अपनी सुविधानुसार कर सकते हैं। ॐ जोर से बोल सकते हैं तथा बोलने की जब जरूरत समाप्त हो जाय तो अन्तर्मन में सुनने का अभ्यास बनायें। साथ ही उच्चारण करते समय लय का विशेष ध्यान रखें। ॐ की ध्वनि करते समय स्वर की मधुरता व उच्चारण की स्पष्टता का ध्यान करके सभी ओर से विकृति से ध्यान हटाकर एकाग्रचित्त होकर के प्रभु का प्रेम श्रद्धा और दृढ़विश्वास से ध्यान करें। ॐ के ध्यान के लिए किसी निश्चित स्थान पर आसन बिछाकर सुखासन में बैठें। ॐ के जप से न केवल मन की मलिनता दूर होती है अपितु आत्म शान्ति मिलती है। ॐ के कई शारीरिक, धार्मिक व आध्यात्मिक लाभ है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है-

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।।

जो पुरुष ॐ इस अक्षररूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिंतन करता हुआ शरीर का त्याग कर जाता है वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।

पूजा-पाठ कैसे करें?

1. पूजा घर ईशान कोण में हो।पूजा करने वाले का मुख उत्तर या पूर्व दिशा में हो।
2. गणेश, कुबेर और दुर्गा का मुख पश्चिम दिशा में और हनुमान जी का नैऋत्य कोण में हो।
3. शयनकक्ष में पूजा घर न हो, अगर स्थानाभाव हो तो पूजा घर में पर्दा लगायें।
4. शयनकक्ष के उत्तर और पूर्व दिशा में पूजा घर हो।
5. उग्र और तामसी शक्तियों की मूर्ति का मुख पश्चिम या दक्षिण दिशा में हो।
6. सोते समय व्यक्ति का सिर पूर्व दिशा में हो, ताकि सोते समय पैर भगवान की तरफ न हो।
7. पूजा घर के आस-पास या ऊपर-नीचे शौचालय न बनायें। घर की सीढ़ियों के नीचे पूजा घर न हो।
8. पूजा घर में 1 से 12 अंगुल तक की मूर्ति का पूजन करें।
9. मिट्टी की बनी मूर्ति किसी भी देवता की हो 3 दिन से अधिक नहीं रखनी चाहिए। इससे घर में दरिद्रता, मारपीट, झगड़ा, रोग, व्याधि आती हैं।
10. घर में चल मूर्ति की स्थापना न करें। चल हो या अचल मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा अवश्य होनी चाहिए।
11. मूर्ति के निकट अधिक प्रकाश न हो।
12. बाहरी व्यक्ति को मूर्ति के पास नहीं जाने देना चाहिए। इससे मूर्ति की ऊर्जा समाप्त होती है।
13. शक्ति की मूर्ति की पूजा रात्रि 9 से 12 के भीतर और देव मूर्तियों की पूजा का समय प्रात: 4 से 6 के बीच होना चाहिए।
14. किसी भी देवी या देवता की मूर्ति दीवार से थोड़ी हटाकर रखनी चाहिए और उस पर परछाई नहीं पड़नी चाहिए।
15. गणेश जी के दाहिने और विष्णु जी के बायें लक्ष्मी जी स्थापना करनी चाहिए।
16. धन ऐश्वर्य और शत्रु नाश के लिए चांदी के गणेश लक्ष्मी की स्थापना करनी चाहिए।
17. पूजा के कमरे के दरवाजे पर दहलीज होनी चाहिए।
18. द्वार पर दरवाजा दो पल्लों का होना चाहिए।
19. पूजा के समय जलाये जाने वाला दीपक यदि भूमि पर रखना हो तो उसके नीचे चावल अवश्य रखें, वरना घर में चोरी हो सकती है।
20. घी का दीपक देवता के दाहिने और तेल का दीपक बायें जलाना चाहिए।
21. पूजा घर की दीवारों का रंग पीले या सफेद रंग का हो।
22. पूजा घर के अग्निकोण में दीपक अवश्य जलाना चाहिए।
23. हवनकुण्ड और अगरबत्ती भी अग्निकोण में रखें। देवताओं को तांबा धातु प्रिय है अत: पूजन में तांबे की धातु के बर्तन का ही प्रयोग करें तो उत्तम।
24. पूजा करते समय दीपक का स्पर्श हो जाये तो हाथ धो लेना चाहिए, अन्यथा दोष लगेगा।
25. शिवलिंग पर चढ़े फल, फूल, नैवेद्य आदि का उपयोग न करें, उन्हें विसर्जित कर दें।
26. विष्णु मन्दिर की 4 बार, शिव जी की आधी, देवी की 1 और गणेश जी की 3 परिक्रमा करनी चाहिए।
27. कन्या पूजन में 1 वर्ष से कम और 10 वर्ष से अधिक की आयु की कन्या न हो।
28. प्रत्येक गृहस्थ को घर में तुलसी का पौधा अवश्य रखना चाहिए। गणेश जी को तुलसी न चढ़ायें।
29. सायंकाल में तुलसी के नीचे दीप जलाकर 5 बार परिक्रमा करनी चाहिए।
30. घर के मुख्य रूप से 1 ही पूजा घर हो। छोटे-छोटे कई पूजाघर हो तो इससे घर के सदस्य अशान्त रहते हैं। पूजाघर में संत महात्मा के चित्र भी होने चाहिए।

।।वास्तु।। - एक दृष्टि में।।

साधारणत: वास्तु विज्ञान को किसी पुस्तक या लेख में समा देना लगभग असम्भव है। अपितु इस लेख के माध्यम से ये बताने का प्रयास अवश्य किया गया है कि अपने घर और व्यापारिक स्थल में क्या सावधानी बरत सकते हैं।

घर में :-

1. पूर्वोत्तर (N/E) में शौचालय अथवा रसोई न हों।
2. पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण-पश्चिम (S/W) में न हो।
3. प्रमुख द्वार दक्षिण-पश्चिम (S/W) में न हो।
4. प्रधान शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम (S/W) तथा पूर्वोत्तर में न हो
5. प्रधान शयनकक्ष दक्षिण-पश्चिम (S/W) में अथवा दक्षिण (S) में हो।
6. रसोई घर अग्नि कोण (S/W) अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।
7. देव स्थान पूर्वोत्तर (N/E) अथवा पूर्व (East) में हो।
8. सीढ़ियां घड़ी नुमा (clock wise) हो।
9. सारे प्रमुख द्वार (clock wise) खुलें।
10. घर का प्रमुख द्वार उत्तर (N) या पूर्व (E) में हो।
11. शौचालय वायव्य कोण (N/W) में या पश्चिम (W) में हो।
12. जल, स्थान, बोरिंग पूर्वोत्तर (N/E) में हो।
13. ओवर हेड टंकी दक्षिण-पश्चिम (S/W) में हो।
14. बहुमूल्य वस्तुऐं घर में दक्षिण-पश्चिम (S/W) में अलमारी अथवा तिजोरी में रखें।
15. सोते समय सिरहाना उत्तर (N) में कदापि न हो।

व्यावसायिक स्थल:-

1. पूर्वाभिमुख व उत्तराभिमुख अर्थात् North facing & East facing द्वार ज्यादा उपयोगी है।
2. प्रधान (Head) के बैठने का स्थान दक्षिण पश्चिम (S/W) में होना चाहिए।
3. प्रयास रखें कि सारे कार्यकर्त्ता पूर्व (East) और उत्तर (North) की ओर मुँह करके बैठें।
4. नगदी हमेशा दक्षिण पश्चिम (S/W) में रखे।
5. बीम के नीचे न बैठें तथा यदि बीम हो तो False Ceilling करा लें।
6. प्रयास रखें कि दक्षिण पश्चिम (S/W) थोड़ा ऊँचा हो।
7. व्यावसायिक स्थल के आगे कोई बड़ा पेड़ न हो।
8. व्यावसायिक स्थल का पूर्वोत्तर (N/E) तथा दक्षिण-पश्चिम (S/W) कटा हुआ न हो।
9. मुनीम एवं प्रबंधक इत्यादि पश्चिम में या दक्षिण में बैंठे।
10. किसी भी हालत में शौचालय पूर्वोत्तर (N/E) में न हो (ये देव स्थान है)।
11. पीने का पानी पूर्वोत्तर में रखें एवं पैन्ट्री अग्नि कोण अथवा वायव्य कोण (N/W) में हो।

उपरोक्त बातों से अनेकों अनेक पहलू अभी भी रह गये हैं। जब भी किसी नये घर या व्यावसायिक स्थल का चुनाव करना हो तो उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए भी विशेषज्ञ की सललाह अत्यन्त आवश्यक है।

अंग फड़कने के फल

फड़कने वाले अंग	फल
सिर पीछे की ओर	आशायें पूर्ण हों
सिर पूरा	यात्रा होना सम्भव
दाहिना मत्था	सफर व तकलीक संभव
बांया मत्था	खुशी होगी
दाहिनी आँख	अच्छा है खुशी होगी
बांई आँख	स्त्री से दु:ख या वियोग
दाहिनी पलक	खुशी हो
बांई पलक	दु:ख या करूट मिलना
दांई आँख के नीचे	सम्मान मिले
बांई आँख के नीचे	धन का व्यय
दाहिना गाल	लाभ
बायां गाल	व्यय और हानि
दाहिनी भौंह	आदर व धन मिले
बांई भौंह	प्रसन्नता व पुत्र सुख हो
दाहिना कान	पद बढ़े
बांया कान	परेशानी होगी
नाक फड़के	प्रसन्नता हो
गर्दन फड़के	लाभ, स्त्री मिले
ऊपर का होठ	पद बढ़े
आँख के नीचे पलक	प्रेमी मिले
दाहिना कन्धा	चिन्ता हो
बायां कन्धा	शत्रु पर विजय हो
माथे पर	धनवान होगा
दाहिनी बाजू	अच्छा है लाभ होगा
दाहिनी बगल	राज होगा
बांया बाजू	ऐश्वर्य घटे
बांयी बगल	ऐश्वर्य घटे
दाहिनी हाथ	प्रतिष्ठा होना सम्भव
बांया हाथ	वियोग होना सम्भव
दाहिनी हथेली	लाभ होगा

अंग पर तिलों के फल

तिल वाले अंग	फल
माथे में सीधी तरफ	माल खूब बढें
माथे में उल्ठी तरफ	परेशानी से उमर कटे
ठुड्डी पर	स्त्री से मेल न रहेगा
दोनों भौंहो पर	यात्रा होती रहेगी
सीधी आँख पर	स्त्री से प्रेम रहेगा
बायीं आँख पर	चिन्ता बनी रहेगी
दाहिने गाल पर	धनवान होगा
बायें गाल पर	निर्धन रहेगा
होंठ पर	कामी होगा
कान पर	अल्पायु होगा
गर्दन पर	आराम मिलेगा
सीधी भुजा पर	आदर मिलेगा
बांई भुजा पर	लड़का होगा
नाक पर	यात्रा होती रहेगी
दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम रहे
बांई छाती पर	स्त्री से लड़ाई रहे
कमर पर	परेशानी में जीवन बीते
बगल में	ग्रन्थ हानि पहुँचावे
दाहिनी छाती पर	परेशान न रहे
बांई छाती पर	कर्मी होगा
छातियों के बीच	आराम से निर्वाह हो
हृदय पर	बुद्धिमान होगा
पसली पर	भीरू न होगा
पेट के बीच में	भीरू होगा
पीठ पर	यात्रा करता रहेगा
दाहिनी हथेली पर	धनवान हो
दाहिने हाथ पर	कोष वाला हो
बांई हथेली पर	व्यर्थ वाला हो
दाहिने पैर में	बहुत बुद्धिमान हो
बांये पैर में	व्यय अधिक करे
पाँव के तलवे में	प्राय: यात्रा में रहे

स्वप्न - शकुन का शुभाशुभ फल विचार

स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन, लाभ, प्रसन्नता
आम वृक्ष देखना	सन्तान सुख
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति
आकाश से गिरान	मानहानि
अर्थी देखना	रोग मुक्त
अग्नि देखना	पित्त संबंधी रोग
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि
आग पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो
आत्महत्या करना	दीर्घायु
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह
अस्त्र शस्त्र	दु:खों से निपटारा
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख
इम्तहान में फेल	शुभ लाभ, तरक्की
ईजन देखना	योजनाएँ असफल
इमली खाना	पुत्र प्राप्ति
इन्द्रधनुष	जीवन में परिवर्तन
उल्लू देखना	रोग, शोक हो
उल्टा देखना	अपमान मिले
ऊँचाई पर चढना	तरक्की व मान
ऐनक देखना (काली)	निराशा
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद
कौआ बोलते	बुरा समाचार
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो
काला नाग	राज्य सम्मान
किला देखना	तरक्की पाना
कोढी देखना	रोग सूचक
कन्या देखना	व्यर्थ का झगड़ा
कीचड़ में फँसना	कष्ट, व्यय हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो
कढाई करते	व्यापार सफलता
कवाब खाना	अपयश, विवाद
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि
खून करना	संकट आना
खिलौना देखना	सुख शान्ति
खेत देखना	संकट पूर्ण
खरगोश देखना	स्त्री मिलाप
गुरू देखना	कार्य सफलता
गोबर देखना	पशु लाभ हो
गंगा देखना	शेष जीवन सुखी
ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण
गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो
गरीबी देखना	सुख समृद्धि
गर्भपात	गंभीर रोग
घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता
घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा
घायल देखाना	संकट से मुक्त होना
स्वप्न	फल
घर बनाना	प्रसिद्धि
घड़ी देखना	यात्रा का संकेत
घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक
चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ
चावल खाना	शुभ समाचार
चोर देखना	धन प्राप्ति
चांदी के जेवर	संबंध विच्छेद
चौकीदार	धनागमन का संकेत
चीखें मारना	परेशानी व कष्ट
चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक
छुरी मारना	परिवार में विवाद
छिपकली	अचानक धन लाभ
छींकना	कार्य बाधा
खाना देखना	चिन्ताओं से छुटकारा
छंटनी देखना	पदोन्नति
जख्म देखना	परेशानियाँ
जादूगर देखना	अशुभ लक्षण
जहाज देखना	परेशानियाँ
जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति
जल देखना	मान सम्मान
ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक
जुआ खेलना	धन हानि
जेब काटना	धनहानि
जनाजा देखना	धन लाभ तरक्की
झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले
झाड़ू देखना	नुकासान हो
क्षण्डा देखना	सुयश सूचक
झरना देखना	दु:ख दूर हो
ठाट देखना	सम्मान जनक स्थिति
टेलीफोन करना	शुभ समाचार
टूप देखना	संकट लक्षण
टोपी देखना	प्रगति हो
ठग मिलना	धन हानि

स्वप्न	फल
तोता देखना	धन लाभ
तलाक होते देखना	दाम्पत्य बाधा
तरक्की देखना	योजना सफलता
तराजू देखना	व्यापार लाभ
ताश खेलना	व्यापार लाभ
बन्द ताला	कार्यों में रूकावट
तरबूज देखना	परेशानी
थूक देना	परेशानी बढ़े
थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
थप्पड़ खाना	शुभ
दूध पीना	खुशी प्राप्ति
दरबाजा बन्द देखना	परेशानियाँ हो
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
गिरते दाँत	दु:ख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढे
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान भरी देखना	धन प्राप्त
दुकानखाली देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्रप्ति
दरिया में नहाना	रोग नाश
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्रप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुंआ देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति लाभ हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आंकाक्षा पूर्ति
नव यौवना	प्रेम सम्बंध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	अशुभ होना
पशु देखना	व्यापार में लाभ
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक

पिंजरे में पक्षी	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय संबंध	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्यवर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फब्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा
बूढी स्त्री देखना	दु: ख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वरद विवाद
भूखा देखना स्वयं को	यात्रा लाभ
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुरादपूरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हँसते	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गुहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञा देखना	सौभाग्य सूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु में वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रागी देखना	दु:ख निवृत्ति
रसोई घर	धन धान्य का प्रतीक
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना	अकारण वाद विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य वृद्धि
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढे
वृक्ष काटना	धन हानि

आरती

आरती के पांच अंग होते हैं। प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवें साष्टांग दण्डवत् से आरती करें। आरती उतारते समय सर्व प्रथम भगवान की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमायें, दो बार नाभि देश में, एक बार मुख मण्डल पर और सात बार समस्त अंगों पर घुमायें। यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा कीर्तन करना चाहिए।

आरती को 'आरात्रिक' या 'नीराजन' भी कहा जाता है। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। कुमकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दन की सात या पाँच बत्तियाँ अथवा दीये (रूई और घी) की बत्तियों से शंख घण्टा बजाते हुये आरती करनी चाहिए।

अनेक दीप बत्तियों को जलाकर विग्रह के चारों ओर घुमाने का अभिप्राय यही है कि विग्रह पूरा का पूरा प्रकाशित हो उठे, चमक उठे। अंग-प्रत्यंग स्पष्ट रूप से उद्भाषित उपासक देवता का रूप निहार सकें या हृदयंगम कर सकें। आरती का अर्थ इष्ट की बलैया लेना भी है।

साधारणत: पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे पंचप्रदीप भी कहते हैं। किसी स्वतिकादि मांगलिक चिह्नों से अलंकृत तथा पुष्प अक्षतादि से सुसज्जित थाली में एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियाँ प्रज्ज्वलित कर आरती की जाती है। कुंकुम, अगर, कपूर, चन्दन, रुई और घी, धूप की एक, पाँच या सात बत्तियाँ बनाकर शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए। फिर शंख या पात्र में जल लेकर इष्टदेव के चारों ओर घुमायें।

श्रीगणेश जी की आरती

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता तेरी पार्वती, पिता महादेवा॥
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
माथे पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िया को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।
हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
मोदक को भोग लगे सन्त करे सेवा।
दीनन की लाज रखो, शम्भु पुत्र वारी।
मनोरथ को पूरा करो, जायें बलिहारी॥

श्रीजगदीश जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥ ॐ जय० ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनशे मनका। सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॐ जय० ॥
माता पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किस की।तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किस की॥ ॐ जय० ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ जय० ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ जय० ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति।किस विधि मिलूँ कृपामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ जय० ॥
दीन-बन्धु दुख हर्ता, ठाकुर तुम मेरे।अपने हाथ उठावो, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय० ॥
विषय विकार मिटावो, पाप हरो देवा।श्रद्धा-भक्ति बढ़ावो, सन्तन पद सेवा॥ ॐ जय० ॥

श्रीलक्ष्मीजी की आरती

जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ ॐ ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी रुद्राणी तू ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ॐ ॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धिसिद्धि धन पाता॥ॐ ॥
तुम पाताल निवासिनी, तू ही है शुभदाता। कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ॐ ॥
जिस घर तुम रहती हो, सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ॐ ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न होई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुम से आता॥ॐ ॥
शुभ गुण मन्दिर, सुन्दर क्षीरोदधि जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता॥ॐ ॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ॐ ॥

श्रीशंकर जी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा। ब्रह्मा, विष्णु, सदा शिव, अर्द्धांगी धारा॥ ॐ ॥
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे, हंसासन गरुडासन, वृषवाहन साजे॥ॐ ॥
दो भुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहे। तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे॥ॐ ॥
अक्षमाला, वनमाला मुण्डमाला धारी। चन्दन मृगमद सोहे भोले शुभकारी॥ॐ ॥
श्वेताम्बर, पीताम्बर बाघम्बर अंगे। सनकादिक ब्रह्मादिक प्रेतादिक संगे॥ॐ ॥
करके मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूल धर्ता। जगकर्ता संहर्ता जग पालन कर्ता॥ॐ ॥
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका। प्रणवाक्षर के मध्ये, तीनों की एका॥ॐ ॥
त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई जन गावे। कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे॥ॐ ॥

श्रीअम्बा जी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥1 ॥ जय माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को॥ उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥2 ॥ जय कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥3 ॥ जय केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी। सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुःखहारी ॥4 ॥ जय कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर-राजत सम ज्योति ॥5 ॥ जय शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर-धाती। धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती ॥6 ॥ जय चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥7 ॥ जय ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी। आगम-निगम-बखानी, तुम शिव-पटरानी ॥8 ॥ जय चौंसठ येगिनी गावत, नृत्य करत भैरूं। बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥9 ॥ जय भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।मन वांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥10 ॥ जय कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥11 ॥ जय श्रीअम्बेजी की आरती जो कोई नित गावैं। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावै ॥12 ॥ जय

श्रीजगदम्बे जी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली जय दुर्गे खप्पर वाली तेरे ही गुण गायें भारती ।
॥ ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती ॥
तेरे जगत के भक्त जनन पर भीर पड़ी है भारी माँ दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहों से तू बल शाली अष्ट भुजा वाली, दुष्टों को पल में संहारती ॥
ओ मैया, हम सब उतारें तेरी आरती ॥
माँ बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता, पूत कपूत सुने है पर न माता सूनी कुमाता।
सब पर करुणा दरशाने वाली, अमृत बरसाने वाली। दुखियायें के दुःख को निवारती ॥
ओ मैया, हम सब उतारें तेरी आरती ॥
नहीं माँगते धन और दौलत न चाँदी न सोना, माँ हम तो माँगें एक छोटा सा कौना
सतियों के सत को संवारती, ओ मैया, हम सब उतारें तेरी आरती ॥

श्रीराधारानी जी की आरती

जै जै श्रीराधेजू मैं शरण तिहारी। लोचन आरती जाऊँ बलिहारी ॥जै जै ॥
पाट पाटम्बर ओढ़े नीली सारी। सीस के सैंदुर जाऊँ बलिहारी ॥जै जै ॥
रतन सिंहासन बैठी श्रीराधे। आरती करें हम पिय संग जोरी ॥जै जै ॥
झलमल-झलमल मानिक मोती। अब लख मन मोहै पिय संग जोरी ॥ जै जै ॥
श्रीराधे पद पङ्कज भगति की आशा। दास मनोहर करत भरोसा ॥ जै जै ॥

श्रीहनुमान जी की आरती

आरति कीजै हनुमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की॥
जाके बल से गिरिवरकाँपै। रोग दोष जाके निकट न झांकै॥
अंजनि पुत्र महा बल दाई। संतन के प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥
लंका सी कोटि समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाय संजीवन प्राण उबारे॥
पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखाड़े॥
बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा सन्तजन तारे॥
सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमान जी की आरति गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै॥

श्रीखाटू श्याम जी की आरती

ॐ जय श्रीश्याम हरे बाबा जय श्रीश्याम हरे, खाटू श्याम विराजत, अनुपम रूप धरे॥
रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर ढुरे। तन केसरिया बागो कुण्डल श्रवण पड़े॥
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे। खेवत धूप अग्नि पर दीपक ज्योति जरे॥
मोदक खीर चूरमा, सुवरन थाल भरे। संवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे॥
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे। भक्त आरती गावैं जय जयकार करे॥
जो ध्यावै फल पावै, सब दु:ख से उबरे। सेवक जन निज मुख से श्याम श्याम उचरे॥
श्रीश्यामबिहारीजी की आरती जो कोई नर गावे। कहत भक्तजन स्वामी मनवांछित फल पावे॥
जै श्रीश्याम हरे बाबा जै श्री श्याम हरे। निज भक्तों के तुमने, पूरन काम करे॥

श्रीसत्यनारायण जी की आरती

ॐजय लक्ष्मीरमणा, स्वामी जय लक्ष्मीरमणा, सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा॥ ॐ॥
रत्न जड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छबि राजे, नारद करत निरंजन घण्टा ध्वनि बाजै॥ ॐ..॥
प्रकट भये कलिकारन द्विज को दरस दियौ, बूढ़ौ ब्राह्मण बनके कंचन महल किया॥ॐ..॥
दुर्बल भेील कठियारी जिन पर कृपा करी, चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत हरी॥ॐ..॥
वैश्य मनोरथ पायौ, श्रद्धा तज दीनी, सो फल भोगौ प्रभुजी फिर स्तुति कीन्हीं॥ॐ..॥
भव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धर्‌यौ, श्रद्धा धारण कीन्हीं तिनके काज सर्‌यौ॥ॐ..॥
ग्वाल-वाल संग राजा वन में भक्ति करी, मनवांछित फल दीनौ, दीनदयाल हरी॥ॐ..॥
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा, धूप-दीप तुलसी से राजी सतदेवा॥ॐ..॥
श्रीसत्यनारायणजी की आरती जो कोई नर गावै, कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावै॥ॐ॥

श्रीगिरधर जी की आरती

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ, बाँकेबिहारी तेरी आरती गाऊँ। हे गिरधर.... ॥

मोर मुकुट प्यारे शीश पै सौहे, प्यारी वंशी मेरो मन मोहे।
देखि छवि बलिहारी जाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

चरणों से निकली हैं गंगा प्यारी, जिसने सारी दुनियाँ तारी।
उन चरणों के दर्शन पाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

व्यास दास के नाथ आप हो, दु:ख सुख जीवन प्यारे साथ आप हो।
प्रभु चरणों में शीश नवाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

संग सोहे वृषभानु दुलारी, ललितादिक सब सखियां प्यारी।
बास सदा वृन्दावन पाऊँ॥ हे गिरधर..... ॥

श्रीबालकृष्ण जी की आरती

आरती बालकृष्ण की कीजै। अपनो जनम सफल करि लीजै॥
श्रीयशुदा कौ परम दुलारौ। बाबा की अँखियन को तारो॥
गोपिन के प्राणन ते प्यारौ। इन पै प्राण न्यौछावर कीजै॥
आरती बालकृष्ण.....

बलदाऊ को छोटो भैया। कनुआ कह-कह बोलत मैया॥
परम मुदित मन लेत बलैया। यह छबि नैनन में भर लीजै॥
आरती बालकृष्ण .....

श्रीराधा वर सुधर कन्हैया। ब्रजजन को नवनीत खवैया॥
श्रीराधा वर सुधर कन्हैया। ब्रजजन को नवनीत खवैया॥
देखत ही मन लेत चुरैया। अपनों सर्बस इनको दीजै॥
आरती बालकृष्ण....

तोतरि बोलन मधुर सुहावै। सखन संग खेलत सुख पावै॥
सोई सुकृति जो इनको ध्यावै। अब इनको अपनो कर लीजै॥
आरती बालकृष्ण....

श्रीभागवत भगवान की आरती

श्रीभागवत भगवान की है आरती। पापियों को पाप से है तारती॥

यह अमर ग्रन्थ, यह मुक्ति पंथ, यह पंचम वेद निराला
नव ज्योति जगाने वाला।
हरि नाम यही, हरि धाम यही। जग के मंगल की आरती॥ पापियों को ...

यह शान्त गीत, पावन पुनीत, पापों को मिटाने वाला
हरि दरस कराने वाला।
ये सुख करणी, ये दु:ख हरणी। ये मधुसूदन की आरती॥ पापियों को ...

यह मधुर बोल, जग पन्थ खोल, सन्मार्ग दिखाने वाला
बिगड़ी को बनाने वाला।
श्रीराम यही घनश्याम यही। प्रभु की महिमा की आरती।। पापियों को ...

❋❋❋

श्रीभागवत महापुराण जी की आरती

आरती अति पावन पुरान की। धर्म भक्ति विज्ञान खान की॥

महापुराण भागवत निर्मल। शुक मुख विगलित निगम कल्पफल॥
परमानन्द सुधारस मयकल। लीला रति रस रस-निधान की॥1॥

कलिमल मथनि त्रिताप निवारिनि। जन्म मृत्युमय भव-भय हारिनि॥
सेवत सतत सकल सुख कारिनि। सुमहौषधि हरि चरित गान की॥2॥

विषय विलास विमोह विनाशिनि। विमल विराग विवेक विकाशिनी॥
भगवतत्त्व रहस्य प्रकाशिनि। परम ज्योति परमात्म ज्ञान की॥3॥

परमहंस मुनि मन उल्लासिनि। रसिक हृदय रस रास विलासिनि॥
भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनि। कथा अकिंचन प्रिय सुजान की॥4॥

❋❋❋

श्रीश्यामा जी की आरती

श्यामा तेरी आरती, कन्हैया तेरी आरती सारा संसार करेंगे कर जोर के ॥
सिर पर सोहना मुकुट विराजे, गल बैजन्ती माला साजे।
और फूलन के हार करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ...
ब्रह्मादिक तेरो यश गावै, नारद शारद ध्यान लगावै।
और करै जै जैकार, करैंगे कर जोड़ कै ॥ श्यामा तेरी ...
मैं हूँ दीनन दुखिया भारी, आया हूँ प्रभु शरण तुम्हारी।
रखियो लाज हमार, करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ...
अपने चरणन की भक्ति दीजै, अपनी शरण में मोहे रखलीजै।
करौ भव सागर पार, करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ....
प्रेम सहित जो आरती गावै, श्रीराधा माधव के मन भावै।
आयो शरण तुम्हार, करेंगे कर जोर के ॥ श्यामा तेरी ....

श्रीरामजी की स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारूणं।
नवकंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूणं॥
कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम्।
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दलन दुष्ट निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशलचन्द दशरथ नंदनम्॥
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं।
आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित् खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर शेषमुनि-मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल-दल गंजनम्॥
मनु जाहि राचेउ मिलिहिं सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

मंत्र पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कान कामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्य भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारोमरुत्त-स्याऽऽवसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरूत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽएकः।

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नः लक्ष्मीः प्रचोदयात्।
ॐ नंदनंदनाय विद्महे यशोदानंदनाय धीमहि। तन्नो कृष्णः प्रचोदयात्।
ॐ वृषभानुजायै च विद्महे कृष्णवल्लभायै च धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्।।
ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।
ॐ हंस हंसाय विद्महे, परमहंसाय धीमहि। तन्नः शुकः प्रचोदयात्।
ॐ आन्जनेयाय विद्महे रामभक्ताय धीमहि। तन्नो वीरः प्रचोदयात्।
ॐ महादिव्यै च विद्महे, सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।
ॐ ब्रह्मरूपाय विद्महे, रुद्ररूपाय धीमहि। तन्नो गुरुवः प्रचोदयात्।

सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जैः, पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पैः।
बिल्वप्रवालतुलसीदलमञ्जरीभिः, त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तः प्रसीद परमेश्वर।
मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि, इति मन्त्रैः पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत्।

प्रदक्षिणा

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः। तेषां ७८ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥
यानि यानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि-तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे-पदे॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

धर्म रक्षा संघ—परिचय एवं उद्देश्य

परम आराध्य भगवान् श्रीकृष्ण की लीला भूमि ब्रजमण्डल के श्रीधाम वृन्दावन में सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा और संवर्धन हेतु लोकहित का ध्यान रखते हुए श्रीराम नवमी संवत् 2060 तदनुसार दिनांक 11 अप्रैल 2003 शुक्रवार को परम पूज्य महन्त श्रीनृत्यगोपाल दास जी महाराज के संरक्षण में ब्रज के प्रमुख संत धर्माचार्य एवं धर्म सेवकों के सान्निध्य में **धर्म रक्षा संघ** की स्थापना की गयी। धर्म रक्षा संघ अखंड भारत हिन्दू राष्ट्र की भावना से ओतप्रोत एक गैर राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक संगठन है। धर्म रक्षा संघ मठ, मन्दिर, आश्रम, धार्मिक स्थलों एवं वैदिक सनातन धर्म की रक्षा एवं संवर्धन करने के साथ सनातन संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु संकल्पित है। वर्तमान पीढ़ी के साथ आने वाली पीढ़ी को सनातन संस्कृति के अनुसार संस्कारित कर भारत को विश्व गुरु बनाना हमारे प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। अखंड भारत हिन्दू राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त कर भगवा ध्वज का सम्मान बढ़ाना हमारा प्रयास है। सनातन धर्म की रक्षा से ही राष्ट्र की रक्षा संभव है।

समाज को धर्म पूर्वक जोड़कर सनातन-संस्कारों का संरक्षण करना आज की महती आवश्यकता है। हमारा भारत वर्ष अखण्ड हिन्दू राष्ट्र बनकर पुनः विश्वगुरु के रूप में स्थापित हो, श्रीरामजन्म भूमि की भाँति श्रीकृष्णजन्मभूमि अपने गौरवशाली रूप में स्थापित हो। धर्म रक्षा संघ के इस संकल्प में आईये हम सब एक जुट होकर तन-मन-धन से इस प्रयास में संकल्प पूर्वक प्रस्तुत हों।

धर्म रक्षा संघ के कल्याणकारी पावन प्रकल्पों हेतु अपनी सहयोग राशि सीधे बैंक खाते में प्रेषित कर पुण्य के भागी बन सकते हैं।

A/c Name : DHARM RAKSHA SANGH
Current A/c No. : 101705500235
Bank Name : ICICI BANK
IFS Code : ICIC0001017
Branch : Vrindavan

SCAN AND PAY

Follow us on
Dharm Raksha Sangh
Mob. No. +91-9084624790

आयकर की धारा 80-G एवं 12-A के अन्तर्गत कर राशि में छूट प्राप्त करने हेतु मान्य
Vide URNo. AACTD6153HE20221 • Valid upto AY 2025-26

॥ जय श्रीराधे ॥

उचित मूल्य

★ कुर्ती ★ सूट
★ दुपट्टा ★लैगिंग
★ डिजाइनर साड़ी ★ गोपी ड्रेस
★ पार्टी ड्रेस ★ ओढ़ना (चुनरी)
★ चादर – दोहर ★ पर्स – बैग
★ धोती कुर्ता ★ पूजा सामग्री – शृंगार
★ डेकोरेटिव आइटम एवं अन्य

हरेकृष्णा परिधान

आकर्षक संग्रह

प्रो. श्रीमती ब्रजबाला गौड़

शोरूम एवं बुटीक

किसी भी प्रकार की इण्डियन या वैस्टर्न डिजाइन में
लेडीज़ गाउन, सूट, ब्लाउज आदि सिलाई की उत्तम व्यवस्था

Stitching Facility by Expert Tailors

58, लक्ष्मी निकुंज, कानपुर कोठी, रमणरेती, वृन्दावन–281121 (मथुरा)
(निकट इस्कॉन गौशाला एमवीटी साइड)

Mob. 9837890790, 7017325990

ब्रजक्षेत्र के प्रमुख मन्दिरों के दर्शन का समय

	शीतकाल(दीपावली के बाद दौज)	ग्रीष्मकाल (होली के बाद दौज)
श्रीबाँकेबिहारी मन्दिर	प्रात: 8.55-1.00	प्रात: 7.55-12.00
	सायं 4.30-8.30	सायं 5.30-9.30
श्रीनिधिवन मन्दिर	प्रात: 8.45-1.00	प्रात: 7.45-12.00
	सायं 4.30-6.30	सायं 5.30-8.30
श्रीराधाबल्लभ मन्दिर	मंगला प्रात: 6.00 बजे	मंगला प्रात: 5.30 बजे
	प्रात: 8.00-1.00	प्रात: 7.00-12.00
	सायं 6.00-8.30	सायं 5.30-9.00
श्रीसेवाकुंज मन्दिर	प्रात: 6.00-12.00	प्रात: 5.30-12.00
	सायं 4.00-6.30	सायं 4.30-7.00
श्रीराधारमण मन्दिर मंगला	प्रात: 5.30 बजे	मंगला प्रात: 5.00 बजे
	प्रात: 9-1.00	प्रात: 8.30-12.30
	सायं 5.30-9.00	सायं 6.00-9.30
श्रीरंगनाथजी मन्दिर	प्रात: 8.00-11.30	प्रात: 8.30-11.30
	सायं 3.00-6.00	सायं 4.30-7.30
श्रीकृष्णबलराम मन्दिर (इस्कॉन)	प्रात: 7.30-12.30	प्रात: 7.00-12.00
	सायं 4.00-8.00	सायं 4.30-8.30
श्रीकात्यानी पीठ	प्रात: 7.00-11.00	प्रात: 7.00-11.00
	सायं 5.30-8.00	सायं 5.30-8.00
प्रेम मन्दिर	प्रात: 5.00 से 12.00	प्रात: 5.00 से 12.00
	सायं 4.30 से 8.30	सायं 4.30 से 8.30
म्यूजिकल फुब्बारा	सायं 7.00 से 7.30 बजे तक	
द्वारिकाधीश मन्दिर	मंगला- प्रात: 6.30-7.00	प्रात: 6.30-7.00
(मथुरा)	शृंगार- प्रात: 7.40-7.55	प्रात: 7.40-7.55
	ग्वाल- प्रात: 8.25-8.40	प्रात: 8.25-8.40
	राजभोग- प्रात: 10.00-10.30	प्रात: 10.00-10.30
	उत्थापन- सायं 3.30-से 3.50	सायं 4.00-4.20
	भोग- सायं 4.20-4.40	सायं 4.50-5.05
	संध्या आरती- सायं 4.55-5.10	सायं 5.25-5.40
	शयन आरती- सायं 6.00-6.30	सायं 6.30-7.00
श्रीकृष्ण जन्मस्थान (मथुरा)	प्रात: 6.00-12.00	प्रात: 5.00-12.00
	अपराह्न 3.00-8.00	सायं 4.00-9.00
बलदेव(दाऊजी)	प्रात: 7.00-12.00	प्रात: 6.00-11.00
	दोपहर 3.00-4.00	दोपहर 4.00-5.00
	सायं 6.00-8.00	सायं 7.00-9.00
बरसाना (श्रीजी मन्दिर)	प्रात: 5.30-1.30	प्रात: 5.00-1.30
	सायं 4.30-9.00	सायं 5.00-9.30